चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 119, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | रविवार 28 मई 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

नति आयोग का गठन योजना आयोग के स्थान पर 01 जनवरी 2015 को किया गया था

नीति आयोग की हुई मीटिंग

नई दिल्ली। नीति आयोग संचालन परिषद की आठवीं बैठक दिल्ली के प्रगति मैदान स्थित नए कन्वेंशन सेंटर में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में हुई। इसमें भारत को 2047 तक विकसित देश बनाने के उद्देश्य से स्वास्थ्य, कौशल विकास, महिला सशक्तीकरण और बुनियादी ढांचा विकास समेत कई मुद्दों पर चर्चा हुई। बैठक में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल के अलावा उत्तर प्रदेश, असम, झारखंड, मध्य प्रदेश समेत कई राज्यों के मुख्यमंत्री शिरकत कर रहे हैं। हालांकि आठ राज्यों के मुख्यमंत्री इस बैठक में नहीं पहुंचे। इनमें राजस्थान के अशोक गहलोत, दिल्ली के अरविंद केजरीवाल, पंजाब के भगवंत मान, पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी, बिहार के नीतीश कुमार, तेलंगाना के के. चंद्रशेखर राव, तमिलनाडु के एमके स्टालिन और केरल के पिनाराई विजयन शामिल हैं। संचालन परिषद की पूर्ण बैठक हर साल होती है। पिछले साल यह बैठक सात अगस्त को हुई थी। उल्लेखनीय है कि नति आयोग का गठन योजना आयोग के स्थान पर एक जनवरी 2015 को किया गया था।

आमतौर पर संचालन परिषद की बैठक में सभी राज्यों के मुख्यमंत्री, केंद्रशासित प्रदेशों के उप राज्यपाल और पदेन सदस्यों के रूप में केंद्रीय मंत्री, नीति आयोग के उपाध्यक्ष और सदस्य शामिल होते हैं। प्रधानमंत्री नीति आयोग के पदेन चेयरमैन हैं।

सीएम विरोध के चलते नहीं आए

राजधानी में अफसरों के ट्रांसफर-पोस्टिंग को लेकर केंद्र सरकार के लाए गए अध्यादेश के विरोध में दिल्ली, पंजाब, बंगाल, बिहार और तेलंगाना के मुख्यमंत्रियों ने बैठक का विरोध किया है। राजस्थान के सीएम गहलोत ने खराब तबीयत का हवाला दिया है, जबकि केरल और तमिलनाडु के मुख्यमंत्रियों ने कोई कारण नहीं बताया। वहीं, नवीन पटनायक पहले से तय कार्यक्रम में चले गए।

केजरीवाल के विरोध की वजह

केजरीवाल ने चिट्ठी में लिखा कि पिछले कुछ सालों में गैर-भाजपा सरकारों को गिराया जा रहा है या काम नहीं करने दिया जा रहा। ये हमारे देश का विजन नहीं है। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने 11 मई को आदेश दिया था कि दिल्ली में अफसरों के ट्रांसफर-पोस्टिंग के अधिकार दिल्ली सरकार के पास रहेंगे। इसके बाद, केंद्र सरकार 20 मई को एक अध्यादेश लाई और ये अधिकार उपराज्यपाल को दे दिए।

नीति आयोग की बैठक का बहिष्कार करने वाले मुख्यमंत्रियों पर बरसी भाजपा

नई दिल्ली। प्रगति मैदान में आयोजित नीति आयोग की आठवीं गवर्निंग काउंसिल की बैठक का 8 राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने बहिष्कार किया। इन राज्यों के मुख्यमंत्रियों के इस फैसले पर भाजपा ने जमकर निशाना साधा। शनिवार को प्रेसवार्ता में भाजपा नेता रविशंकर प्रसाद ने कहा कि विपक्षी नेता मोदी विरोध के चलते राज्य की जनता का नुकसान करने पर लगे हैं। भाजपा नेता रविशंकर प्रसाद ने कहा कि इस बैठक में 100 से अधिक मुद्दों पर चर्चा हो रही है और इस अहम बैठक में मुख्यमंत्रियों का भाग नहीं लेना सीधा सीधा जनता को नुकसान पहुंचाएगा। उन्होंने कहा कि नीति आयोग राज्यों की सक्रिय भागीदारी के साथ राष्ट्रीय विकास प्राथमिकताओं, क्षेत्रों और रणनीतियों की साझा दृष्टि विकसित करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है। नीति आयोग पूरे देश के विकास के लिए संपूर्ण नीति-ढांचे और रोड मैप का निर्धारण करता है।

रविशंकर प्रसाद ने विपक्ष से सवाल पूछते हुए कहा कि नीति आयोग की इस बैठक के लिए 100 मुद्दे तय किए गए हैं, अब जो मुख्यमंत्री नहीं आए हैं, वो अपने प्रदेश की जनता की आवाज यहां तक नहीं ला रहे हैं। क्या उन लोगों को लाभ नहीं मिलना चाहिए? मोदी विरोध में विपक्ष कहां तक जाएंगा?

कानपुर महानगर के विकास के लिए नहीं आने पाएगी धन की कमी: ब्रजेश पाठक

कानपुर। दूसरी बार निर्वाचित हुई महापौर प्रमिला पांडेय के शपथ समारोह में पहुंचे उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने शनिवार को कहा कि कानपुर महानगर के विकास में धन की कोई कमी नहीं आने पाएगी। उन्होंने कहा कि कानपुर की जनता ने ट्रिपल इंजन की सरकार बनाई है। जनता इनाम की हकदार है और इनाम के रूप में यहां सबसे अधिक विकास किया जाएगा। इस मौके पर नवनिर्वाचित महापौर प्रमिला पांडेय एवं 110 पार्षदों को बधाई दी और जनता की सेवा करने संकल्प दिलाया। शपथ ग्रहण के बाद विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने कहा कि पिछले पांच साल में कानपुर शहर का स्वरूप अच्छा हुआ है। कानपुर महानगर स्वच्छ सुन्दर हो और इसकी पहचान पूरे देश में एक नंबर पर हो, इसके लिए सबको मिलकर काम करना होगा। शहर की दूसरी बार निर्वाचित महापौर प्रमिला पांडेय और 110 पार्षदों को कानपुर मंडलायुक्त डॉ. राजशेखर ने शपथ दिलाई।

वाराणसी की बेटियों ने संयुक्त अरब अमीरात में लहराया परचम

वाराणसी। अबु धाबी के अल जजीरा क्लब में 21 मई को हुए विनर कप इन्विटेशनल इंटरनेशनल कराटे चैम्पियनशिप में वाराणसी की शिवानी गुप्ता, ऋषिका रयान और अदिति सोनकर ने पदक जीतकर जिले का नाम रोशन किया। इस प्रतियोगिता का आयोजन विनर कराते क्लब द्वारा किया गया था। शिवानी ने सीनियर कैटेगरी के काता और कुमिते वर्ग में रजत पदक जीता, वहीं अदिति सोनकर ने काता वर्ग में कांस्य पदक और कुमिते में स्वर्ण पदक जीता। जबकि ऋषिका रयान ने सब जूनियर वर्ग काता और कुमिते दोनों वर्गों में स्वर्ण पदक जीता।

नई संसद का उदघाटन आज

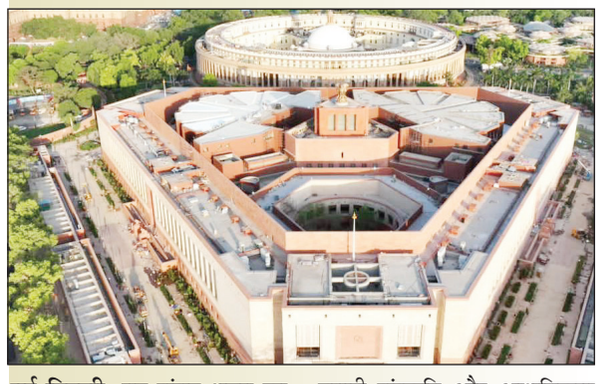

नई दिल्ली: नए संसद भवन का इनॉगरेशन रविवार को दोपहर 12 बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करेंगे। कार्यक्रम को लेकर तैयारियां लगभग पूरी हो चुकी हैं। विभिन्न राज्यों से मेहमानों का आना भी शुरू हो चुका है। इनॉगरेशन प्रोग्राम में प्रधानमंत्री को सुनहरा राजदंड (सेंगोल) भेंट करने के लिए चेन्नई के धर्मपुरम अधीनम के 21 संत भी चेन्नई से दिल्ली पहुंच गए हैं। ये संत मोदी के लिए एक खास तोहफा भी लाए हैं। इधर, बिहार के सीएम नीतीश कुमार ने एक बार फिर संसद की नई बिल्डिंग को लेकर केंद्र सरकार पर हमला बोला है। नीतीश ने शनिवार को कहा- संसद भवन अलग से बनाने की क्या जरूरत थी। पुराने भवन को ही ठीक करवाना चाहिए था। मैं इसके खिलाफ हूं। वहां जाने की कोई जरूरत नहीं है। गृहमंत्री अमित शाह ने कहा, 'नई संसद हमारी संस्कृति और आधुनिकता के मिलन का अप्रतिम उदाहरण है।' वहीं नए संसद भवन के उद्घाटन के विरोध में जदयू नेता रविवार को दिनभर उपवास करेंगे डेमोक्रेटिव प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी के प्रमुख गुलाम नबी आजाद ने कहा, 'ये सपना हमने आज से 35 साल पहले नरसिम्हा राव की सरकार में देखा था। हमने पीएम के साथ नक्शा भी बनाया था। तब हमसे तो हो नहीं पाया, लेकिन अब बना है तो उसका स्वागत करना चाहिए। मैं विपक्ष के बहिष्कार के खिलाफ हूं।'

नए भवन में त्रिपुरा के बांस की फ्लोरिंग, सीलिंग की संरचना दमन-दीव से मंगाई गई: नए संसद भवन में देश के हर क्षेत्र की झलक देखने को मिलेगी। इसकी फ्लोरिंग त्रिपुरा के बांस से की गई है। कालीन मिर्जापुर का है। लाल-सफेद सैंड स्टोन राजस्थान के सरमथुरा का है।

हाईकोर्ट के फैसले से हिन्दुओं में खुशी की लहर

श्री कृष्ण जन्मभूमि संघर्ष न्यास के अध्यक्ष ने की सराहना

मथुरा। श्रीकृष्ण जन्मभूमि संघर्ष न्यास के अध्यक्ष दिनेश शर्मा ने शनिवार को कहा कि मथुरा में भगवान श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर से ईदगाह मस्जिद की बिल्डिंग को हटाने वाले सभी मुकदमों की सुनवाई अब उच्च न्यायालय इलाहाबाद में होगी। अभी तक यह सभी मुकदमे मथुरा न्यायालय में चल रहे थे। इस फैसले से हिंदुओं में खुशी की लहर दौड़ गई।उन्होंने हाईकोर्ट के फैसले की सराहना की है। लाहाबाद उच्च न्यायालय में एक याचिकाकर्ता द्वारा एक याचिका लगाई गई और उसमें मांग की गई कि मथुरा न्यायालय में लंबित सभी मुकदमों को राष्ट्रीय हित में उच्च न्यायालय इलाहाबाद सुने। उच्च न्यायालय इलाहाबाद द्वारा हिंदू याचिकाकर्ता की दलील को सुना गया और न्यायालय ने आदेश दिया कि मथुरा में श्री कृष्ण जन्मभूमि से संबंधित सभी लंबित मुकदमे अब उच्च न्यायालय इलाहाबाद सुनेगा।

अभी तक श्री कृष्ण जन्मभूमि से संबंधित लगभग 13 मुकदमें मथुरा न्यायालय में चल रहे हैं। मुस्लिम पक्ष की तरफ से एडवोकेट तनवीर अहमद ने कहा कि उच्च न्यायालय ने फैसला दिया है उसमें उनको नहीं सुना गया और न ही कोई सूचना दी गई। एडवोकेट तनवीर अहमद ने कहा कि इस आदेश के खिलाफ विधिक सलाह लेकर विचार-विमर्श कर उच्चतम न्यायालय जा सकते हैं।

कर्नाटक: मंत्रियों में हुआ विभागों का बंटवारा

बेंगलुरु: कर्नाटक में सरकार बनने के 7 दिन बाद मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने शनिवार को कैबिनेट का विस्तार किया। आज 24 नए मंत्री सरकार में शामिल किए गए। अब सरकार में कुल 34 मंत्री हो गए हैं। इसके साथ विभागों का बंटवारा भी कर दिया गया। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने वित्त, कैबिनेट अफेयर्स, पर्सनल और एडमिनिस्ट्रेटिव रिफॉर्म्स, इंटेलिजेंस, इंफॉर्मेशन और जो विभाग किसी अन्य को नही दिए गए उनका प्रभार अपने पास रखा है। डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार को इरिगेशन, बेंगलुरु सिटी डेवलपमेंट का जिम्मा दिया गया है। गृह मंत्रालय डॉ. जी परमेश्वरा को सौंपा गया है। श्रीरामलिंगा रेड्डी को ट्रांसपोर्ट विभाग दिया गया है। इसके अलावा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के बेटे और चित्तपुर के विधायक प्रियांक खड़गे को ग्रामीण विकास और पंचायती राज का जिम्मा सौंपा गया है। नई सरकार ने 20 मई को शपथ ली थी, जिसमें सीएम सिद्धारमैया, डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के बेटे प्रियांक खड़गे समेत 8 अन्य मंत्री शामिल थे। शनिवार को कैबिनेट विस्तार में 24 और मंत्री शामिल किए गए हैं। इनमें एचके पाटिल, कृष्णा बायरेगौड़ा, एन चालुवारायस्वामी, के वेंकटेश, डॉ एचसी महादेवप्पा, ईश्वर खंड्रे, क्याथासंद्रा एन. राजन्ना, दिनेश गुंडू राव, शरणबसप्पा दर्शनापुर, शिवानंद पाटिल, तिम्मापुर रामप्पा बलप्पा, एसएस मल्लिकार्जुन, शिवराज संगप्पा तंगदागी, डॉ शरणप्रकाश रुद्रप्पा पाटिल, मंकल वैद्य, आर हेबलकर, रहीम खान, डी सुधाकर, संतोष लाड, एन एस बोसेराजू, सुरेश बीएस, मधु बंगरप्पा, एमएस सुधाकर और बी नागेंद्र शामिल हैं।

धरने पर बैठे पहलवानों के समर्थन में आए बाबा रामदेव

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के सांसद और भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ जंतर-मंतर पर पहलवानों का धरना प्रदर्शन जारी है। इस बीच पहलवानों को योग गुरु बाबा रामदेव का भी समर्थन मिल गया है। बाबा रामदेव ने शनिवार को बृजभूषण की गिरफ्तारी की वकालत की है। बाबा रामदेव ने एक साक्षात्कार में कहा कि कुश्ती संघ के अध्यक्ष पर यौन उत्पीड़न के गंभीर आरोप हैं। उनकी तुरंत गिरफ्तारी होनी चाहिए। बाबा रामदेव ने आगे कहा कि देश के पहलवानों का कई दिनों से धरने पर बैठना सही नहीं है। कुश्ती संघ के अध्यक्ष पर यौन उत्पीड़न के आरोप लगना शर्मनाक बात है। उनकी तुरंत गिरफ्तारी होनी चाहिए।

भारत को बनाया जाए नाटो प्लस का हिस्सा

अमेरिकी कांग्रेस समिति की सिफारिश

वाशिंगटन: अमेरिकी कांग्रेस की एक समिति ने भारत को नाटो प्लस का हिस्सा बनाने की सिफारिश की है। समिति का कहना है कि भारत को इसमें शामिल किए जाने से नाटो प्लस को मजबूती मिलेगी। नाटो प्लस पांच देशों का गठबंधन है। इसे वैश्विक रक्षा सहयोग के लिए बनाया गया है। इसके सदस्य देश ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, जापान, इजरायल और दक्षिण कोरिया हैं। भारत को नाटो प्लस का छठा सदस्य बनाने की सिफारिश की गई है। समिति ने कहा है कि अगर नाटो प्लस का छठा हिस्सा भारत बनता है तो इन देशों के बीच खुफिया जानकारी साझा करने में सुविधा होगी। अमेरिका और चीन के बीच सामरिक प्रतिस्पर्धा पर सदन की चयन समिति के अध्यक्ष माइक गैलाघेर और रैंकिंग सदस्य राजा कृष्णमूर्ति के नेतृत्व में, नाटो प्लस को मजबूत बनाने के लिए भारत को शामिल करने सहित ताइवान की क्षमता को बढ़ाने के लिए एक नीति प्रस्ताव को रखा गया। सदन की चयन समिति ने सिफारिश करते हुए कहा कि चीन के साथ रणनीतिक प्रतिस्पर्धा जीतना और ताइवान की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अमेरिका को भारत के साथ संबंधों को मजबूत करने की जरूरत है।

पिछले छह वर्षों से इस प्रस्ताव पर काम कर रहे भारतीय-अमेरिकी रमेश कपूर ने उम्मीद जताई कि सिफारिश को राष्ट्रीय रक्षा प्राधिकरण अधिनियम 2024 में जगह मिलेगी और अंत में देश का कानून बन जाएगा। उन्होंने कहा कि समिति में इस प्रस्ताव पर बात होना ही विकास की ओर बढ़ता एक कदम है।

समिति ने अपनी सिफारिश में कहा कि ताइवान पर हमले के मामले में चीन के खिलाफ आर्थिक प्रतिबंध सबसे प्रभावी होंगे यदि प्रमुख सहयोगी जैसे जी-7, नाटो, नाटो प्लस और क्वाड सदस्य एकजुट हो जाएं। अगर ये सभी सहयोगी देश एक संयुक्त प्रतिक्रिया पर बातचीत करेंगे तो चीन को कमजोर किया जा सकता है।

नई संसद के सामने महिला महापंचायत की मंजूरी नहीं

नई दिल्ली: भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृजभूषण के खिलाफ पहलवानों का धरना जंतर-मंतर पर जारी है। शनिवार को मामले की स्टेटस रिपोर्ट लेकर दिल्ली पुलिस राउज एवेन्यू कोर्ट पहुंची। यहां दिल्ली पुलिस बताया कि पीड़ितों के धारा 164 के तहत बयान दर्ज किए गए हैं। अब मामले की सुनवाई 27 जून को होगी। इससे पहले योग गुरू बाबा रामदेव का गुस्सा बृजभूषण पर फूटा। राजस्थान के भीलवाड़ा में बाबा रामदेव ने बिना नाम लिए कहा कि कुश्ती संघ का मुखिया रोज बहन-बेटियों के बारे में बकवास करता है। उसे तुरंत अरेस्ट करना चाहिए। वहीं दंगल गर्ल व भाजपा नेता बबीता फोगाट ने पहलवानों के धरने को लेकर सवाल उठाए हैं। बबीता फोगाट ने ट्वीट कर हरियाणा के किसान नेता गुरनाम चढूनी को आंदोलनजीवी करार देते हुए अगुआई पर सवाल खड़े किए हैं। पहलवान 23 अप्रैल से बजरंग पूनिया, विनेश फोगाट और साक्षी मलिक की अगुआई में जंतर-मंतर पर धरना दे रहे हैं। उन्होंने कुश्ती संघ अध्यक्ष बीजेपी सांसद बृजभूषण सिंह पर यौन शोषण के आरोप लगाए हैं। इसके खिलाफ महिला पहलवानों के समर्थन में 28 मई यानी कल नए संसद भवन के सामने महिला महापंचायत होने जा रही है, लेकिन दिल्ली पुलिस ने इसकी इजाजत नहीं दी। इस पर पहलवानों ने कहा कि दिल्ली पुलिस उन्हें जहां रोकेगी, वे वहीं पर बैठकर महापंचायत करेंगे।

बाबा रामदेव ने कहा- यह पाप है: भीलवाड़ा में बाबा रामदेव ने कहा कि देश के पहलवानों का जंतर-मंतर पर धरने पर बैठना और कुश्ती संघ अध्यक्ष पर दुराचार, व्याभिचार के आरोप लगाना बहुत शर्मनाक है। ऐसे व्यक्ति को गिरफ्तार कर जेल की सलाखों के पीछे डालना चाहिए। वह रोज-रोज मुंह उठाकर देश की मां, बहन-बेटियों के बारे में बकवास कर रहा है। यह बहुत निंदनीय, कुकृत्य और पाप है।

आपत्तिजनक बयान देने पर केजरीवाल व खड़गे के खिलाफ हुई शिकायत

नई दिल्ली। नए संसद भवन के उद्घाटन समारोह को लेकर विवाद बढ़ता ही जा रहा है। इस मामले में आपत्तिजनक बयानबाजी करने पर दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे एक नए विवाद में घिर गए हैं। उनके खिलाफ कनॉट प्लेस थाने में शिकायत दी गई है। केजरीवाल और खड़गे समेत कुछ अन्य नेताओं पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की जाति का जिक्र करते हुए भड़काऊ बयान देने के आरोप में इनके खिलाफ नई दिल्ली जिला स्थित कनॉट प्लेस थाने में शिकायत दी गई है। हालांकि, पूरे मामले पर पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी कुछ भी बोलने से बच रहे हैं। राजनीतिक फायदे के लिए केजरीवाल और खड़गे ने नए संसद भवन के उद्घाटन समारोह के आयोजन पर बात करते हुए ऐसे बयान दे दिए, जिसने दो समुदायों/समूहों के खिलाफ दुश्मनी पैदा होने और भारत सरकार के खिलाफ अविश्वास पैदा होने का खतरा है। खड़गे ने नए संसद भवन के उद्घाटन समारोह के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को निमंत्रण नहीं दिए जाने को लेकर चार ट्वीट कर सरकार को घेरते हुए कहा था कि ऐसा लगता है कि भाजपा सरकार दलित और जनजातीय समुदायों से राष्ट्रपति केवल चुनावी वजहों से बनाती है।

खबर संक्षेप

समाजशास्त्र की मौखिक परीक्षा 29 मई एवं प्राचीन इतिहास की 1 जून को

जंघई। नागरिक पीजी कॉलेज जंघई में एमए फाइनल समाजशास्त्र की मौखिक परीक्षा 29 मई को 10 बजे से एवं प्राचीन इतिहास की मौखिक परीक्षा 1 जून को 9 बजे से आयोजित की गई है। यह जानकारी देते हुए विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र प्रोफेसर रवि कुमार मिश्र एवं विभागाध्यक्ष प्राचीन इतिहास डॉ अरविंद कुमार राय ने समस्त छात्र छात्राओं को समय से मौखिक परीक्षा में शामिल होने का निर्देश दिया है।

गोष्ठी आयोजित कर पंडित नेहरू को किया गया नमन

सहसों। क्षेत्र के देवनहरी रुदापुर भरद्वाज गुरुकुल विद्यालय प्रांगण में शनिवार को एक गोष्ठी आयोजित कर देश के प्रथम प्रधानमंत्री भारत रत्न से सम्मानित पंडित जवाहरलाल नेहरू के पुण्यतिथि पर लोगों ने श्रद्धा सुमन अर्पित कर उन्हें शत शत नमन किया। अध्यक्षता कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं अधिवक्ता देवराज उपाध्याय ने पंडित नेहरू को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर कहा कि आधुनिक भारत के निर्माता देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के समय में देश की बहुत तरक्की हुई। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व आज भी भावी पीढ़ी तथा बच्चों के लिए मार्गदर्शन करता रहेगा। इस अवसर पर अमन मिश्रा भीम, दिलीप द्विवेदी, सूर्यकांत, शमशेर बहादुर, गोविंद सिंह, सुभाष चन्द्र विश्वकर्मा सहित आदि लोग उपस्थित रहे।

पति से झगड़कर फांसी के फंदे से लटकर दे दी जान

चार बच्चो को बाहर छोड़ घर के अंदर दरवाजा बंद कर लगाई मौत को गले, पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा

अखंड भारत संदेश

उतरांव प्रयागराज। उतरांव थाना क्षेत्र के पट्टीराम गांव में शनिवार की सुबह पति से झगड़ने के बाद पत्नी ने घर के अंदर पंखे के चुल्ले मे रस्सी का फंदा बनाकर उससे लटककर जान दे दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को फंदे से उतारकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पट्टीराम गांव नीवासी संजय कुमार पासी जो राजमिस्त्री है। बताया जाता है कि वह पत्नी जया देवी 35 वर्ष से अक्सर विवाद करता रहता था। जया देवी के चार मासूम बच्चे भी हैं। शनिवार की सुबह एक बार फिर पति पत्नी में किसी बात को लेकर जमकर कहा सुनी हुई। पत्नी से झगड़ने के बाद संजय कुमार अतरौरा गांव में मकान बनाने चला गया। इधर मौका पाकर जया देवी अपने कमरे में लगे पंखे के चुल्ले में रस्सी का फंदा लगाकर लटककर जान दे दी। मासूम चारों बच्चे काफी देर तक बाहर खेलकर जब मां दिखाई नही दी तो बच्चे दरवाजे के पास गए तो दरवाजा पीटने लगे लेकिन अंदर से बन्द था। जिससे बच्चें मां के लिए रोने बिलखने लगे। यह देख पड़ोसियों को शक हुआ तो रोशन दान से देखने पर जया देवी फांसी के फंदे पर लटकी देखी गयी। यह सूचना पूरे गांव में आग की तरह फैल गयी। ग्रामीणों की सूचना पर थानाध्यक्ष श्रवण कुमार मय फोर्स मौके पर पहुँच गये। पुलिस शव को फंदे से उतरवाकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए। बताया जाता है कि जब से शादी हुई है दोनों पति पत्नी में जमती नही थी। इसके पहले भी जया देवी घर के पास तालाब में कूदकर जान देने की कोशिश की थी। पुलिस ने पत्नी को पीटने के विवाद में संजय कुमार को शांतिभंग में जेल भी भेज चुकी है। जया देवी की मौत पर चारों मासूम बच्चे पिता संजय कुमार से लिपटकर रोते बिलखते देख ग्रामीणों की भी आंखे नम हो गयी। अब बच्चो का सहारा सिर्फ पिता ही है। सबसे बड़ी बेटी मुस्कान 11 वर्ष,खुशबू 9 वर्ष, बेटाआदित्य 6 वर्ष, आदर्श 5 वर्ष की है।

तेज गति से आ रही कार ने बाइक सवार को मारी टक्कर इलाज के दौरान मौत

मऊआइमा। शनिवार की सुबह बाइक पर सब्जी लाद कर सब्जी मंडी जा रहे किसान को तेज गति से आ रही कार ने जोरदार टक्कर मार दी। जिस से वह गंभीर रूप से घायल हो गया।सूचना पर पहुची पुलिस सी एच सी मऊआइमा ले गई। जहां उपचार के दौरान उस की मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज कर कार को थाने में खडी करा ली है।वही सूचना पर पहुचे परिजनों में कोहराम मच गया और रो रो कर बुरा हाल है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के अलावलपुर गांव निवासी नोहर पटेल 43 वर्ष पुत्र राम सहायक शनिवार को सुबह बोरी मे सब्जी भर कर बाइक पर लाद कर मंडी बेचने जा रहा था। बताया गया है कि जैसे बाइक सवार नोहर पटेल ब्लाक चौराहे फोरलेन पर पहुंचा प्रतापगढ़ की ओर से आ रही तेज गति से कार ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। जिससे नोहर पटेल बेहोश हो गया। जिसे तुरन्त सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर उपचार के लिए ले जाया गया जहां थोडी देर बाद नोहर पटेल की मौत हो गई। मौत की खबर सुनकर रोते बिलखते परिजन अस्पताल पहुंच गए। पुलिस ने कार को पकड कर थाने में खडी करा ली है। शव को पुलिस ने पंचनामा भर कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। बताते हैं कि मृतक खेती किसानी करता है। उसका एक पुत्र हिमांशु दो पुत्रियां काजल व आंचल है। नोहर पटेल की मौत से परिजनों में कोहराम मचा गया। और रो रो कर बुरा हाल है।

अंधेरे में जा रहा व्यक्ति 60 फिट गहरे सूखे कुवें में गिरा

46 वर्षीय मंजूर अली को डेढ़ घंटे मसक्कत के बाद जिंदा निकाला गया, इलाज के दौरान हुई मौत

लेडियारी। खीरी थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत खीरी निवासी मंजूर अली पुत्र मरहूम शमशूल हक उम्र 46 वर्ष ट्रक कारोबारी थे जिससे उनके एवं उनके परिवार का जीवकोपार्जन चलता था।बीती रात शुक्रवार को अचानक कुवें में गिर जाने से उनकी दर्दनाक मौत हो गई।आपको बता दें कि मृतक मंजूर अली ट्रक का कारोबार करते थे। 26 मई 2023 की रात 3 बजे सभी ट्रक वाले अपनी ट्रक बघेड़ी सोनौरी रोड़ पर खड़ी कर के जाने लगे तो उक्त व्यक्ति भी उनके साथ निकल पड़े। रास्ते में वर्षों पुराना 60 फिट गहरा कुआँ था और अँधेरा भी ज्यादा था। कुछ साथी तो निकल गए लेकिन मंजूर अली को दिखाई न दिया और कुएँ में जा गिरे जिससे उनके कमर और हाँथ एवं पेट में कुछ चोटें आईं। स्थानीय लोगों की मदद से मौके पर रही पुलिस ने डेढ़ घँटे की मसक्कत के बाद उन्हें बाहर निकाला गया और आनन फानन में नजदीकी अस्पताल चाकघाट में प्राथमिकी उपचार कराया। तबियत ठीक होता न देख परिजनों ने प्रयागराज के कई अस्पतालों में उन्हे ले गए। बताया जाता है कि प्रयागराज उनका इलाज शुरू हुआ तब तक वह जिंदा थे। कुछ ही समय बाद उन्हें डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। ट्रक साथियों के साथ परिजनों ने चाकघाट थाना में एफ आई आर दर्ज कराई और शव का पंचनामा कर त्योन्थर सी एच सी पोस्ट मार्टम के भेज दिया गया जहाँ पर थाना चाकघाट सब इंस्पेक्टर बृजभान सिंह ने डॉक्टरों से मिलकर जल्दी ही पोष्ट मार्टम कराकर शव को परिजनों को सुपुर्द कर दिया। मृतक मंजूर अली को शुक्रवार की शाम साढ़े सात बजे तक उनके पैत्रिक निवास के कब्रिस्तान में सुपूर्द खाक कर दिया जायेगा। मृतक अपने पिता से भाई बहनों में सबसे छोटे थे। इनसे बड़ी दो बहने भोला और शमशा हैं और एक भाई बड़े थे जिनकी मृत्यु एक वर्ष पहले हार्ट अटैक से हो गई थी। मृतक के तीन बेटे और एक बेटी है। बड़ा बेटा अल्ताफ अली (उम्र 22 वर्ष)मर्चेंट नेवी में है जो कि चेन्नई में कार्यरत है और दूसरा बेटा अफजल अली (उम्र 20 वर्ष) हाफिजे कुरान हैं जो मस्जिद में तरावी पढ़ाते हैं एवं बेटी साहिश्ता (उम्र 17 वर्ष) जो कि घर में ही रहती है जिसकी शादी अगले वर्ष होना तय था तथा सबसे छोटा बेटा नौशाद अली जो कि अभी 11 वर्ष का है। आकस्मिक हुई इस घटना से माँ वफातन व बीवी मजीदुन निशा सहित पूरे परिवार का रो रो कर बुरा हाल हुआ पड़ा है।

अगले पांच सालों में नगर का होगा चतुर्दिक विकास : पार्वती कोटार्य

एसडीएम बारा ने चेयरमैन पार्वती कोटार्य संग सभासदों को दिलाई शपथ

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। नगर पंचायत शंकरगढ़ के नवनिर्वाचित चेयरमैन और दर्जनभर सभासदों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। नगर पंचायत शंकरगढ़ के ज्योति गेस्ट हाउस में आयोजित समारोह में उपजिलाधिकारी बारा सुदन अबदुल्ला ने अध्यक्ष व सभासदों को शपथ दिलाई। इसके पश्चात एसडीएम बारा ने सभी नवनिर्वाचित जनप्रतिनिधियों को उनके कार्यकाल के लिए बधाई दी। उपजिलाधिकारी ने कहा कि नगर की समस्याओं के समाधान में तहसील प्रशासन पूरी तरह से उनके साथ है। नवनिर्वाचित चेयरमैन पार्वती कोटार्य ने कहा, शंकरगढ़ कस्बे की जनता ने जिस भरोसे के साथ उन्हे अपना प्रतिनिधि बनाया है,वह उस पर पूरी तरह से खरा उतरने का प्रयास करेंगी। इसके पूर्व शपथ ग्रहण समारोह का शुभारंभ नवागत अधिशाषी अधिकारी नवनीत कुमार ने किया। ईओ ने कहा कि कस्बे का विकास, यहां की समस्याओं को दूर करने वह ह्यनई सरकारह्ल के साथ हैं। जनता की जरूरतों को पूरा करने में उनका पूरा सहयोग रहेगा। एसडीएम अबदुल्ला सुदन ने सबसे पहले चेयरमैन पार्वती कोटार्य को शपथ दिलाई। इसके पश्चात बारी-बारी से सभासद पूजा साहू, राम कैलाश, रंजना भारती, अतुल प्रकाश, कमलेश कुमार, राम पाल, प्रकाश चंद्र गुप्ता, मोहित लाल, सतीश कुमार त्रिपाठी, पुष्पा सिंह, निहारिका गुप्ता, मो. शफीक ने भी शपथ ग्रहण की। शपथ ग्रहण समारोह की अध्यक्षता व्यापार मंडल अध्यक्ष मूलचंद्र गुप्ता और संचालन समाजसेवी अनूप केसरवानी ने किया। इस मौके पर एसीपी संतलाल सरोज, तहसीलदार बारा रमेशचंद्र पांडेय, ईओ नवनीत कुमार, लिपिक प्रदीप कुमार,एसओ मनोज कुमार सिंह, पूर्व ब्लॉक प्रमुख जसरा राधा कोटार्य, पूर्व चेयरमैन रेखा केसरवानी, अनुपमा वैश्य, समाजसेवी सुधा गुप्ता, पायल केसरवानी, सुनीता सिंह, डॉ विनोद त्रिपाठी, घनश्याम कोटार्य, दिनेश तिवारी, अनिल केसरवानी, सचिन वैश्य, कुंजन लाल मिश्रा, वंश बहादुर सिंह, छेदीलाल कोटार्य, दिलीप सिंह, सौरभ श्रीवास्तव, देव कुमार, नरेंद्र गुप्ता, रामानुज गुप्ता सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

नवनिर्वाचित सिरसा नगर पंचायत अध्यक्ष और सभासदों को दिलाई गई शपथ

अखंड भारत संदेश

सिरसा। सिरसा नगर पंचायत कार्यालय परिसर में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में नव निर्वाचित अध्यक्ष विपिन केशरी उर्फ लखन केशरी व सभासदों ने पद व गोपनीयता की शपथ ली। उपजिला अधिकारी करछना राजेश श्रीवास्तव द्वारा अध्यक्ष व सभी नव निर्वाचित सदस्यों को शपथ दिलाई गई। शपथ ग्रहण समारोह के मुख्य अतिथि सांसद प्रो0 रीता बहुगुणा जोशी रहीं। मुख्य अतिथि के रूप में शपथ ग्रहण समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि नगर पंचायत सिरसा की सम्मानित जनता जिस आशा और विश्वास के साथ पहली बार भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार विपिन केशरी को जिता कर अपना विश्वास व्यक्त किया है, उस विश्वास को कभी टूटने नहीं देंगे। उन्होंने कहा कि नगर पंचायत के सभी वार्ड का विकास करते हुए जल निकासी की समस्या, सड़क, स्ट्रीट लाइट, शौचालय, स्वच्छता सहित सभी मूलभूत सुविधाओं को मुहैया कराया जायेगा। जिसके लिए शासन प्रशासन का सहयोग लेते हुए नगर पंचायत सिरसा को अलग एक पहचान दिलाने का प्रयास रहेगा। शपथ लेने वालों में नवनिर्वाचित अध्यक्ष विपिन केशरी उर्फ लखन तथा सभासदों में नगर पंचायत सिरसा से निर्वाचित सभासद वार्ड 1 से बंदना गौतम, वार्ड 2 से अतुल कृष्ण, वार्ड 3 से भाजपा के राणा सेठ, वार्ड 4 से राकेश कुमार, वार्ड 5 से सविता देवी, वार्ड 6 से मनीष कुमार वार्ड 7 से शांति देवी, वार्ड 8 से सुनीता देवी, वार्ड 9 से रवि कुमार वार्ड 10 से रविंद्र कुमार और वार्ड नंबर 11 से मनोरमा देवी ने शपथ ग्रहण किया। इससे पूर्व एसडीएम ने मुख्य अतिथि व अधिशाषी अधिकारी ने अध्यक्ष, सभासदों और गणमान्य लोगों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। मंच संचालन उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार संरक्षक संतोष पनामा ने किया। इस अवसर पर अधिशासी अधिकारी चैतन्य तिवारी, विधान परिषद सदस्य डाक्टर केपी श्रीवास्तव,वरिष्ठ भाजपा युवा नेता शिवा जी पांडेय मेजा, संजीव कुमार मिश्रा विक्की, जय शंकर पाण्डेय, आनन्द पांडेय कलेक्टर पूर्व विधायक, श्रीमती रजनी कशेरी, प्रेम शंकर शुक्ल पूर्व प्रमुख, आशीष मिश्रा, अमरेश तिवारी भानू प्रकाश अग्रवाल पूर्व चेयरमैन, चंद्र प्रकाश केसरी, राजा अग्रवाल, डाक्टर भगवत पाण्डेय, राजू शुक्ला, सिंटू सेठ, धीरज अग्रवाल, राजकुमार केसरी, तपस्वी तिवारी, रतन केसरी, सत्य प्रकाश केशरी, रूपनारायण मिश्र, कमलेश मिश्र, सुशील केशरी, उमाकांत सेठ सिंटू सेठ रामकृष्ण, अनिल यादव गुड्डू जायसवाल सहित भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।

अमेठी समाचार

थानाध्यक्ष अभिनेष कुमार अध्यक्षता में में थाना दिवस समाधान दिवस संपन्न हुआ

कमरौली अमेठी। कमरौली थाना में क्षेत्राधिकारी मुसाफिरखाना गौरव सिंह थाना अध्यक्ष अभिनेष कुमार की अध्यक्षता में थाना दिवस समाधान दिवस का आयोजन किया गया थाना क्षेत्र के आए हुए फरियादियों की समस्याओं को सुना उसके बाद राजस्व पुलिस की संयुक्त टीम बनाकर मौके पर जांच करने हेतु आवश्यक कार्यवाही का निर्देश दिया और थाना अध्यक्ष अभिनेष कुमार ने बताया कि समाधान दिवस पर कुल 5 शिकायतें आई थी जिसने 3 शिकायत का निस्तारण किया गया और शेष 2 शिकायत के लिए राजस्व और पुलिस विभाग की संयुक्त टीम गठित कर मौके पर भेजी गई जल्द ही शिकायत का निस्तारण किया जाएगा इस दौरान थाना पर मौजूद उप निरीक्षक रविंद्र प्रताप उपनिरीक्षक रामबचन अतिथि शिक्षक राजेश गौड़ एवं पुरुष महिला कांस्टेबल मौजूद रहे।

वरिष्ठ भाजपा नेता एवं समाजसेवी को संस्था प्रबंधक ने किया सम्मानित

शुकुल बाजार अमेठी। अपनी निस्वार्थ भावना एवं कुशल कार्यशैली से समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाले एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मे ग्राम पंचायत भटमऊ बाजार शुक्ल अमेठी निवासी समाजसेवी एवं कृष्णा जन कल्याण सेवा संस्थान रजि के प्रबंधक ने आज विकास खण्ड बाजार शुक्ल अन्तर्गत गांव सौना पहुंचकर समाजसेवी एवं वरिष्ठ भाजपा नेता जी एन पांडेय से मुलाकात कर सामाजिक विषयों पर चर्चा की एवं संस्था कृष्णा जन कल्याण सेवा संस्थान रजि द्वारा कराए जा रहे कार्यों से अवगत कराया और उन्हें संस्था कृष्णा जन कल्याण सेवा संस्थान रजि बतौर प्रबंधक श्री राधा कृष्ण प्रतिमा भेंट किया वहीं समाजसेवी पांडेय एवं उपस्थित वरिष्ठ भाजपा नेता तेज बहादुर सिंह ने कहा कि संस्था कृष्णा जन कल्याण सेवा संस्थान समाज के प्रति उत्कृष्ट योगदान दे रही है जो कि समाज के प्रति गौरवपूर्ण है, वहीं समाजसेवी पी के तिवारी ने कहा कि वह प्रबुद्ध जनों के सहयोग, मार्गदर्शन एवं उत्साहवर्धन से भविष्य में और भी बेहतर करने की कोशिश करेंगे और समाज के प्रति समर्पित रहेंगे।

पवित्र ज्येष्ठ माह के अंतिम बड़े शनिवार को हुआ विशाल भंडारे का आयोजन

अखंड भारत संदेश

शुकुल बाजार अमेठी। ज्येष्ठ माह के अंतिम शनिवार के अवसर पर दिन भर आस्था का जनसैलाब उमड़ा रहा। हनुमान मंदिरों पर सुबह से श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। गांवों व कस्बों के चौराहों से लेकर गली मुहल्लों तक आयोजित भंडारे में प्रसाद ग्रहण करने के लिए भीड़ उमड़ती रही। क्षेत्र में जेष्ठ माह के अंतिम शनिवार के शुभ अवसर पर जय शनि देव भक्त हनुमान जयकारों की गूंज से वातावरण मंगलमय देखा जा रहा था। सुबह से ही रामभक्त ने मंदिरों में पूजा अर्चना कर भंडारे का आगाज शुरू किया। कस्बे के चौराहों पर श्रद्धालुओं की भीड़ देखी जा रही थी। वहीं पूरा दिन मंदिरों में हनुमान जी के जयकारे गूंजते रहे। क्षेत्र में भक्तों द्वारा विभिन्न प्रकार के धार्मिक कार्यक्रमों के भी आयोजन किए गए। भक्तों द्वारा शनिदेव व हनुमान जी को लड्डुओं का भोग लगाया गया। जगह जगह स्टाल लगाकर भंडारे के आयोजन भी किए गए। मंदिरों को रंग-बिरंगे फुलों एवं गुब्बारों से सजाया गया। ज्येष्ठ माह के पावन अवसर पर धार्मिक जनों ने अपने घरों में भी सुंदर कांड और रामचरित मानस पाठ के आयोजन किए। वही हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी विशाल भंडारे का आयोजन कई जगहों पर देखने को मिला जैसे ठाकुरगंज चौराहा ,गायत्री नगर चौराहा बाजार शुकुल साईं गंज चौराहा ,पांडेगंज चौराहा आदि स्थानों पर, छोला चावल बूंदी, पूड़ी सब्जी ,हलवा पूड़ी का भक्तों द्वारा भंडारे का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने जयकारा लगाते हुए प्रसाद ग्रहण किया।

जेठ के बड़े मंगल पर उमड़ा आस्था का सैलाब

जगदीशपुर अमेठी। ज्येष्ठ माह के तीसरे बड़े मंगल पर दिन भर आस्था का सैलाब हिलोरें लेता रहा। हनुमान मंदिरों पर सुबह से श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। गांवों व कस्बों के चौराहों से लेकर गली मुहल्लों तक आयोजित भंडारे में प्रसाद ग्रहण करने के लिए भीड़ उमड़ती रही। क्षेत्र में जेठ माह के बड़े मंगल पर श्री राम भक्त हनुमान जयकारों की गूंज से वातावरण मंगलमय देखा जा रहा था। सुबह से ही रामभक्त हनुमान के मंदिरों में भक्तों ने पूजा अर्चना कर भंडारे का आगाज शुरू हुआ। कस्बे के चौराहों पर श्रद्धालुओं की भीड़ देखी जा रही थी। वहीं पूरा दिन मंदिरों में हनुमान जी के जयकारे गूंजते रहे। क्षेत्र में भक्तों द्वारा विभिन्न प्रकार के धार्मिक कार्यक्रमों के भी आयोजन किए गए। भक्तों द्वारा हनुमान जी को लड्डुओं का भोग लगाया गया। जगह जगह स्टाल लगाकर भंडारे के आयोजन भी किए गए। मंदिरों को रंग-बिरंगे फुलों एवं गुब्बारों से सजाया गया। जेठ माह के पावन अवसर पर धार्मिक जनों ने अपने घरों में भी सुंदर कांड और रामचरित मानस पाठ के आयोजन किए। जगदीशपुर पुलिस भूत के सामने पर सुबह से ही भक्तों का तांता देखा गया साथ साथ भक्तों द्वारा भंडारे का आयोजन भी देखा गया जो देर शाम तक चलता रहा। हनुमान भक्तों द्वारा पूजा अर्चना मंगल भवन अमंगल हारी लाल देह लाली लसे की गूंज पूरा दिन मंदिर परिसर के आस-पास गुंजती सुनाई दी। मंदिर में पूजा-अर्चना के बाद हनुमान जी को भोग लगाया गया। सांसद प्रतिनिधि विजय गुप्ता की अध्यक्षता में एवं व्यवस्थापक जिला पंचायत सोनू यज्ञ सैनी की देखरेख में धार्मिक अनुष्ठान संपन्न हुआ। धार्मिक अनुष्ठान में धार्मिक आयोजन हुए। हनुमान जी के भक्तो के मन और शरीर पर आस्था का ऐसा असर रहा कि झुलसा देने वाली धूप में भी श्रद्धालु जयकारे लगाते हुए प्रसाद ग्रहण करते देखे गए।

नोडल अधिकारी ने चौपाल लगाकर सुनी ग्रामीणों की समस्याएं

अखंड भारत संदेश

सिंहपुर अमेठी। ब्लॉक क्षेत्र की ग्राम पंचायत पिपरी अहमदाबाद में चौपाल लगाकर ग्रामीणों की समस्याएं सुनी गई। नोडल अधिकारी सहायक विकास अधिकारी मनोज कुमार चौधरी की अध्यक्षता में चौपाल का आयोजन किया गया जिसमें गांव सभा के नागरिकों ने भागीदारी सुनिश्चित की नागरिकों की समस्यायों का निस्तारण भी करवाया गया । चौपाल में मनरेगा मजदूरों की मजदूरी का भुगतान संबंधी मामलों पर चर्चा हुई जिसमें सहायक विकास अधिकारी मनोज कुमार चौधरी ने इस मामले में निस्तारण किये जाने का आश्वासन भी दिया , चौपाल कार्यक्रम में किसानों को मिलने वाली किसान सम्मान निधि, आयुष्मान कार्ड,हर घर नल,और जल की योजना सहित सरकार द्वारा संचालित सभी योजनाओं को योजनाबद्ध तरीके से काम किए जाने पर चर्चा की गई गांव सभा के सचिव गंगा विभूति ने सभी योजनाओं के संचालन की जानकारी भी दी। ग्राम प्रधान पिपरी अहमदाबाद कोमल यादव ने कहा कि हमारी ग्राम पंचायत में सरकार द्वारा चलाई जा रही सभी योजनाओं का संचालन सुचारू और सुदृढ़ तरीके से किया जा रहा है ग्राम पंचायत इंटरलॉकिंग व्यवस्था से लेकर अन्य सभी विकास कार्य करवाए गए जो आज भी देखे जा सकते हैं। प्रधान प्रतिनिधि सतीश कुमार यादव ग्राम सभा की चौपाल में आए हुए ग्राम पंचायत के ग्रामीणों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर आंगनबाड़ी कार्यकत्री सुसीला, आशा बहू, रोजगार सेवक, सफाई कर्मचारी सहित सभी सरकारी कर्मचारी और नागरिक मौजूद रहे। चौपाल के माध्यम से आवास, मनरेगा कार्य व मजदूरी, आंगनबाड़ी केन्द्र, सामुदायिक शौचालय, जल निकासी, सड़क, संपर्क मार्ग, एमडीएम,संचारी रोग, टीकाकरण, वृद्धा, विधवा एवं विकलांग पेंशन सहित अन्य योजनाओं पर चर्चा हुई।

पुलिस का अवैध खनन के विरुद्ध कार्यवाही, जेसीबी व ट्रैक्टर-ट्रॉली को किया सीज

शुकुल बाजार अमेठी। पुलिस अधीक्षक अमेठी के निर्देशन में एवं अपर पुलिस अधीक्षक अमेठी के पर्यवेक्षण में जनपद अमेठी में अपराध एवं अपराधियों के धर पकड़ हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना बाजारशुक्ल पुलिस द्वारा दिनांक 26.05.2023 को मुखबिर की सूचना पर ग्राम पूरे गुमान मजरे दक्खिनगांव क्यार में अवैध खनन की सूचना पर तत्काल कार्यवाही करते हुए मौके से 01 अदद जेसीबी व 02 अदद टैक्ट्रर ट्राली 1.01 अदद जेसीबी यूपी 36 टी 5111 2.महिन्द्रा 265 डीआई ट्रैक्टर-ट्रॉली सं0 यूपी 44 एक्स 2519 3.01 अदद स्वराज 744 एफई ट्रैक्ट्रर यूपी 44 एयू 7078 को अन्तर्गत धारा 207 एमवी एक्ट की कार्यवाही करते हुए थाना परिसर में सुरक्षित किया गया। पुलिस टीम में शामिल : 1. उ0नि0 महेन्द्र सरोज थाना बाजारशुक्ल जनपद अमेठी । 2. हे0का0 बृजलाल मौर्या थाना बाजारशुक्ल जनपद अमेठी। 3. हे0का0 राधाकान्त पाण्डेय थाना बाजारशुक्ल जनपद अमेठी।

न्यूज झरोखा

हाई कोर्ट में अपर शासकीय अधिवक्ता बनने पर लोगों ने दी बधाई

रत्योरा। क्षेत्र के हरदिहा पाल गांव के अधिवक्ता सुरेश कुमार सिंह पटेल को उच्च न्यायालय इलाहाबाद में अपर शासकीय अधिवक्ता बनाए जाने पर क्षेत्रीय लोगों ने बधाई दी है। अधिवक्ता सुरेश कुमार सिंह 10 वर्षों से उच्च न्यायालय प्रयागराज में वकालत कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने इनको उच्च न्यायालय में शासकीय अधिवक्ता के पद पर नियुक्त किया है। जिससे क्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ गई है। भारतीय किसान संघ काशी प्रांत के मंत्री भोला सिंह ने इनके शासकीय अधिवक्ता बनने पर बाजार में मिष्ठान बांटकर खुशी मनाई। अपर शासकीय अधिवक्ता बनने के बाद सुरेश कुमार सिंह पटेल गंगा समग्र के राष्ट्रीय संगठन मंत्री रामाशीष से मुलाकात कर उन्हें पुष्पगुच्छ भेंट किया। इस दौरान भारतीय किसान संघ के प्रांत मंत्री भोला सिंह, धीरज सागर आदि कई लोग मौजूद रहे। शासकीय अधिवक्ता बनने पर बधाई देने वाले लोगों में डा रमाशंकर सिंह, भोला सिंह प्रांत मंत्री भारतीय किसान संघ उत्तर प्रदेश काशी प्रांत, शिव राम पाल, अजय प्रताप सिंह, शारदा प्रताप सिंह, मनीष वर्मा, राजेश सिंह, राम नारायन मौर्या, शिव प्रसाद, धीरज सागर आदि ने मिलकर नगर पंचायत कोरांव में प्रथम आगमन पर जोर दार स्वागत एवम अभिनंदन किया।

पीएम किसान सम्मान निधि का कैम्प लगाकर पंचायत सचिवालय पुरैनी में हुआ निस्तारण

करछना। विकास खंड के ग्राम पंचायत पुरैनी हासिमपुर में शनिवार को प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि केवाईसी फॉर्म जमा एवं लाभार्थियों की समस्याओं से संबंधित किसानों का निस्तारण किया गया जिसके लिए पंचायत सचिवालय में कृषि विभाग का कैम्प लगाया गया जिसमें ग्रामवासियों अपनी समस्या दर्ज कराई इस अवसर पर ग्राम प्रधान प्रतिनिधि सुरेश पाण्डेय ग्राम पंचायत अधिकारी रामरूप सिंह लेखपाल बैजनाथ तिवारी अवधेश पाण्डेय एडवोकेट कृषि विभाग से संदीप पटेल डाक विभाग से कर्मचारी रोजगार सेवक मनोज पाण्डेय पंचायत सहायक आकांक्षा पाण्डेय सफाई कर्मचारी प्रेम प्रकाश सहित बड़ी संख्या में ग्रामवासी व लाभार्थी मौजूद रहे।

तीन दुकानों में चोरों ने नगदी सहित लाखों पर हाथ साफ किया

करछना। थानांतर्गत पनासा पुलिस चौकी के बसही गांव में शुक्रवार की रात चोरों ने तीन दुकानों का ताला तोड़कर लाखों का सामान पार कर दिया। सुबह पता चलने पर भुक्तभोगियों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और छानबीन कर वापस चली गई। पुलिस का कहना है कि चोरी में स्थानीय लोगो का ही हाथ हो सकता है। थानांतर्गत लोहारी गांव निवासी रितेश कुमार पांडेय की बसही बाजार में महादेव देवभूमि बचत बाजार के नाम से कपड़े की दुकान है। रितेश के छोटे भाई अभिषेक कुमार पांडेय दुकान पर बैठते हैं। उन्होंने बताया कि दुकान पर रेडीमेड कपड़े बेचे जाते हैं। हमेशा की तरह शुक्रवार शाम को आठ बजे रितेश अपनी दुकान बंद कर घर चले गए थे। आधी रात के बाद चोरों ने उनके शटर का ताला तोड़ दिया और अंदर रखे कंप्यूटर, फुटकर नकदी और करीब डेढ़ लाख के फैंसी कपड़े चोर उठा ले गए। उनकी दुकान के समीप ही गुड्डू यादव और अजीत यादव की गुमटी में दुकान है। उनका ताला तोड़कर दोनो गुमटियों में से करीब 12 हजार के सामान चोरों ने उड़ा दिया। सुबह पता चलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने छानबीन थी और इस निष्कर्ष पर पहुंची कि चोरी में आसपास के लोग ही शामिल हैं। वहां लगे सीसीटीवी कैमरे को भी चेक किया गया। लेकिन थोड़ी दूर होने की वजह से उसमें चोर नहीं दिख रहे हैं। पुलिस का कहना है कि मुखबिरो को लगाया गया है। जल्दी चोरों को पकड़ लिया जाएगा।

खबर संक्षेप

महिंद्रा एंड महिंद्रा में शुआट्स के 5 बच्चों का चयन

नैनी। सैंम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज में निदेशालय कैरियर प्लानिंग एण्ड काउन्सेलिंग के निदेशक डा अर्पण शेरिंग ने बताया कि महिंद्रा एंड महिंद्रा ने प्लेसमेंन्ट ड्राइव आयोजन किया था जिसमे बीटेक में एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग के पांच बच्चो का चयन किया गया। डॉ. अर्पण ने इस बाबत बताया कि अयान आर्यन, शिवम पटेल, अगस्त्या सिंह का चयन महिंद्रा एंड महिंद्रा की स्वराज डिवीजन ब्रांच में हुआ जबकि महिमा चौधरी और सौम्या राय का चयन फार्म इक्विपमेंट सेक्टर में हुआ। प्रतिकुलपति प्रो0 जोनाथन ए0 लाल ने चयनित छात्रों को बधाई दी और उनके सुनहरे भविष्य की कामना की।

जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में डीएम ने कई प्रभारी चिकित्साधिकारियों का वेतन रोकने के दिए निर्देश

दरियाबाद, करैलाबाग, भोला के पूरा के प्रभारी चिकित्साधिकारियों पर हुई कार्रवाई

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में शनिवार को संगम सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने जेएसवाई, प्रथम संदर्भन ईकाई, जेएसवाई लाभार्थियों के भुगतान की प्रगति, मंत्रा पोर्टल पर प्रसव की इंट्री, ई-कवच एप, प्रधानमंत्री मातृत्व अभियान योजना, प्रधानमंत्री मातृ वन्दना योजना, परिवार कल्याण कार्यक्रम, नियमित टीकाकरण, आरसीएच पोर्टल पर पंजीकरण एवं अपडेशन के कार्यों की समीक्षा की। जिलाधिकारी ने मंत्रा एप पर फीडिंग के कार्य में लापरवाही बरतने पर दरियाबाद, करैलाबाग, भोला के पूरा के प्रभारी चिकित्साधिकारियों का वेतन रोकने के निर्देश दिए है। जननी सुरक्षा योजना की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने प्रसूताओं को मिलने वाले इंसेंटिव का शत-प्रतिशत भुगतान सुनिश्चित किए जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने आशाओं का भी भुगतान शत-प्रतिशत सुनिश्चित किए जाने हेतु कहा है। जिलाधिकारी ने अभियान चलाकर वीसीजी, मिजल्स रूबेला टीकाकरण कराये जाने का निर्देश दिया है साथ ही साथ उन्होंने सभी प्रभारी चिकित्साधिकारियों को ड्यू लिस्ट अपडेट रखने एवं ड्यू लिस्ट के अनुसार कार्रवाई किए जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने मंत्रा एप, ई-कवच, आरसीएच पोर्टलों पर फीडिंग का कार्य शत-प्रतिशत रूप से कराये जाने हेतु निर्देशित किया है। जिलाधिकारी ने वेल्नेससेंटर के निर्माण कार्य में तेजी लाये जाने व प्रभारी चिकित्सा अधीक्षकों को कार्यदायी संस्थाओं के द्वारा कराये जा रहे कार्यों की लगातार मानीटरिंग करते रहने का निर्देश दिया है। जिलाधिकारी ने सभी चिकित्साधिकारियों को चिकित्सालयों में सभी आवश्यक व्यवस्थायें पूर्ण रूप से सुनिश्चित बनाये रखने के निर्देश दिए है। उन्होंने अधिकारियों को बिजली एवं मेडिकल उपकरण तथा साफ-सफाई के कार्यों की जांच करते रहने के निर्देश दिए। उन्होंने चिकित्सकीय उपकरणों को चेक करते हुए खराब उपकरणों को ठीक कराये जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने अस्पतालों में साफ-सफाई की समुचित व्यवस्था बनाये रखने के साथ-साथ चिकित्सकों एवं पैरामेडिकल स्टॉफ को मरीजों से अच्छा व्यवहार किए जाने के लिए कहा है। संस्थागत प्रसव की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने शत-प्रतिशत संस्थागत प्रसव सुनिश्चित कराये जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने प्रसव केन्द्रों पर सभी आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित बनाये रखने के निर्देश दिए है। उन्होंने एएनएम, आशा व आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों की नियमित बैठक करने तथा प्रभारी चिकित्साधिकारियों को नियमित रूप से भ्रमण कर इसका अनुश्रवण करते रहने के लिए निर्देशित किया है। जिलाधिकारी ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता न बरती जाये। स्वास्थ्य से सम्बंधित जो योजनाएं संचालित है, उनका अच्छी तरह से क्रियान्वयन करते हुए लोगो को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी गौरव कुमार, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 आशु पाण्डेय, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी सहित सभी प्रभारी चिकित्साधिकारीगण उपस्थित रहे।

पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के ताई की अस्थियों का संगम में हुआ विसर्जन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की ताई एवं पूर्व सांसद तेज प्रताप सिंह यादव की दादी स्व. समंद्रा देवी की अस्थियां शनिवार को संगम मे विसर्जित की गईं। पूर्व सांसद धर्मेंद्र यादव एवं पूर्व सांसद तेज प्रताप सिंह ने आज सुबह संगम तट पर विधिवत पूजन अर्चन कर अस्थियों को संगम मे विसर्जित किया। इस अवसर पर पार्टी के तमाम पदाधिकारी आदि मौजूद रहे। इस दौरान सुरक्षा व्यवस्था का व्यापक बंदोबस्त किया गया था। कई थानों की पुलिस मौके पर लगाई गई थी। किले के पास स्थित वीआईपी घाट पर वैदिक मंत्रोच्चार के बीच अस्थि कलश का तेज प्रताप ने पूजन अर्चन किया। इसके बाद मोटर बोट से जाकर संगम में अस्थियां प्रवाहित की। इस दौरान कई पुरोहित मौजूद रहे।

पुलिस से खौफजदा पूर्व सैनिक के बेटे ने फंदे पर लटककर दी जान, इसी साल पास की थी इंटर की परीक्षा

प्रयागराज। धूमनगंज में एक सनसनीखेज वारदात सामने आई है। यहां साकेत नगर में रहने वाले पूर्व सैनिक के 17 वर्षीय बेटे शैल सनी सिंह ने शुक्रवार रात करीब आठ बजे फांसी लगाकर जान दे दी। आरोप है कि पुलिस से खौफजदा होकर उसने यह कदम उठाया। पिता संतोष कुमार सिंह ने बताया कि सनी शुक्रवार को अपनी स्कॉर्पियो गाड़ी स्टार्ट कर रहा था और इसी दौरान वाहन अनियंत्रित होकर सामने रहने वाले पड़ोसी के गेट से जा टकराया। इससे गेट और दीवार का कुछ हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया। आरोप है कि इसके बाद पड़ोसी ने अन्य लोगों के साथ मिलकर उसके बेटे को बेरहमी से पीटा और फिर पुलिस को बुला लिया।पूर्व सैनिक का आरोप है कि उनकी पत्नी ने नुकसान की भरपाई करने की बात कही, इसके बावजूद पड़ोसी नहीं माना और मौके पर पहुंचे एक दरोगा ने भी उनके बेटे पर दबाव बनाया। इससे बेटा दहशत में आ गया और घर के भीतर जाकर फांसी के फंदे पर लटक गया। मृतक छात्र ने इसी साल सीबीएसई से 12वीं की परीक्षा पास की थी। उधर धूमनगंज पुलिस आरोपों की जानकारी से ही इंकार कर रही है।

डीएम ने समाधान दिवस पर सोरांव, मऊआइमा एवं नवाबगंज थाने में सुनी जनता की समस्याएं

अखंड भारत संदेश

जिलाधिकारी ने प्राप्त शिकायतों के निस्तारण हेतु तत्काल राजस्व एवं पुलिस टीम का गठन कर मौके पर किया रवाना, कहा जनता की शिकायतों के निस्तारण में लापरवाही या उदासीनता कत्तई क्षम्य नहीं

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री ने सम्पूर्ण समाधान दिवस पर थाना सोरांव, मऊआइमा एवं नवाबगंज पहुंचकर जनता की समस्याओं को सुना। जिलाधिकारी ने सोरांव थाने में अपनी समस्या लेकर आये हुए लोगो की शिकायतों को सुनते हुए शिकायतों को आज ही निस्तारित कराये जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने लेखपाल व पुलिस विभाग को तत्काल मौके पर रवाना किया तथा शिकायतों का निस्तारण करने के निर्देश दिए। सोरांव थाने में कुल 14 शिकायतें प्राप्त हुई, जिनमें से 01 शिकायत का मौके पर निस्तारण किया गया। मऊआइमा थाने में समस्यायें लेकर आये हुए लोकनाथ के द्वारा जमीन पर कब्जा, यशोदा देवी के द्वारा मकान पर कब्जा, नन्हेलाल के द्वारा जमीन पर कब्जा, वी0के0 त्रिपाठी के द्वारा अवैध रूप से जमीन पर कब्जा, जे0के0 पटेल के द्वारा अवैध नाला बनाये जाने की शिकायत की गयी, जिसपर जिलाधिकारी ने राजस्व एवं पुलिस की टीम को मौके पर जाकर मामले की जांच कर प्रकरण का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित कराये जाने के निर्देश दिए है। मऊआइमा थाने में कुल 05 शिकायतें प्राप्त हुई, जिनमें से 01 शिकायत का मौके पर निस्तारण कर दिया गया तथा शेष शिकायतों के त्वरित निस्तारण हेतु सम्बंधित को निर्देशित किया गया। उन्होंने राजस्व विभाग तथा पुलिस टीम को निर्देशित किया कि जो भी आवेदन आ रहे है, उसका तत्काल गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित किया जाये। नवाबगंज थाने में कुल चकरोड़, अवैध कब्जे सहित कुल 09 शिकायतें जिलाधिकारी के समक्ष सुनवायीं के लिए आयीं, जिसपर जिलाधिकारी ने मौके पर राजस्व टीम एवं पुलिस टीम को रवाना करते हुए शिकायतों को निस्तारित करने के निर्देश दिए है। जिलाधिकारी ने कहा कि जनता की शिकायतों में लापरवाही या उदासीनता कत्तई क्षम्य नहीं होगी। इस अवसर पर डी0सी0पी0 गंगापार अभिषेक भारती, ज्वाइंट मजिस्टेट/ एसडीएम सोरांव सार्थक अग्रवाल, एसीपी सहित सभी सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

ट्रैक्टर पलटने से 3 लोग की हुई मौत 6 घायल

क्षेत्र के साजी गांव से बधाव कार्यक्रम के बाद ट्रैक्टर से लौट रहे थे लोग

अखंड भारत संदेश

रत्योरा। कोरांव क्षेत्र के बरहुला कला गांव की नहर में अनियंत्रित ट्रैक्टर के पलटने से दो महिलाओं समेत एक नाबालिग युवक की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि आधा दर्जन से अधिक लोग गंभीर रुप से घायल हो गए। घायलों में चार लोगों को जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया है। मृतकों में रीता देवी (40) पत्नी बुद्धसेन, सुमन देवी (40) पत्नी अनिल एवं इन लोगों का भतीजा गोलू उर्फ आशीष पुत्र मिश्रीलाल उम्र (15) शामिल हैं। मृतक सभी छेत्र के मड़फा गांव के निवासी है। मड़फा गांव से क्षेत्र के साजी बेलवनीयां गांव में रीता की ननद के यहां बधाव गया हुआ था जहां से वापस लौटते समय बारहुला कला गांव की नहर में टैक्टर अनियंत्रित होकर पलट गया। जिसके बाद तीन लोगों की मौत हो गई और चार लोग गंभीर रुप से घायल हो गए। चार घायलों को जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। घायलों में शिव कुमारी पत्नी राम सुख, हरेराम पुत्र गोपुत सिंह, लालता प्रसाद पुत्र राम जतन निवासीगण मड़फा रामचंद्र पुत्र सतई निवासी मनिकपुरा मिजार्पुर शामिल हैं। बताया जा रहा है कि ट्रैक्टर चालक उमाकांत शराब के नशे में था और पहले किसी एक बाइक सवार को टक्कर मार दी। बाइक सवार के चिल्लाने पर ट्रैक्टर चालक हड़बड़ाहट में अनियंत्रित होकर नहर में जा पलट गया।

शाइन सिटी के मालिकों पर 25 लाख की धोखाधड़ी में एक और मुकदमा

प्रयागराज। शाइन सिटी के मालिक भाइयों सीएमडी राशिद नसीम और आसिफ नसीम पर 25 लाख की धोखाधड़ी में एक और मुकदमा दर्ज हुआ है। एलआईसी एजेंट गोविंद प्रसाद का आरोप है कि दोनों भाइयों ने कंपनी की विभिन्न योजनाओं में आकर्षक रिटर्न का झांसा देकर उससे कई बार में 25.50 लाख रुपए जमा करा लिए। यह रकम उसने अपनी पत्नी उर्मिला और बेटी अनुकृति के नाम पर निवेश की थी। एक दिन पता चला कि कंपनी अपने कार्यालय में ताला लगाकर भाग निकली।पीड़ित का आरोप है कि सिविल लाइंस थाने में शिकायत करने के बावजूद पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। इसके बाद उसने कोर्ट में गुहार लगाई। अब कोर्ट के आदेश पर सिविल लाइंस थाने में राशिद नसीम और उसके भाई आसिफ नसीम पर मुकदमा दर्ज किया गया है।सिविल लाइंस इंस्पेक्टर वीरेंद्र सिंह यादव का कहना है कि शाइन सिटी से संबंधित सभी मामलों की विवेचना आर्थिक अपराध शाखा कर रही है। ऐसे में मुकदमों से संबंधित दस्तावेज व साक्ष्य से जल्द ही लखनऊ भेज दिए जाएंगे।

आईएएस में चयनित श्रेया सिंह का मुविवि ने किया सम्मान

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के पुरा छात्र परिषद ने विश्वविद्यालय की एम ए समाजशास्त्र कार्यक्रम की उत्तीर्ण छात्रा सुश्री श्रेया सिंह के भारतीय प्रशासनिक सेवा आईएएस में चयनित होने पर सम्मान किया। लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में आयोजित सम्मान समारोह में कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह ने सुश्री श्रेया सिंह को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कुलपति प्रोफेसर सिंह ने श्रेया की मां श्रीमती पंकजा सिंह तथा पिता श्री शैलेश सिंह का भी स्वागत सम्मान किया। उन्होंने कहा कि श्रेया का आईएएस में चयन मुक्त विश्वविद्यालय के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। इससे अन्य छात्रों को भी प्रेरणा मिलेगी। इस अवसर पर सुश्री श्रेया सिंह ने कहा कि मुक्त विश्वविद्यालय की अध्ययन सामग्री प्रतियोगी छात्रों के लिए बहुत मददगार है। उन्होंने कोविड काल में मुक्त विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में एम ए की परीक्षा उत्तीर्ण की। श्रेया ने आईएएस में 639 वीं रैंक हासिल की है।समारोह का संचालन पुरा छात्र परिषद के अध्यक्ष तथा सम्मान समारोह के संयोजक डॉ ज्ञान प्रकाश यादव ने किया। अतिथियों का स्वागत समाज विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर एस कुमार तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव कर्नल विनय कुमार ने किया। अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

मऊआइमा पुलिस ने दो गो तश्करों को गिरफ्तार कर भेजा जेल

मऊआइमा। पिकअप पर आधा दर्जन गोवंश लाद कर प्रयागराज की ओर जा रहे गोतस्करों के वाहन का पुलिस ने पीछा किया तो वह पुलिसकर्मियों की वहन पर जानलेवा हमला की नीयत से वाहन पर चढाते की कोशिश किए। तथा ब्रेजा कार को भी क्षतिग्रस्त कर दिए थे। पुलिस ने दो को गिरफ्तार कर आधा दर्जन गोवंश को बरामद कर लिया। शनिवार को दोनों गो तस्वीरों का लिखा पढ़ी कर के जेल भेज दिया। मालूम कि शुक्रवार को मऊआइमा थाने के सब इंस्पेक्टर संजय मौर्या हमराही पुलिस कर्मचारियों के साथ फोर लेन पर गश्त पर थे। तथी एक पिकअप पर गोवंश से लदी हुई वाहन को पुलिस ने रोका तो वह पुलिस को धता देते हुए भागने लगे। पुलिसकर्मियों ने सरपताही नहर के पास जब गोतस्करों को पकड? की कोशिश की तो पुलिस के वाहन पर जानलेवा हमले की कोशिश की। जिसे पुलिस ने मौके से दो को गिरफ्तार कर आधा दर्जन गोवंश बरामद कर लिया। इसके पूर्व खंड कार्यवाह दिनेश मौर्या तथा विहिप प्रखंड मंत्री अशोक कुमार केसरवानी आदि की ब्रेजा कार में टक्कर मार कर वाहन क्षतिग्रस्त कर दिए थे। पुलिस ने गिरफ्तार उमाशंकर पाल पुत्र देवराज पाल तथा विकास कुमार साहू पुत्र गौरी शंकर साहू निवासीगण नरहरपुर थाना रामगंज जिला अमेठी को पशुक्रूरता, गोवध, कातिलाना हमले की कोशिश करने आरोप में शनिवार को जेल भेज दिया और मकसूद और उनके साथियों को तलाश कर रही है।

बीए की छात्रा से कंपनी गार्डन में दुष्कर्म दोस्त और ममेरे भाई पर मुकदमा

प्रयागराज। कर्नलगंज में बीए की छात्रा ने दोस्त पर कंपनी गार्डन में ले जाकर दुष्कर्म करने का आरोप लगाया है। आरोप यह भी है कि इसमें उसके ही ममेरे भाई व एक अन्य ने सहयोग किया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।छात्रा कर्नलगंज की रहने वाली है और सिविल लाइंस स्थित कॉलेज से बीए कर रही है। उसने पुलिस को बताया कि एक प्राइवेट कॉलेज से बीए कर रहे रोहित से उसकी साल भर से दोस्ती थी। आरोप है कि 18 मई को रोहित उसे लेकर कंपनी गार्डन गया। जहां छात्रा का फाफामऊ निवासी ममेरा भाई अपने एक दोस्त के साथ मौजूद था।इसके बाद रोहित ने दोनों युवकों के सहयोग से उससे दुष्कर्म किया। शिकायत करने की बात पर गालीगलौज की और जान से मारने की धमकी देकर चुप करा दिया। शुक्रवार को पीड़िता परिजनों संग थाने पहुंची और तहरीर दी। इंस्पेक्टर राममोहन राय ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर जांच पड़ताल शुरू कर दी गई है।

शादी का झांसा देकर युवती के साथ दुष्कर्म करने वाला आरोपी भेजा गया जेल

मऊआइमा। शादी का झांसा देकर युवक एक युवती के साथ दुष्कर्म करता रहा।शादी तय हो जाने पर दहेज में बाइक की मांग करने लगा मांग न पूरी होने पर इंकार कर दिया था पुलिस ने युवक के खिलाफ दुष्कर्म का मुकदमा कर आरोपी की तलाश में जुट गई थी। शनिवार को आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दी है। मऊआइमा थाना के क्षेत्र के एक गांव निवासिनी एक युवती का आरोप था कि बहरिया के एक युवक ने शादी का झांसा देकर उसके साथ कई साल तक बलात्कार करता रहा। जब शादी तय हो गई तो दहेज के लिए बाइक की मांग करने लगा बाद में शादी से इंकार कर दिया। युवती ने मऊआइमा थाने में दुराचार एंव दहेज प्रथा का मुकदमा दर्ज करा दी थी। शनिवार को पुलिस ने दुराचारी अखिलेश कुमार सरोज पुत्र रामबाबू सरोज ग्राम मालीपुर थाना बहरिया को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

पुलिस ने चोरी के एक व स्मैक के दो कारोबारियों को किया गिरफ्तार

नैनी। नैनी पुलिस ने अलग-अलग आरोप से जुड़े कुल तीन आरोपियो को गिरफ्तार कर जेल भेजा जानकारी के मुताबिक जिसमे एक अभियुक्त चोरी के अभियोग से सम्बंधित है वहीँ दो अभियुक्त नशीला पदार्थ स्मैक के अवैध कारोबार में लिप्त होने के जुर्म में स्मैक के साथ पकड़ा। प्रभारी निरीक्षक नैनी बृजेश सिंह के कुशल नेतृत्व में शुक्रवार को पुलिस ने अलग अलग आरोप से जुड़े कुल तीन अभियुक्तों को गिरफ्तार कर संबंधित पुलिस कार्यवाही की। उप निरीक्षक उपेन्द्र तिवारी ने लगातार प्रयास दबिस देकर आज मुखबीर की खास सूचना पर थाना नैनी पर पंजीकृत 267/23 के मुकदमे से सम्बंधित आरोपी श्यामू उर्फ बम्बई पुत्र संगम भारतिया उम्र 22 वर्ष निवासी धनुहा नैनी को इंदलपुर कब्रिस्तान के समीप मेला पार्किंग ग्राउंड से गिरफ्तार करने में सफल हुए सघन पूछताछ में उंसके कब्जे से चोरी की हुई सरिया लगभग सात किलो तथा एक ग्लैडर मशीन आदि बरामद करने का नैनी पुलिस ने दावा किया।इसी क्रम में आज चौकी प्रभारी मामा भांजा संतोष कुमार सिंह आधा दर्जन पुलिसकर्मियों के साथ सुरक्षा गस्त के दौरान मुखबिर की खास सूचना पर चौकी क्षेत्र चौराहे से घेराबंदी कर 45 पुड़िया स्मैक कुल वजन 09 ग्राम स्मैक के साथ पति व पत्नी एक साथ पकड़ा। सघन पूछताछ में आरोपीयो की पहचान सलीम पुत्र जलील उम्र 32 वर्ष व पत्नी रेशमा उम्र28 निवासी कटेहरा पीपल चौराहा के पास सी ओ मो0 जाहिद थाना अतरसुइया प्रयागराज के रूप में हुई।पुलिस ने दोनों के खिलाफ संबंधित धारा में मुकदमा दर्ज कर आगे की विधिक कार्यवाही को पूरा किये।

एक वर्ष के भीतर भरे जाएं प्रदेश की राजस्व अदालतों के खाली पद, हाईकोर्ट ने यूपी सरकार को दिया आदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने प्रदेश की सभी राजस्व अदालतों के अधिकारियों को राजस्व संहिता के उपबंधों का कड़ाई से पालन करने को कहा है। साथ ही हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को उप जिलाधिकारी न्यायिक व तहसीलदार न्यायिक के खाली पदों को एक वर्ष के भीतर भरने का निर्देश भी दिया है। कोर्ट ने मुख्य सचिव को सभी आयुक्तों व कलेक्टर को आदेश की जानकारी उपलब्ध कराने को कहा है।कोर्ट ने अधिकारियों की ओर से, राजस्व संहिता के अंतर्गत दाखिल विवाद में समाप्त हो चुके उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश एवं भू राजस्व कानून के उपबंधो के उल्लेख पर रोक लगा दी है। कोर्ट ने कहा है कि राजस्व संहिता में विभिन्न प्रकार के आवेदनों के निस्तारण की अवधि तय है। उसी अवधि के भीतर वाद तय किए जाएं।जिन मामलों में समयावधि तय नहीं है, उनका निस्तारण छह माह में किया जाय। कोर्ट ने आदेश के उल्लघंन को अदालत की अवमानना करार दिया है। इसके लिए कलेक्टर, आयुक्त व राजस्व परिषद पर अवमानना कार्रवाई की जाएगी। यह आदेश न्यायमूर्ति अरुण कुमार सिंह देशवाल ने दया शंकर की याचिका को निस्तारित करते हुए दिया है। याची व तिलकधारी तथा अन्य के बीच धारा 116 में संपत्ति बंटवारे का केस विचाराधीन है। इसके शीघ्र निस्तारण की मांग में यह याचिका दायर की गई थी। कोर्ट ने कहा, राजस्व संहिता में हर मामले को तय करने की समय सीमा निर्धारित है। वकीलों की हड़ताल तथा अधिकारियों की गैर मौजूदगी के कारण सुनवाई में देरी हो रही है।ऐसे मामलों के शीघ्र निस्तारण की मांग में भारी संख्या में याचिकाएं दायर की जाती हैं। कोर्ट ने हर अर्जी को तय करने की समय सीमा तय करते हुए पालन करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने कहा है कि यदि किसी आदेश की वापसी या स्थगन अर्जी लंबित है तो उत्पीड़?ात्मक कार्रवाई न की जाय। किसी भी मामले को छह माह से अधिक न लटकाया जाय।

न्यूज झरोखा

पार्षद राकेश जयसवाल शपथ लेने के बाद नगर निगम के कर्मचारियों को सम्मानित किया

वार्ड नंबर 20 चक रघुनाथ में पार्षद राकेश जयसवाल महीने में एक बार खुद झाड़ू लगाएंगे

नैनी। व्यापार मंडल नैनी के अध्यक्ष राकेश जयसवाल ने पार्षद का शपथ ग्रहण लेने के बाद नैनी डाकखाना के पास अकाश होटल में वार्ड नंबर 20 चक रघुनाथ नगर निगम के सारे कर्मचारियों को बुलाकर सम्मानित किया और कर्मचारियों से पार्षद राकेश जयसवाल ने कहां की साफ सफाई का विशेष ध्यान रखिएगा उन्होंने कहा कि अब रविवार को भी झाड़ू लगने की व्यवस्था किया जाएगा और कूड़ा उठाने की भी पार्षद राकेश जयसवाल ने बताएं कि हम खुद महीने में एक बार वार्ड में झाड़ू लगाएंगे ताकि लोग भी साफ सफाई का ध्यान रखें मुख्य रूप से गुड्डू वर्मा गुडविल गैरेज दिनेश केसरवानी पिंटू जैन भुवर जयसवाल धर्मराज पटेल पंकज नरेंद्र चौरसिया मुन्ना शर्मा हाशिम खान प्रदीप राठौर एवं व्यापारी उपस्थित थे।

कालोनी की सड़कों पर भरा है बारिश का पानी

कही नाली ही नही है तो कही नालो पर लोगो ने कब्जा कर लिया है

झूंसी। अचानक शुक्रवार की सुबह हुई जोरदार बारिश से झूंसी की कई कालोनियों में जलभराव हो गया है। बरसाती पानी के ठहराव से कालोनी वासियो का गुस्सा फूट पड़ा है लोगो ने नगर निगम के प्रति रोष व्यक्त करते हुए कहा की घंटे भर की बारिश में यह हाल है बारिश में तो लोगो के घरों में पानी भर जाता है। शुक्रवार की सुबह हुई बारिश से पारा तो लुढक कर नीचे आ गया लेकिन सड़को पर पानी भी भर गया। जीटी रोड के साथ न्याय नगर दुर्गा मंदिर के आस पास पानी निकासी की व्यवस्था न होने से सड़कों पर पानी भरा है। अंगद यादव ने बताया की नाली न होने से थोड़ी सी ही बारिश में सड़कों पर पानी भर जाता है और कई दिनों तक सड़को पर पानी लगा रहता है जिसकी वजह से लोगो को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। वही आवास विकास कालोनी योजना 3 के सेक्टर 6 में भी जलभराव हो गया है। कालोनी निवासी अतुल मिश्रा ने बताया की नालो पर अतिक्रमण हो गया है और में मुख्य मार्ग की सड़क उची हो गई है जिसकी वजह से पानी नही निकल पा रहा है। बारिश में तो पानी लोगो के घरों में भर जाता है।

एडीएम फाइनेंस ने किया मेजा तहसील का औचक निरीक्षण, हड़कंप

मेजा। शुक्रवार को एडीएम फाइनेंस ने मेजा तहसील का औचक निरीक्षण किया।इस दौरान तहसील महकमा में हड़कंप मचा रहा। बता दें कि शुक्रवार एडीएम फाइनेंस जगदंबा प्रसाद सिंह मेजा तहसील का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान अधिकतर कार्यालयों से कर्मचारी नदारद रहे, जिसे लेकर उन्होंने नाराजगी व्यक्त किया। इस दौरान फाइलों की रखरखाव को लेकर तहसीलदार डॉक्टर विशाल शर्मा से पेंडिंग पड़े खतौनी परवाना को लेकर तत्काल निस्तारण करने के आदेश दिए। एडीएम ने तहसीलदार विशाल शर्मा के कार्यशैली को लेकर कड़ी नाराजगी जताई। उन्होंने एक सप्ताह के अंदर पेंडिंग पड़े फाइलों को दुरुस्त कराने की सख्त हिदायत दी। इस दौरान एडीएम फाइनेंस से मेजा बार के अध्यक्ष महेंद्र दुबे और मंत्री चंद्रमणि शुक्ल सहित अधिवक्ताओं ने नायब तहसीलदार लालतारा सुलभ तिवारी के कार्यशैली की शिकायत करते हुए उनको हटवाने की मांग की। इसके बाद वह रजिस्ट्री ऑफिस में पहुंचकर फाइलों की जांच करते हुए उप प्रबंधन को फटकार लगाई। एडीएम फाइनेंस के निरीक्षण के दौरान अफरा तफरी का माहौल रहा।

पंडित नेहरू ने लोकतंत्र को अपना मूलमंत्र बनाया : अशफाक

प्रयागराज। सिकंदरा में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री भारत रत्न पण्डित जवाहरलाल नेहरू के पुण्यतिथि पर कांग्रेसियों ने श्रद्धा सुमन अर्पित किया। इस मौके पर कांग्रेस के राष्ट्रीय सदस्य अशफाक अहमद ने कहा कि पंडित नेहरू ने विकास के लिए लोकतंत्र को अपना मूल मंत्र बनाया और भारत को एक मजबूत आधार दिया। देश के सामाजिक अधोसंरचना से लेकर भौतिक अधोसंरचना तक के विकास के लिए पंडित नेहरू के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।उनकी नीतियों के कारण देश में कृषि और उद्योग के विकास का एक नया युग शुरू हुआ। इस अवसर पर विनोद विश्वकर्मा,आरती राकेश,मोहम्मद सददाम,अमन दुबे, अधिवक्ता अरशद अहमद सिद्दीकी,मोहम्मद यूसुफ,मोहम्मद फारूक,शिव प्रसाद,अरविंद पांडेय, मोहम्मद शमीम प्रधान,अंसार अली, कल्लन भाई,आदि लोग उपस्थित रहे।

व्यापारी नेता घनश्याम जायसवाल ने महापौर को ज्ञापन सौंपा

नैनी। स्टेशन रोड चौड़ीकरण को लेकर के पीडीए द्वारा नाप किया गया जिसमें कहीं पर 24 मीटर कहीं 12 मीटर कहीं 6 मीटर जिससे व्यापारियों में भारी आक्रोश था आज व्यापारियों का एक प्रतिनिधिमंडल व्यापारी नेता घनश्याम जायसवाल का एक प्रतिनिधि मंडल प्रयागराज महापौर को ज्ञापन सौंपा ज्ञापन देने वालों में प्रमुख रूप से घनश्याम जायसवाल पदुम जयसवाल दिनेश केसरवानी कुंवर जी जयसवाल राजकुमार भारतीय रामबाबू यादव संजय जयसवाल माधव विश्वकर्मा चंद्रबली जाटव ज्ञान जयसवाल फूल चंद केसरवानी लाल जी जैसवाल प्रमुख रूप से मांग कर रहे थे। ज्ञापन के बाद महापौर ने कहां में पीडीएस से बात करके व्यापारियों के साथ कतई अन्याय नहीं होगा मैं शीघ्र ही अधिकारियों से बात करूंगा आश्वासन के बाद व्यापारियों में एक नई उर्जा देखने को मिली।

पंचायत भवन करछना में आयोजित हुआ केवाईसी कैम्प

करछना। विकास खंड करछना के ग्राम पंचायत करछना पंचायत सचिवालय पर शनिवार को प्रधान प्रतिनिधि अवतार किशन सिंह एडवोकेट के नेतृत्व में प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि के लाभार्थियों की समस्याओं का निस्तारण किया गया जिसमें कृषि विभाग, राजस्व विभाग के कर्मियों ने प्रतिभाग किया इस अवसर पर प्रधान प्रतिनिधि अवतार किशन सिंह व कृषि विभाग से श्रीधर यादव असिस्टेंट टेक्नोलॉजी मैनेजर व लेखपाल बैजनाथ तिवारी व डाक विभाग से ध्रुव कुमार द्विवेदी एबीपीएम व पंचायत सहायक प्रतिभा सिंह जिसमें केवाईसी 15 किसानों की किया गया और 13 मृतक चिन्हित किया है तथा 15 नए फॉर्म आवेदन के अलावा नया खाता पांच खुला20 किसानों का मोबाइल नंबर जोड़ा इस अवसर पर ग्राम पंचायत के कयी गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

कार की टक्कर से पति-पत्नी व दो बच्चों की दुखद मौत

मोटरसाइकिल से ससुराल जामताली जा रहा था परिवार, पृथ्वीगंज में हुई दर्दनाक दुर्घटना

युवा दम्पत्ति की मौत से घर पर जुटी महिलाओं की भीड़।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर कोतवाली क्षेत्र के पृथ्वीगंज में आज तेज रफ्तार एक कार की टक्कर से मोटरसाइकिल सवार युवा दम्पत्ति व उसके दो छोटे छोटे बच्चे की दुखद मौत हो गई। बताया जाता है कि सांगीपुर थाना क्षेत्र के महाबल के रहने वाले युवा दम्पत्ति मनोज सिंह (37) व उसकी पत्नी सीमा सिंह (35) वर्ष अपने दो बच्चों सपना (7) व शिवम (4) को मोटरसाइकिल से लेकर अपनी ससुराल जामताली जा रहा था।

आज पत्नी सीमा का भाई चण्डीगढ़ जा रहा था। उसी से मिलने यह परिवार मोटरसाइकिल से जा रहा था, लेकिन रास्ते में ही पृथ्वीगंज के पास तेज रफ्तार में आई एक कार ने मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी जिससे मनोज सिंह व उसके बेटे शिवम की दुर्घटना स्थल पर ही मौत हो गई तथा सीमा व उसकी पुत्री सपना को इलाहाबाद ले जाते समय रास्ते में मौत हो गई।

इस तरह पूरा परिवार मौत के मुंह में समा गया। घटना की सूचना मिलते ही मृतक के घरवालों व ससुराल में कोहराम मच गया। सूचना पाते ही अपर पुलिस अधीक्षक पूर्वी विद्या सागर मिश्र घटना स्थल पर पहुंचे। पृथ्वीगंज चैकी और कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंचकर चारों शवों को पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया। पुलिस ने दुर्घटना करने वाली कार को कब्जे में ले लिया है तथा मामले की छानबीन कर रही है।

भैंस से टकराकर बाइक सवार युवक की मौत, कोहराम

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के कुसुवापुर सलवन मार्ग पर शुक्रवार की देर शाम थाना क्षेत्र के लवाना कुम्हारन का पुरवा निवासी विनोद कुमार प्रजापति पुत्र स्व किशन (23) वर्षीय शुक्रवार की शाम लगभग 7 बजे अपनी बाइक मे किसी को बैठाकर बडेरा बारात जा रहा था कि मददुपुर चैराहे के पास सड़क पर अचानक सामने भैंस के आ जाने से बाइक की टक्कर हो गई जिससे बिनोद गंभीर रूप से घायल हो गया और पीछे बैठा युवक मामूली रूप से घायल हो गया। खून से लथपथ पड़े विनोद व युवक पर ग्रामीणों की नजर पड़ी तो हड़कंप मच गया। मौके पर पहुँचे परिजन लोग ने घटना की जानकारी नवाबगंज पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने विनोद को उपचार के लिए सीएचसी कालाकांकर ले गई जहां चिकित्सकों ने विनोद को मृत घोषित कर दिया। परिजन लोगों के अस्पताल पहुंचने पर मौत की खबर मिलने पर कोहराम मच गया। मृतक विनोद की शादी लगभग 6 महीने पहले हुई थी। पत्नी का रो रो कर बुरा हाल है। अपने पति को देख बार बार बेहोश हो जाती थी। पुलिस ने शव का पंचनामा करके पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

रामगंज नगर पंचायत में नगर अध्यक्ष उराकेश कुमार सिंह ने ली शपथ

वार्ड के सभासदों ने भी ली शपथ

अखंड भारत संदेश

नगर पंचायत अध्यक्ष पद की शपथ लेते राकेश कुमार सिंह।

पट्टी, प्रतापगढ़। नवसृजित नगर पंचायत रामगंज में शनिवार को रामगंज के नवनिर्वाचित अध्यक्ष राकेश कुमार सिंह ने नगर के 13 सभासदों के साथ शपथ लिया और नगर के विकास का संकल्प को दोहराया। सुबह 11 बजे पट्टी उपजिलाधिकारी देशदीपक ने नवसृजित नगर पंचायत के नवनिर्वाचित अध्यक्ष राकेश कुमार सिंह को शपथ दिलाई उनके साथ वार्ड के 13 सभासदों ने भी शपथ लेते हुए कर्तव्य निष्ठा से कार्य करने की संकल्प लिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह व प्रतापगढ़ सांसद संगम लाल गुप्ता ने मौजूद लोगों को संबोधित भी किया। मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ा है। विकास के पथ पर चलते हुए पार्टी ने जहां नए प्रतिमान स्थापित किए हैं वहीं लोगों ने पार्टी पर भरोसा जताया है जिसका प्रतिफल यह रहा है कि रामगंज को प्रथम नागरिक राकेश कुमार सिंह को चुना गया। सांसद संगम लाल गुप्ता ने सरकार की योजनाओं तथा प्राथमिकताओं को गिनाते हुए आगे भी विकास करने की बात कही।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से वार्ड के 13 सभासद के साथ-साथ बाबा बेलखरनाथ धाम के ब्लाक प्रमुख सुशील सिंह आसपुर देवसरा ब्लाक प्रमुख कमलाकांत यादव, पूर्व ब्लाक प्रमुख देवेंद्र पांडे, पिंटू सिंह, राणा सिंह, राजेश पांडे, बृजेश सिंह, रविंद्र गिरी, संदीप पांडे, गोलू अध्यापक राजेश सिंह, अध्यापक अजय कुमार जायसवाल, पूर्व जिला पंचायत विनय सिंह, राणा राम, उजागर सिंह, विष्णु बरनवाल, गुड्डू सिंह, संजीव सिंह सहित कई लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन रविकांत आचार्य तथा अशोक श्रीवास्तव ने किया।

ढकवा नगर पंचायत में अशोक त्यागी ने लिया शपथ

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। नवसृजित नगर पंचायत ढकवा में अध्यक्ष चुने गए अशोक त्यागी ने पद और गोपनीयता की शपथ ली। उनके साथ सभी 14 वार्डों के सभासदों ने भी शपथ लेते हुए नगर के विकास का वादा किया। नगर पंचायत ढकवा में इस बार समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी अशोक त्यागी को जीत मिली और उन्हें ढकवा नगर पंचायत का प्रथम नागरिक बनने का अवसर प्राप्त हुआ नगर पंचायत में शपथ ग्रहण के दौरान कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे पट्टी के विधायक राम सिंह पटेल तथा विजय यादव ने लोगों को संबोधित किया जिला पंचायत सदस्य समाजवादी पार्टी के नेता विजय यादव ने कहा लोकतंत्र में हर व्यक्ति का सम्मान है और अशोक त्यागी को प्रथम नागरिक बनने का अवसर देकर ढकवा नगर पंचायत में एक बेहतर निर्णय लिया है। विकास का अमलीजामा पहनाया जाएगा। कार्यक्रम को विधायक राम सिंह पटेल ने संबोधित करते हुए सभी लोगों को सपा के नगर अध्यक्ष को जिताने पर आभार प्रकट किया कार्यक्रम में मुख्य रूप से पूर्व जिला पंचायत सदस्य रमाशंकर यादव किसान मजदूर सभा के जिला अध्यक्ष गुड्डू यादव, पप्पू यादव सहित सभी सभासद मौजूद रहे।

राज्य मंत्री दिनेश सिंह की मौजूदगी में बेल्हा की सरकार ने लिया शपथ

लगातार 25 वर्षों से कमल खिलाने पर मंत्री ने नगर की जनता को किया नमन

अखंड भारत संदेश

शहीद उद्यान में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में बोलते नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह।

प्रतापगढ़। प्रदेश सरकार के राज्य मंत्री दिनेश प्रताप सिंह की मौजूदगी में आज नगर के शहीद उद्यान में जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष हरिप्रताप सिंह को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। उसके बाद सभी 25 सभासदों को एडीएम त्रिभुवननाथ विश्वकर्मा ने पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस मौके पर मुख्य अतिथि दिनेश प्रताप सिंह ने अपनी ओर से तथा मुख्यमंत्री की ओर से प्रतापगढ़ की नई सरकार को बधाई देते हुए कहा कि जनता ने जो अवसर दिया है, उस पर हम सब खरा उतरने का प्रयास करेंगे। उन्होंने जनता का धन्यवाद किया कि वह लगातार 25 वर्षों से नगर पालिका में कमल खिला रही है। इससे हरिप्रताप सिंह की जनता के समर्पण और विकास की कसौटी खरी उतरती दिखती है। उन्होंने कहा कि शहर के विकास में हमसे और उत्तर प्रदेष सरकार से भरपूर सहयोग मिलेगा। उन्होंने नरग पालिकाध्यक्ष को छह बार जीतने का रिकार्ड बनाने पर बधाई दी और कहा कि यह जीत यहां के नगरवासियों की है।

प्रारंभ में हरिप्रताप सिंह ने कहा कि 1995 से लगातार शहरवासियों ने विष्वास कर सेवा का जो अवसर दिया है, उसका मैं जीवन भर ऋणी रहूंगा फिर भी इस ऋण को विकास के रुप में ब्याज सहित लौटाने का प्रयास करुंगा। उन्होंने कहा कि प्रदेष के मुखिया योगी आदित्यनाथ ने प्रतापगढ़ सहित पूरे प्रदेष में भयमुक्त समाज बनाया है। उसका लाभ भी नगरवासियों को मिला है। इस अवसर पर सांसद संगम लाल गुप्ता ने हरिप्रताप सिंह ने 25 वर्षों तक लगातार जीत गोल्डेन जुबली की जीत पर बधाई देते हुए कहा कि हरिप्रताप सिंह ने सेवा के बल पर शहरवासियों का स्नेह और प्यार पाया है। इस अवसर पर जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल, पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने मंत्री दिनेष सिंह का स्वागत किया। इस मौके पर पूर्व मंत्री षिवाकांत ओझा, मोती सिंह, विधायक सदर राजेन्द्र मौर्य, सुल्तानपुर के विधायक सीताराम वर्मा, राजा अनिल प्रताप सिंह, जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र, षिव प्रकाष मिश्र सेनानी, पूर्व विधायक धीरज ओझा, पूर्व नगर पालिकाध्यक्ष प्रेमलता सिंह आदि मंच पर मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन मो0 अनीस ने किया। इस मौके पर नगर पालिका के ईओ राम अचल कुरील व सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह मंच की व्यवस्था में लगे रहे।

एसडीएम व सीओ ने समाधान दिवस में सुनीं शिकायतें, निस्तारण के लिए टीमें गठित

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। थाना समाधान दिवस में लालगंज कोतवाली में चौदह शिकायतों मे अफसरो ने पांच का निस्तारण किया। शिकायतों की सुनवाई यहां एसडीएम उदयभान सिंह व सीओ रामसूरत सोनकर ने किया। एसडीएम उदयभान सिंह ने जमीनी विवाद के मामले मे राजस्व एवं पुलिस टीम का गठन करते हुए मौके पर समाधान कराए जाने के निर्देश दिये। सीओ रामसूरत सोनकर ने समाधान दिवस की शिकायतों के निस्तारण मे मातहतो की कुछ मामलो मे दिखी लापरवाही पर नाराजगी भी जतायी। समाधान दिवस का संयोजन प्रभारी निरीक्षक कमलेश पाल ने किया। वहीं सांगीपुर थाने मे ग्यारह शिकायतों मे से प्रभारी निरीक्षक मनोज यादव ने चार का निस्तारण कराया। उदयपुर में तीन शिकायतो मे दो का थानाध्यक्ष निकेत भारद्वाज ने निस्तारण कराया। लीलापुर में चार शिकायतें राजस्व से जुडी आयीं। प्रभारी निरीक्षक सुभाष यादव ने शिकायतों की सुनवाई करते हुए इनके निस्तारण कराए जाने के लिए राजस्व एवं पुलिस टीम को मौके पर भेजवाया।

कार व बाइक की भिडन्त, तीन हुए चुटहिल

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कार व बाइक की भिडंत में बाइक सवार तीन युवक गंभीर रूप से जख्मी हो गये। प्रारंभिक उपचार के बाद तीनों घायलों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। लालगंज कोतवाली के अमांवा चौराहे के समीप शनिवार की सुबह साढे नौ बजे कार व बाइक की आमने सामने भिडन्त हो गयी। बाइक सवार कोठा नेवढ़िया के रामकिशुन के पुत्र मदनलाल (24) व राकेश सरोज (25) पुत्र गंगाराम तथा पन्ने लाल के पुत्र लाल बहादुर (35) गंभीर रूप से घायल हो गये। सूचना पर एम्बुलेंस पहुंची और घायलों को उपचार के लिए लालगंज ट्रामा सेण्टर ले आयी। यहां प्रारंभिक उपचार के बाद घायलों की गंभीर दशा देख उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया।

खेत के मेड पर सीखा रखने की शिकायत पर मारपीट में चार घायल

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के अस्थान चैकी मजरे संधई का पुरवा गांव मे शुक्रवार की देर शाम लगभग 8 बजे गीता देबी पत्नी श्रीनाथ पटेल के खेत के मेड पर गांव के एक युवक ने सीखा रख दिया था जिसकी शिकायत करने पर यवक ने अपने भाई और पत्नी के साथ दरवाजे पर आकर भंद्दी भद्दी गाली देते हुए घर में घुसकर लाठी डंडा व कुल्हाड़ी से मार पीट कर घायल कर दिया। बचाने दौड़ी रीता देबी पत्नी शिवनाथ (40) वर्षीय, नीलम पुत्री शिवनाथ (18) वर्षीय, पूनम पुत्री श्रीनाथ (16) वर्षीय को लात घुसों से मारा पीटा और नीलम के कपड़े फाड़ डाले। शोर मचाने पर जब गाव वाले दौड़े तो आरोपीगण लोग भद्दी भद्दी गाली व जान से मारने की धमकी देते हुए भाग गये। शनिवार की सुबह पीड़िता गीता देबी पुत्री श्रीनाथ पटेल ने चार लोगो के खिलाफ घटना की नामजद तहरीर दिया। पुलिस ने चार नामजद आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करते हुए घायलो को उपचार के लिए सीएचसी कालाकांकर भेजा।

आजादी की लड़ाई में पं0 जवाहर लाल नेहरु का अहम योगदानः डा0 लालजी

इंदिरा भवन पर कांग्रेसियों ने मनाई पूर्व प्रधानमंत्री की पुण्यतिथि

इंदिरा भवन पर आयोजित बैठक में बोलते जिलाध्यक्ष डा0 लालजी त्रिपाठी।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारत रत्न देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की पुण्यतिथि आज जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय इंदिरा भवन पर जिला अध्यक्ष डॉ लालजी त्रिपाठी की अध्यक्षता में मनाई गई जिसका संचालन सुरेश मिश्रा ने किया। जिला अध्यक्ष डॉ लालजी त्रिपाठी ने पंडित जवाहरलाल नेहरू के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किया डॉक्टर लालजी त्रिपाठी ने कहा आजादी की लड़ाई में पंडित जवाहरलाल नेहरु का अहम योगदान था। उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

उन्होंने कहा पंडित ने देश के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया था। उन्होंने कांग्रेसजनों से जवाहर लाल नेहरू के बताए हुए रास्तों सिद्धांतों पर चलने की अपील की। नगर अध्यक्ष इरफान अली, पीसीसी सदस्य डॉ नीरज तिवारी, पीसीसी सदस्य प्रशांत शुक्ला, सेवादल जिला अध्यक्ष महेंद्र शुक्ला, महिला अध्यक्ष सरोज कश्यप ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में पीसीसी सदस्य रोहित शुक्ला, कोषाध्यक्ष वेदांत तिवारी, संदीप तिवारी, मकरंद शुक्ला, राम शिरोमणि वर्मा, फतेह बहादुर सिंह, उत्सव भूषण पाल, प्रेम शंकर द्विवेदी, अवधराज यादव, अनुराग शुक्ला, अजीत सिंह, दिलीप गौतम, मोहम्मद यूसुफ, अशोक सिंह आदि लोगों ने श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

पं. नेहरू के चिंतन से भारत को वैश्विक नेता बनने का मार्ग हुआ प्रशस्तः मोना

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर स्थित क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के कैम्प कार्यालय पर देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू की पुण्यतिथि समारोहपूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम की शुरूआत चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी व संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश ने पं. नेहरू के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। समारोह को वर्चुअल संबोधित करते हुए कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने कहा कि पं. नेहरू ने आधुनिक भारत के परिवेश की मजबूत पृष्ठभूमि रखते हुए देश को दुनिया के वैश्विक मंच के नेतृत्व का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होने कहा कि पं. नेहरू की नीतियों को मजबूत बनाए रखने के लिए कार्यकताओं को संविधान की गरिमा को बचाने के लिए लोकतांत्रिक संघर्ष को मजबूत बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी व संचालन मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने किया। संयोजक छोटे लाल सरोज व शैलेन्द्र मिश्र ने पं. नेहरू के राष्ट्रीय योगदान पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम को अधिवक्ता संघ के उपाध्यक्ष लाल विनोद प्रताप सिंह, कालिका प्रसाद पाण्डेय, प्रमोद सिंह, मो. मतलूब खान, अजय शुक्ल गुडडू, हर्षद श्रीवास्तव, सिंटू मिश्र, महन्त द्विवेदी ने भी अपने विचार रखे। इस मौके पर मो. मोबीन, संजय सिंह, सुनील सिंह मोनू, शिवाकांत मिश्र, लाल स्नेहांस प्रताप सिंह, विपिन शुक्ल, मो. शब्बीर, जमाल, हरकेश सिंह, सुरेश सिंह, अमरनाथ तिवारी आदि रहे।

सांसद ने जामताली में ग्राम प्रवास के दौरान सुनी समस्याएं

जिला विधिक सेवा शिविर में लोगों को दी जानकारी

अखंड भारत संदेश

जिला विधिक सेवा शिविर में मौजूद सांसद संगम लाल गुप्ता।

प्रतापगढ़। ग्राम प्रवास के दौरान सांसद संगम लाल गुप्ता ने विकास खण्ड शिवगढ़ के जामताली में विभिन्न कार्यक्रमों में भागीदारी करने के साथ साथ जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आयोजित निःशुल्क विधिक सेवा शिविर में बोलते हुये कहा कि समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को न्याय दिलाने में विधिक सेवा प्राधिकरण मील के पत्थर के रूप में काम कर रहा है।

सांसद ने कहा कि आज गांवों में बढ़ते आपसी छोटे छोटे विवाद हमारे विकास में बाधा बन रहे हैं। ऐसे में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा वैकल्पिक विवाद निस्तारण जिसे प्री लिटिगेशन कहते हैं के माध्यम से हम बहुतेरे मामलों में गरीब, वंचित, शोषित, असहाय ब्यक्तियों को हम प्राधिकरण के माध्यम से सहायता पहुंचाने में मदद कर सकते हैं। सांसद ने जामताली में सायं भजन संध्या के बाद संगठनात्मक बैठक कर प्रातः प्रभातफेरी, स्वच्छता अभियान के साथ सार्वजनिक स्थल पर पंच पल्लव पीपल, पाकड़, बरगद, गूलर और आम के बृक्षों को भी लगाया। प्रवास के दौरान निःशुल्क चिकित्सा शिविर के साथ साथ आंगनबाड़ी, आशा, समूह की महिलाओं से संवाद कर उनकी जनसमस्याओं का भी हल निकालने का प्रयास करने का आश्वासन दिया। चिकित्सा शिविर में 265 एलोपैथिक तथा 243 आयुष मरीजो का चिकित्सकीय परीक्षण कर उन्हें चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई गई। प्रवास के दौरान उप जिलाधिकारी रानीगंज सौम्य श्रीवास्तव, बीडीओ धर्मेंद्र प्रताप सिंह, प्रशांत श्रीवास्तव मण्डल अध्यक्ष भाजपा, संतोष श्रीवास्तव एबीयसए शिवगढ़, विवेक उपाध्याय, पीयलपी राम प्रकाश पाण्डेय, दिनेश कुमार मिश्र, अनिल कुमार पाण्डेय, राकेश मिश्रा, अभिषेक पाण्डेय, सत्य प्रकाश पाण्डेय, विजय दुबे डब्बू, दिनेश सोनी, भगवान आदि उपस्थित रहे।

विधिक साक्षरता शिविर लगाकर दी गई कानून की जानकारी, लोगों को किया गया जागरुक

अखंड भारत संदेश

रानीगंज, प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देश के क्रम में जनपद न्यायाधीश अब्दुल शाहिद के आदेश एवं अपर जिला जज नीरज कुमार बरनवाल सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण प्रतापगढ़ के कुशल निर्देशन में रानीगंज तहसील के अंतर्गत ग्राम जामताली स्थित प्राथमिक विद्यालय परिसर में विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविर आयोजित किया गया।

शिविर में पराविधिक स्वयंसेवक रामप्रकाश पांडेय ने लोगों को लीगल एड डिफेंस काउंसिल सिस्टम एडीआर मध्यस्थता लोक अदालत प्री- लेटीग्रेशन वैवाहिक विवाद निःशुल्क विधिक सहायता की जानकारी दी। रानीगंज तहसील के परा विधिक स्वयं सेवक दिनेश कुमार मिश्र ने बताया कि कानून की जानकारी के अभाव में गरीब दिव्यांग निराश्रित लोग दर दर भटकने को मजबूर होते हैं ऐसे लोगो को न्याय दिलाने के लिए विधिक सेवा प्राधिकरण गांव गांव शिविर लगाकर लोगो को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक कर उनकी समस्या का निस्तारण कराने का कार्य कर रहा है। शासकीय अधिवक्ता विवेक उपाध्याय ने कहा कि गांव में लोग सामान्य बातों को लेकर लड़ाई झगड़ा कर लेते हैं और मुकदेमेबाजी में परेशान होते हैं आपसी सुलह समझौते से समस्या का निस्तारण समय रहते कर लिए जाए तो लोग प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ सकते हैं। शिविर का संचालन करते हुए अनिल पांडेय ने नशामुक्ति शिक्षा का अधिकार महिलाओं के अधिकार उपभोक्ताओं के अधिकार सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाएं आदि विषयों पर अपनी बात रखी। शिविर में ग्राम प्रधान प्रमोद दुबे, संतकुमार सरोज, शरदचंद्र मिश्र, दिव्या दुबे, रमा पांडेय, कुसुम देवी, मीना, ऊषा, अनीता, रामजनम शुक्ल, इंद्रजीत, मुनीद, नूर आलम, मोहम्मद अनाम सहित आशा आंगनवाड़ी सफाई कर्मी व भारी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

चेयरमैन शांती देवी कुशवाहा व 12 सभासदों को एसडीएम ने दिलाई पद एवं गोपनीयता की शपथ

अखंड भारत संदेश

अझुवा में भव्य शपथ ग्रहण समारोह का हुआ आयोजन

नवनिर्वाचित अध्यक्ष का स्वागत करती जनता

शपथ ग्रहण कार्यक्रम में उपस्थित नगर की जनता

अझुवा कौशाम्बी। आदर्श नगर पंचायत अझुवा के पँचमलाल उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय में नगर पंचायत अझुवा की नवनिर्वाचित अध्यक्षा शांती देवी कुशवाहा एवम नगर पंचायत के नवनिर्वाचित 12 वार्ड के सदस्यों को एसडीएम मनीष कुमार ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सुरेश राही प्रभारी मंत्री कौशाम्बी/राज्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार मौजूद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय जनता पार्टी की जिलाध्यक्ष अनीता त्रिपाठी ने की। शपथ ग्रहण से पहले तमाम वक्ताओं ने मंच से अपनी अपनी बात कही वक्ताओं ने नगर पंचायत के गांव में स्थित डाकखाने को बाजार में स्थापित करने की मांग की ऐसी ही नगर पंचायत में वक्ताओं नगरवासियों ने मांग की। इस दौरान मुख्यातिथि सुरेश राही ने नगर के विकास के लिए शांती देवी कुशवाहा और उनकी टीम को नगरवासियों के अनुसार जैसे जल निकासी नगर विकास पर ध्यान देने की बात कही जिससे आने वाले चुनाव में पार्टी के प्रति जनता जनार्दन सन्तुष्ट हो सके और भारतीय जनता पार्टी की 2024 में लोकसभा चुनाव में सरकार का गठन हो सके।कार्यक्रम का संचालन मिथलेश केसरवानी एवम कपूरचंद केसरवानी ने किया है अंत मे पार्टी की जिलाध्यक्ष अनीता त्रिपाठी ने कार्यक्रम मे उपस्थित सभी का आभार प्रकट किया है । कार्यक्रम के अंत मे नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि ओमप्रकाश कुशवाहा ने आये हुए अथितियों को अंगवस्त्र पहनाकर स्वागत किया। इस दौरान एडीएम जयचंद्र पाण्डेय, पूर्व विधायक शीतला प्रसाद पटेल,पूर्व विधयक संजय गुप्ता, पूर्व विधायक लालबहादुर,धर्म राज मौर्य,ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि सिराथू लवकुश मौर्य,डिस्ट्रिक्ट कॉपरेटिव बैंक अध्यक्ष शिव मोहन मौर्य, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष राजेश कुशवाहा, भाजपा नेत्री प्रतिभा कुशवाहा, शिव प्रताप मौर्य(रिंकू) नीतू कनौजिया, भाजपा नेता करन सिंह,प्रबल प्रताप सिंह उर्फ रामू सिंह, चुन्नू केसरवानी, गुड्डू दराना, संजय कबाड़ी, जेपी मौर्य,डॉ रमेश चन्द्र आचार्य, सोनू अग्रहरी,नानू रॉय,अनुज सोनी,रमेश चन्द्र केसरवानी , जगदीश केसरवानी, बबलू वर्मा, मज्जन अली सहित तमाम नगरवासी कार्यक्रम में उपस्थित रहे नगर पंचायत अझुवा क्षेत्र में पहुंचने पर अम्बर ढाबा के पास अच्छू भाई ने समर्थकों के साथ प्रभारी मंत्री सुरेश राही का स्वागत किया।

न्यूज झरोखा

खुली बैठक आयोजित करने के बाद स्थगित किए जाने से ग्रामीणों में आक्रोश

हर्रायपुर कौशांबी। मूरतगंज ब्लाक क्षेत्र के अंतर्गत आलम चंद में खुली बैठक का आयोजन किए जाने के बाद अचानक बैठक को स्थगित कर दिए जाने से ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त है और उन्होंने मामले की शिकायत अधिकारियों से की है खुली बैठक में सैकड़ों ग्रामीण मौजूद रहे मौके पर उपस्थित हुए पंचायत सचिव ने बिना किसी वजह के खुली बैठक को अचानक स्थगित कर दिया खुली बैठक में उपस्थित सैकड़ों ग्रामीणों से पंचायत सचिव ने कहा कि यह बैठक अबकी 3 जून को आयोजित की जाएगी बैठक अचानक स्थगित कर दिए जाने से ग्रामीणों ने नाराजगी जाहिर की अपना अमूल्य समय लेकर ग्रामीण खुली बैठक में उपस्थित हुए लेकिन बैठक स्थगित कर दिए जाने से ग्रामीण परेशान हुए समस्याओ का समाधान ना होने की वजह से ग्रामीणों का कहना है पंचायत सचिव मनमर्जी का मालिक हो गया है उसकी जब मर्जी हुई बैठक बुलाया जब मर्जी स्थगित कर दिया है बैठक स्थगित किए जाने के बाद ग्रामीणों ने आला अधिकारियों से शिकायत की है।

कोखराज थाना में आयोजित हुआ थाना समाधान दिवस

कोखराज कौशाम्बी। थाना समाधान दिवस के अवसर पर कोखराज थाना में फरियादियों की फरियाद को नायब तहसीलदार मोहित अहमद और एसओ कोखराज विनोद कुमार मौर्या ने संयुक्त रूप से सुना और फरियादियों की समस्याओं के समाधान के लिए अधीनस्थों को निर्देश दिया मौके पर 7 फरियादियों ने अपनी फरियाद अधिकारियों के सामने रखी जिसमें मौके पर 2 समस्याओं का निस्तारण मौके पर किया गया शेष शिकायतों को समय पर गुणवत्तापूर्ण निस्तारित करने का निर्देश अधीनस्थों को दिया गया मौके पर राकेश कुमार एस एस आई व लोकनाथ, अनिल अग्रहरि कानून गो, दिलीप द्विवेदी, मानसिंह, नरेंद्र सिंह, श्याम नारायण मिश्रा, शिवबाबू, आदि लोग उपस्थित रहे।

तहसीलदार दीपिका सिंह ने सुनी जन शिकायत

हर्रायपुर कौशांबी। थाना समाधान दिवस के अवसर पर थाना संदीपन घाट में चकबंदी नायब तहसीलदार अफजल अहमद वा तहसीलदार दीपिका सिंह ने आम जनमानस की जन समस्याओं को सुना और अधीनस्थों को समस्याओं के समाधान करने का निर्देश दिया इस मौके पर उपनिरीक्षक धीरेंद्र सिंह लेखपाल कुलदीप श्रीवास्तव, लक्ष्मी शंकर सूर्यनारायण, संतोष यादव, जितेन्द्र श्रीवास्तव चकबंदी लेखपाल सखाराम आदि लोग मौजूद रहे इस मौके पर चार शिकायती पत्र में एक शिकायत का मौके पर निस्तारण हुआ और तीन शिकायती पत्र को हल्का लेखपाल को देकर जांच कर निस्तारण करने का निर्देश दिया गया।

चेकिंग के दौरान की गई कार्यवाही

कौशाम्बी। जनपद में चलाये जा रहे से सम्बन्धित अभियान के क्रम में जनपद स्तर पर विभिन्नथानों व यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने वालों के विरुद्ध संघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिसमे नियमों का उल्लघन करने वाले 140 वाहनों का ई-चालान किया गया व एक वाहन से 500 रुपए सम्मन शुल्क वसूला गया तथा एक वाहन सीज किया गया।

वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना मझनपुर पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्त समर्थी लाल पुत्र जगपत लाल निवासी ओसा थाना मंझनपुर को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष और सदस्यों को एसडीएम ने दिलाई शपथ

नवनिर्वाचित अध्यक्ष शमशाद बख्श ने कहा कि नगर क्षेत्र का विकास करना उनकी पहली प्राथमिकता होगी

पद एवं गोपनीयता की शपथ लेते नगर पंचायत करारी अध्यक्ष शमशाद बख्श

पद एवं गोपनीयता की शपथ लेते नगर पंचायत करारी अध्यक्ष शमशाद बख्श

अखंड भारत संदेश

करारी कौशांबी। नगर पंचायत करारी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष शमशाद बक्श और सदस्यों को उप जिला अधिकारी मंझनपुर प्रखंड उत्तम ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई है शपथ ग्रहण के अवसर पर कार्यक्रम स्थल पर नगर क्षेत्र के लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा है और लोगों ने ताली बजाकर नवनिर्वाचित अध्यक्ष का स्वागत किया नवनिर्वाचित अध्यक्ष शमशाद बख्श ने पद एवं गोपनीयता की शपथ लेने के बाद कहा कि नगर क्षेत्र का विकास करना उनकी पहली प्राथमिकता होगी नगर के निवासियों को किसी प्रकार की दिक्कत नहीं होगी और हमेशा नगर के लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए उनका दरवाजा खुला रहेगा इस मौके पर नवनिर्वाचित अध्यक्ष शमशाद बख्श ने नगर के लोगों को आश्वस्त किया है कि नगर की मूलभूत समस्याओं का समाधान किया जाएगा और नगर के लोगों को कोई दिक्कत नहीं आने दी जाएगी शपथ ग्रहण के अवसर पर उपस्थित लोगों ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष शमशाद बक्श को माल्यार्पण कर जोरदार तरीके से स्वागत किया है इस मौके पर पूर्व चेयरमैन मौला बक्श पूर्व ब्लॉक प्रमुख हरी मोहन यादव डॉक्टर जाहिद रिजवी पूर्व ब्लाक प्रमुख शशिभूषण द्विवेदी उर्फ बालम महाराज सहित तमाम गणमान्य लोग शपथ ग्रहण कार्यक्रम में मौजूद रहे।

अध्यक्ष और सदस्यों को दिलाई गई शपथ

कौशांबी। नगर पालिका परिषद भरवारी नगर पालिका परिषद मंझनपुर नगर पंचायत पूरब पश्चिम शरीरा नगर पंचायत सिराथू नगर पंचायत दारा नगर कड़ा में भी नवनिर्वाचित अध्यक्ष और सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई । शपथ ग्रहण कार्यक्रम के दौरान प्रभारी मंत्री समेत तमाम गणमान्य लोग मौजूद रहे। नवनिर्वाचित अध्यक्ष और सदस्यों को माल्यार्पण कर ताली बजाकर कार्यक्रम स्थल पर मौजूद भीड़ ने उनका स्वागत किया।

समाजवादी पार्टी छोड़ने का शपथ ग्रहण के मंच से मौला बक्स ने किया ऐलान

करारी कौशाम्बी। जिले के कद्दावर नेता और समाजवादी पार्टी के उपाध्यक्ष मौला बक्स लगातार चार बार नगर पंचायत करारी से अध्यक्ष पद पर काबिज रहे इस बार समाजवादी पार्टी ने नगर पंचायत से अध्यक्ष पद का टिकट उन्हें नहीं दिया जिस पर उन्होंने अपने बेटे शमशाद अली को नगर पंचायत करारी अध्यक्ष का निर्दलीय चुनाव लड़ाया जनता ने मौला बख्श का साथ दिया और मौला बख्श के बेटे को नगर की जनता ने जीत का सेहरा पहना दिया शनिवार को शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित किया गया शपथ ग्रहण के बाद पूर्व चेयरमैन मौला बख्श ने खुलेआम घोषणा की है कि समाजवादी पार्टी से अब वह कोई रिश्ता नहीं रखना चाहते हैं किस राजनीतिक दल से रिश्ता जोड़ लेंगे इस बात का उन्होंने अभी खुलासा नहीं किया है लेकिन समाजवादी पार्टी से मौला बख्श के रिश्ते तोड़ देने के बाद समाजवादी पार्टी को एक बड़ा झटका लगा है और आने वाले दिनों में समाजवादी पार्टी को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा बताया जाता है कि बहुजन समाज पार्टी छोड़कर जब से इंद्रजीत सरोज पूर्व कबीना मंत्री समाजवादी पार्टी में शामिल हुए हैं समाजवादी पार्टी के पुराने कद्दावर निष्ठावान नेताओं की उपेक्षा होने लगी है बहुजन समाज पार्टी में इंद्रजीत सरोज के साथ रहे लोगों को अधिक तवज्जो दिया जाता है जिससे समाजवादी पार्टी के नेता अपने को ठगा महसूस कर रहे हैं।

नगर पंचायत के शपथ ग्रहण में खुले मंच से बीडीओ को मंत्री ने क्यों लगाई फटकार

कौशाम्बी। नगर पंचायत सिराथू सिराथू के अध्यक्ष व सभासदों के शपथ ग्रहण में पहुंचे प्रभारी मंत्री ने खुले मंच से आखिर खंड विकास अधिकारी को क्यों फटकार लगाई यह चर्चा का विषय बन गया है जबकि नगर पंचायत के शपथ ग्रहण में खंड विकास अधिकारी की कोई भूमिका नहीं थी फिर खंड विकास अधिकारी से प्रभारी मंत्री अचानक क्यों नाराज हो गए खंड विकास अधिकारी से प्रभारी मंत्री इतना नाराज हो गए कि उन्हें खुले मंच से फटकार लगानी पड़ी है इसके पीछे क्या बात हो सकती है इस बात को लेकर जन जन के बीच तेजी से चचाएँ हो रही है।

महिला के गले से मंगलसूत्र और फर्श झपट कर भागी महिला

कौशांबी। सराय अकिल थाना क्षेत्र के फकीराबाद चौराहा मोहल्ला निवासी सुनीता देवी पत्नी सुकूरू सरोज शुक्रवार के दिन अपने परिजनों के साथ किशुनपुर अंबारी गांव में मसुरिया माता का दर्शन करने गई थी मसुरिया माता के मंदिर में जैसे ही अंदर घुसी तो काफी भीड़ थी उसी भीड़ का फायदा उठाते हुए किसी महिला ने सुनीता देवी के गले से मंगलसूत्र और हाथ से पर्स को झपट कर भाग खड़ी हुई सुनीता देवी के अनुसार मंगलसूत्र सोने का था और पर्स में 11 सौ रुपए थे जिसे महिला लेकर भाग गई जानकारी होने पर सुनीता देवी के परिजनों ने महिला की खोजबीन की किंतु कोई पता नहीं चल सका शाम के समय घर लौट कर सुनीता देवी ने सराय अकिल थाने में अज्ञात महिला के विरुद्ध लिखित तहरीर दी लिखित तहरीर पर सराय अकिल पुलिस ने अज्ञात महिला के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर छानबीन में जुट गई है।

मैहर दर्शन गए परिजन घर से किशोरी गायब

कौशांबी। मंझनपुर थाना क्षेत्र के एक गांव के मंगलवार के दिन परिजन मैहर दर्शन करने के लिए चले गए थे लौटकर घर वापस आए तो किशोरी को घर में ना देख कर घर पर रहे लड़कों से पूछा तो लड़कों ने बताया कि किशोरी घर पर बिना बताए हुए कहीं चली गई है परिजनों ने किशोरी की खोजबीन की किंतु कोई पता नहीं चल सका परिजनों ने मंझनपुर थाने में किशोरी के गुमशुदगी की लिखित तहरीर दी लिखित तहरीर पाकर मंझनपुर पुलिस ने गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कर छानबीन में जुट गई है।

किशोरी को भगा ले जाने का मुकदमा दर्ज

कौशांबी। सराय अकिल थाना क्षेत्र के एक गांव में शुक्रवार के दिन सुबह लगभग 7:00 बजे गांव का ही युवक मोहित पुत्र सूबेदार कक्षा 10 की एक किशोरी को बहला-फुसलाकर साथ में लेकर गायब हो गया परिजनों ने किशोरी की काफी खोजबीन किया किंतु कहीं किशोरी का पता नहीं चल सका परिजनों ने आरोपी के विरुद्ध थाना में लिखित तहरीर दी लिखित तहरीर पाकर सराय अकिल पुलिस ने आरोपी के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर लिया है और किशोरी की छानबीन में जुट गई है।

1 जून को होगा स्वनिधि महोत्सव का नगर पालिका परिषद् मंझनपुर में आयोजन, स्ट्रीट वेंडर्स योजना का उठाएं लाभ

करारी कौशाम्बी। प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) योजना के शुभारम्भ दिनांक 01 जून 2020 के उपलक्ष्य में दिनांक 01 जून 2023 को नगर पालिका परिषद् मंझनपुर में एक दिवसीय स्वनिधि महोत्सव का आयोजन किया जायेंगा। यह जानकारी परियोजना अधिकारी डूडा मनीष यादव ने देते हुए बताया कि स्वनिधि योजना अन्तर्गत प्रथम/ द्वितीय/ तृतीय किश्त के आवेदन पत्र प्राप्त किये जायेंगे तथा आवेदन पत्रो को स्वीकृत कराकर ऋण वितरित करने के साथ ही इन-एक्टिव वेंडर्स को डिजिटली एक्टिव बनाने और कैशबैक के लाभ की जानकारी तथा अच्छी ऋण साख, डिजिटल लेन-देन का प्रयोग करने वाले वेंडर्स को सम्मानित किया जायेगा। परियोजना अधिकारी डूडा ने बताया कि वेंडर्स को डिजिटली एक्टिव बनाने में रूचि लेने वाले कर्मियों को भी सम्मानित किया जायेंगा। स्ट्रीट वेंडर्स व उनके परिवार के सदस्यों को भारत सरकार की 08 अन्य योजनाओं से लाभान्वित कराये जाने के लिए उनका रजिस्ट्रेशन व स्वास्थ्य परीक्षण के लिए चिकित्सा शिविर भी लगाया जायेंगा। सभी स्ट्रीट वेंडर्स अधिक से अधिक पहुँचकर योजना का लाभ उठाएं।

डीएम ने की जिला स्वास्थ्य समिति की समीक्षा बैठक

अखंड भारत संदेश

सभी प्रभारी चिकित्साधिकारी एवं स्टॉफ अपने तैनाती स्थल पर निवास करना सुनिश्चित करें

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने सम्बन्धित अधिकारियों के साथ मुख्य चिकित्साधिकारी सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की समीक्षा बैठक की। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि मुख्यमंत्री जी की मंशानुसार सभी प्रभारी चिकित्साधिकारी एवं स्टॉफ अपने तैनाती स्थल पर निवास करना सुनिश्चित करें, अन्यथा आपके विरूद्ध कार्यवाही की जायेंगी। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि आईजीआरएस के तहत प्राप्त शिकायतां का निस्तारण समयान्तर्गत एवं गुणवत्तापूर्ण सुनिश्चित किया जाय, कोई भी शिकायत डिफाल्टर न होने पाये। उन्हांने परिवार कल्याण कार्यक्रमों की समीक्षा के दौरान सभी प्रभारी चिकित्साधिकारी, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र को अपेक्षित प्रगति लाने के निर्देश दिए। उन्होंने जननी सुरक्षा योजना के तहत संस्थागत प्रसव में प्रगति लाने तथा जननी सुरक्षा योजना के तहत लाभार्थियों एवं आशाओं का भुगतान शत-प्रतिशत सुनिश्चित कराने के निर्देश दियें। उन्होंने मुख्य चिकित्साधिकारी से कहा कि जिन उप स्वास्थ्य केन्द्रों पर एएनएम का पद रिक्त है, उन सभी उप स्वास्थ्य केन्द्रों पर एएनएम की तैनाती सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने सभी प्रभारी चिकित्साधिकारियों से कहा कि कार्ययोजना बनाकर नियमित टीकाकरण में प्रगति लायी जाय तथा आरसीएच पोर्टल पर समय से फीडिंग सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने ई-कवच पोर्टल पर भी फीडिंग में प्रगति लाने के निर्देश दियें। उन्होंने जिला कार्यक्रम अधिकारी से कहा कि यह सुनिश्चित किया जाय कि ऑगनबाड़ी कार्यकत्रियों द्वारा लाभार्थियों को नियमित रूप से राशन का वितरण सुनिश्चित किया जाय। डीएम ने सभी प्रभारी चिकित्सा अधिकारियों से कहा कि कोल्ड चैन को मानक के अनुसार व्यवस्थित रखा जाय। उन्होंने सभी प्रभारी चिकित्साधिकारियों को आशाओं एवं एएनएम के साथ साप्ताहिक बैठक कर कार्यों में प्रगति लाने के निर्देश दियें। उन्होंने पीसीपीएनडीटी एक्ट के तहत नियमित रूप से अल्ट्रासाउण्ड सेन्टरों की जॉच करने के भी निर्देश दियें। बैठक में बताया गया कि राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत अप्रैल माह में 16 बच्चे जन्मजात दोष वाले चिन्हित किये गये, जिस पर जिलाधिकारी ने आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित कराने के निर्देश दियें। बैठक में बताया गया कि आयुष्मान भारत योजना के तहत अप्रैल माह में 29887 गोल्डेन कार्ड बनाये गये तथा अप्रैल माह तक कुल 270492 गोल्डेन कार्ड बनाये जा चुकें हैं, जिस पर जिलाधिकारी ने गोल्डेन कार्ड बनाये जाने के कार्य में और तेजी से प्रगति लाने के निर्देश दियें।

फर्जी निवास पर नगर पालिका के अध्यक्ष बने बीरेन्द्र फौजी

शपथ ग्रहण करते ही अध्यक्ष वीरेंद्र फौजी की बढ़ने लगी मुश्किलें निवास प्रमाण पत्र की जांच कराए जाने को लेकर उठी मांग

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद मंझनपुर से नवनिर्वाचित अध्यक्ष वीरेंद्र फौजी को फर्जी निवास प्रमाण पत्र जारी कर नगर का निवासी बनाने के मामले में इनके निवास प्रमाण पत्र की जांच करा कर इनका निर्वाचन रद्द किए जाने की मांग नगर क्षेत्र की जनता ने शुरू कर दिया है बीरेन्द्र फौजी का अभी शपथ ग्रहण ही हुआ है लेकिन नवनिर्वाचित नगर पालिका परिषद मंझनपुर के अध्यक्ष वीरेंद्र फौजी की मुसीबत बढ़ने लगी है इसके पूर्व बीते चुनाव में भी नगर पालिका परिषद मंझनपुर के अध्यक्ष महताब आलम के निर्वाचन को रद्द कराने के लिए नगर के लोगों ने एड़ी चोटी का जोर लगा दिया था अंततः महताब आलम का निर्वाचन रद्द हुआ और उन्हें नगरपालिका की कुर्सी छोड़नी पड़ी वीरेंद्र फौजी के फर्जी निवास को लेकर नगर के लोग एकजुट होने लगे हैं आने वाले दिनों में वीरेंद्र फौजी की भी मुसीबत बढ़ सकती है। बताते चलें कि वीरेंद्र फौजी नगर पालिका मंझनपुर क्षेत्र के बाहर गांव क्षेत्र के रहने वाले हैं और नगर पालिका परिषद मंझनपुर से उनका दूर-दूर का रिश्ता अभी तक नहीं रहा है बीते दिनों उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र का निवासी दशार्ते हुए अपनी पत्नी को मंझनपुर ब्लाक प्रमुख का चुनाव लड़ाया था हालांकि मंझनपुर ब्लॉक प्रमुख के चुनाव में उनकी पराजय हो गई लेकिन अचानक बीरेन्द्र फौजी नगर पालिका मंझनपुर के निवासी बन गए निवास प्रमाण पत्र जारी किए जाने के मामले में नियम कानून की खुलेआम धज्जियां उड़ाई गयी नियमों को ध्यान में रखकर बीरेन्द्र फौजी का निवास प्रमाण पत्र नहीं जारी किया गया बीरेन्द्र फौजी का फर्जी तरीके से निवास प्रमाण पत्र बनाए जाने के मामले में राजस्व कर्मियों की भूमिका भी सवालों के घेरे में है। नियम कानून की बात करें तो किसी व्यक्ति का नए क्षेत्र में 3 वर्षों तक निवास नहीं माना जाता है 3 वर्षों से कम समय से रहने वाले लोगों का निवास प्रमाण पत्र नहीं जारी किया जा सकता फिर ब्लॉक प्रमुख के चुनाव के बाद अचानक यह कैसे नगरपालिका मंझनपुर के निवासी बन गए हैं इनका नगरपालिका मंझनपुर क्षेत्र में फर्जी तरीके से कैसे निवास प्रमाणपत्र जारी कर दिया गया यह तमाम सवाल राजस्व कर्मियों की निष्ठा पर खड़े हो रहे हैं फर्जी निवास प्रमाण पत्र के सहारे नगर पालिका परिषद मंझनपुर के अध्यक्ष निर्वाचित हुए वीरेंद्र फौजी के निवास प्रमाण पत्र की जांच कराने की मांग नगर पालिका परिषद मंझनपुर क्षेत्र के लोगों ने शुरू कर दी है नगर के लोगों ने कहा कि यदि आला अधिकारियों ने वीरेंद्र फौजी के फर्जी निवास प्रमाणपत्र की जांच कराकर निवास प्रमाण पत्र रद्द करते हुए इनका निर्वाचन रद्द नहीं किया तो फर्जी निवास प्रमाण पत्र के सहारे नगर पालिका परिषद मंझनपुर के अध्यक्ष बने वीरेंद्र फौजी के निवास प्रमाण पत्र और निर्वाचन को रद्द करने की फरियाद अदालत से की जाएगी।

जिले में 20 हजार नशेड़ी पीते हैं गांजा

गांजा के अवैध कारोबार पर रोक लगाने पर आबकारी अधिकारी ने खड़े कर दिए हाथ!

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। गांजे का अवैध कारोबार कौशांबी की धरती में दिनों दिन बढ़ता जा रहा है योगी सरकार और पुलिस अधिकारियों के बार-बार संगठित अपराध पर रोक लगाने के आदेश के बाद भी कौशांबी जिले में गांजे के अवैध कारोबार पर रोक लगती नहीं दिख रही है आबकारी अधिकारी भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि अन्य नशे की तुलना में गांजा का नशा सस्ता पड़ता है जिससे गरीब लोग गांजा पीकर अपनी नशे की आदत की पूर्ति करते हैं बेबाक तरीके से आबकारी अधिकारी का मानना है कि जिले में लगभग 20 हजार लोग प्रतिदिन गांजा पीते हैं लेकिन जब उनसे इस बारे में सवाल किया गया कि इन्हें गांजा कौन देता है तो उन्होंने बेबाक तरीके से कहा कि सब कुछ खुलेआम दिखाई पड़ रहा है आप सब कुछ जानते हैं और इस सवाल के उत्तर पर वह मुस्कुराते हैं जिले में जिन्हें पहले भांग का ठेका दिया गया था बाद में उनके ठेके निरस्त हो गए हैं लेकिन इन बन्द ठेकों में भी गांजे की बिक्री बेखौफ तरीके से हो रही है आबकारी अधिकारी उनकी टीम पूर्व के भांग के ठेके में बिक रहे गांजे की बिक्री को नहीं रोक पा रहे हैं इसके अलावा भी कई दर्जन अन्य स्थानों पर बेखौफ तरीके से खुलेआम गांजे की बिक्री दुकान सजाकर हो रही है लेकिन उसके बाद आबकारी अधिकारी और उनकी टीम गांजे के अवैध कारोबार पर अंकुश लगाने में अपने को अक्षम असहाय महसूस कर रही है जिससे गांजे का व्यवसाय खुलेआम बेखौफ तरीके से कौशांबी की धरती पर तेजी से अपनी जड़े जमा चुका है गांजे के बदनाम धंधे से जुड़े लोग देखते-देखते मालामाल हो गए हैं करोड़ों में खेलने वाले गांजा माफिया अक्सर आबकारी अधिकारी के कार्यालय में गुफ्तगू करते देखे जाते हैं गांजा माफियाओं से आबकारी अधिकारी और उनके टीम के क्या रिश्ते हैं यह बड़ी जांच का विषय है लेकिन उसके बाद भी शासन प्रशासन ने गांजा माफियाओं से आबकारी अधिकारी और उनकी टीम के रिश्ते की जांच नहीं कराई है गांजा माफियाओं को बेनकाब करने की जरूरत है छोटे-छोटे मामले में पुलिस गांजा बरामद की कार्यवाही कर रही है लेकिन बड़े कारोबारी पर पुलिस प्रशासन और आबकारी विभाग का चाबुक चलता नहीं दिख रहा है जिससे गांजे के अवैध कारोबार में लगे गाँजा माफियाओं के कारनामों पर रोक लगती नहीं दिख रही है जो आबकारी विभाग के अफसर और उनकी टीम के निष्ठा पर बड़ा सवाल खड़ा कर रहा है जिले में तेजी से गांजा पीने के शौकीनों की बढ़ती संख्या चिंता का विषय है उससे बड़ी चिंता का विषय यह है कि आबकारी अधिकारी भी गांजा पीने वालों के आंकड़ों से बखूबी परिचित होने के बाद भी रोक लगाने को कतई तैयार नहीं है इलाके के लोगों ने शासन प्रशासन का ध्यान आकृष्ट कराते हुए अवैध तरीके से गांजे के कारोबार पर रोक लगाकर माफियाओं और आबकारी विभाग के रिश्ते को बेनकाब करने की मांग की है।

संपादकीय

2000 का नोट सबक सिखा गया सरकार को

जगदीश रत्तनानी

2000 रुपये के नोट को जारी करने और वापस लेने के फैसले से सबक सीखा जा सकता है। पहला यह है कि निर्णय का उद्देश्य तब खो जाता है जब इसके कारण होने वाली बाधाओं को हल करना मुश्किल होता है। यदि नीति काले धन को बाहर निकालने के लिए थी (जिनमें से कोई भी नहीं मिला) तो उच्च मुद्रा नोट की शुरूआत एक पाठ्यक्रम का विषय है कि काले धन और जमाखोरी को प्रोत्साहित करने के लिए क्या नहीं किया जाना चाहिए बुरी यादों के साथ जीना आसान नहीं होता है। विमुद्रीकरण ऐसी ही यादों में से एक है जो देश के दिलोदिमाग पर सरकार के एक ऐसे कदम के रूप में अंकित है जिसके कारण व्यापक व्यवधान व जनहानि हुई और भारतीय अर्थव्यवस्था पटरी से उतर गई। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि 2000 रुपये के नोट को बंद करने के फैसले से उस खतरनाक विमुद्रीकरण की बदसूरत याद ताजा हो जाती है जिसे पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने संगठित और वैध लूट कहा था। मोदी सरकार पर यह उनकी सबसे कठोर टिप्पणी थी। हर किसी को पता था कि नोटबंदी का यह भूत फिर सामने आयेगा। 2000 रुपये के नोट को बंद किए जाने से यह सामने आ गया है। भारतीय रिजर्व बैंक ने नोट की कानूनी वैधता जारी रखने की घोषणा के साथ प्रेस विज्ञप्ति, परिपत्र और इससे संबंधित बार-बार पूछे जाने वाले प्रश्नों (एफएक्यू) के जवाबों के साथ इसे खबरों में बनाये रखा। इस डर से कि इस निर्णय को गलत तरीके से समझा जाएगा, यह सावधानी और परिवर्तन जरूरी था। निश्चित रूप से इस बार यह विमुद्रीकरण का मामला नहीं है बल्कि 2000 रुपये के नोट के प्रचलन से योजनाबद्ध वापसी का मामला है जिसके चलते यह नोट वैध मुद्रा बना हुआ है। नागरिकों के पास 30 सितंबर, 2023 तक अपने खातों में नोट जमा करने या बैंक काउंटरों पर अन्य मूल्यवर्ग के नोटों के साथ इन्हें बदलने का समय है। हालांकि एक्सचेंज में थोड़ी कठिनाई है- बैंक शाखाओं के कामकाज में बाधा न पहुंचे इसलिए एक बार में केवल 20,000 रुपये तक के नोट जमा किए जा सकते है। केवाईसी मानदंडों के साथ नोट जमा के लिए कोई सीमा नहीं है। आरबीआई के शब्दों में कहा जाए तो जनता को होने वाली असुविधा को कम करने, परिचालन सुविधा सुनिश्चित करने तथा बैंक शाखाओं के नियमित कामकाज में व्यवधान से बचने के लिए सभी बैंक एक समय में 20,000 रुपये की सीमा तक 2000 रुपये के नोट बदल सकते हैं। इसे देखने का एक तरीका यह है कि आरबीआई एक व्यवस्थित विनिमय चाहता है जो विध्वंसक नहीं है। इसका दूसरा पक्ष यह है कि भारतीय बैंकिंग और शाखा संचालन को भारतीय नोटों के साथ बाधित करना काफी आसान प्रतीत होता है ! अपने अद्वितीय बैंगनी रंग के साथ 2000 रुपये का नोट कम से कम स्वतंत्र भारत के इतिहास में सबसे कम समय तक रहने वाले भारतीय मुद्रा नोट के रूप में जाना जाएगा। उच्च मूल्य वर्ग के नोट को वापस लेना सही दिशा में एक कदम है। उच्च मुद्रा नोट को भारतीय प्रणाली से लगभग सभी नकदी के (चलन से) बाहर निकलने के कारण उत्पन्न शून्य को भरने के लिए एक अति साहसिक उपाय के रूप में पेश किया गया था जो देश में तब तक (और अब भी कई हिस्सों में) नकदी के लेन-देन पर रहता है। फिर भी, यह शुरू में ही स्पष्ट हो गया था कि सिस्टम से काले धन को बाहर निकालने का नोटबंदी कार्यक्रम का एक कथित उद्देश्य उच्च मुद्रा नोट के जारी होने के साथ ही विफल हो गया था। जब नोट उच्च मूल्यवर्ग का होता है तो नकदी की जमाखोरी आसान होती है। नतीजतन, नकदी जमा करने के लिए हतोत्साहित करने के लिए यह होना चाहिए कि मुद्रा का बड़ा हिस्सा छोटे मूल्यवर्ग में होना चाहिए। विकसित दुनिया में उच्च मूल्य वर्ग के नोट जारी नहीं किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में फेडरल रिजर्व बोर्ड वर्तमान में 1, 2, 5, 10, 20, 50 और 100 डॉलर के मूल्यवर्ग में बैंक नोट जारी करता है। वहां उच्च मूल्यवर्ग का नोट आखिरी बार 1945 में मुद्रित किया गया था और 1969 में बंद कर दिया गया था। भारत में नोटबंदी की घोषणा 8 नवंबर, 2016 को की गई थी। मार्च, 2017 तक तत्कालीन नए पेश किए गए 2000 रुपये के बैंक नोट का हिस्सा, प्रचलन में रही मुद्रा के कुल मूल्य का 50 प्रतिशत से अधिक था लेकिन बाजार में प्रचलन में मुद्रा की कुल मात्रा का सिर्फ 3.3 फीसदी था। नकदी के भूखे देश की जमाखोरी की तत्काल आवश्यकता को 2000 के नोट ने पूरा किया। हालांकि समय के साथ नोट के सामान्य प्रवाह को एक योजनाबद्ध तरीके से कम कर दिया गया है जिसमें नोटों की संख्या में कमी आई है। 2018-19 में नोटों की छपाई बंद हो गई थी। उच्च वर्ग के नोट की वापसी का यह निर्णय समझदारी और जनहितैषी नीतियों का मामला रहा है। यह सरकार के कुछ अन्य नीतिगत उपायों की अचानक घोषणा के बिल्कुल विपरीत है, खासकर नोटबंदी और लॉकडाउन के संदर्भ में जब कोविड-19 का प्रकोप शुरू ही हुआ था। 2000 रुपये के नोट को जारी करने और वापस लेने के फैसले से सबक सीखा जा सकता है। पहला यह है कि निर्णय का उद्देश्य तब खो जाता है जब इसके कारण होने वाली बाधाओं को हल करना मुश्किल होता है। यदि नीति काले धन को बाहर निकालने के लिए थी (जिनमें से कोई भी नहीं मिला) तो उच्च मुद्रा नोट की शुरूआत एक पाठ्यक्रम का विषय है कि काले धन और जमाखोरी को प्रोत्साहित करने के लिए क्या नहीं किया जाना चाहिए लेकिन इसे केवल तात्कालिक दर्द को कम करने के लिए किया जाना चाहिए था। दूसरा यह कि सरकार यहां लोगों को अप्रत्याशित रूप से पकड़ने के लिए नहीं है। अप्रत्याशित तरीके से पकड़ने की नीति संकट पैदा करेगी। इससे यह लगता है कि लोग विरोधी हैं, अयोग्य और अनिच्छुक हैं या सामूहिक भलाई के लिए सहयोग करने के लिए तैयार नहीं हैं।

अखंड भारत के पक्षधर वीर सावरकर

अरविंद जयतिलक

आज भारत राष्ट्र के लिए गौरव का दिन है। आज देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नई संसद का उद्घाटन कर राष्ट्र को समर्पित करेंगे। स्वतंत्र भारत का यह निर्मित सर्वोच्च पंचायत भारतीय मूल्यों, प्रतिमानों के साथ लोकतंत्र और संविधान की सर्वोच्चता का उद्घोष है। आजादी के महानायकों के महानतम समर्पण, आकांक्षाओं और उच्च आदर्श भावों का प्रतिफल है। देश के एक सौ चालीस करोड़ लोगों की भावनाओं और भागीदारी की पूंजी है। सरकार बधाई की पात्र है कि उसने नई संसद का उद्घाटन आजादी के महान योद्धा वीर सावरकर की जयंती पर करने जा रही है। एक महान राष्ट्रभक्त के लिए इससे बड़ी श्रद्धांजलि नहीं हो सकती। वीर सावरकर जीवन भर अखंड भारत के पक्षधर रहे। 13 दिसंबर 1937 को नागपुर की एक जनसभा में उन्होंने अलग पाकिस्तान के लिए चल रहे प्रयासों को असफल करने की प्रेरणा दी और 15 अगस्त 1947 को भारतीय तिरंगा का ध्वजारोहण करते हुए कहा कि मुझे स्वराज प्राप्ति की खुशी है, किंतु वह खंडित है, इसका दुख है। उन्होंने कहा कि राज्य की सीमाएं, नदी तथा पहाड़ों या संधिपत्रों से निर्धारित नहीं होती, वे देश के नवयुवकों के शौर्य, धैर्य, त्याग एवं पराक्रम से निर्धारित होती है। वीर सावरकर ऐसे प्रथम राजनीतिक बंदी थे जिन्हें विदेशी भूमि (फ्रांस) पर बंदी बनाने के कारण हेग के अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में मामला पहुंचा। दुनिया के वे ऐसे पहले कवि थे जिन्होंने अंडमान के कठोर कारावास में जेल की दीवरों पर कील और कोयले से राष्ट्रवादी कविताएं लिखी। ब्रिटिश सरकार ने वीर सावरकर को क्रांति कार्यों के लिए दो-दो आजन्म कारावास की सजा दी, जो विश्व के इतिहास की पहली एवं अनोखी सजा थी। वे विश्व के पहले ऐसे लेखक थे जिनकी कृति द इंडियन वॉर आफॅ इंडिपेंडेस-1857 दो-दो देशों ने प्रकाशन से पहले ही प्रतिबंधित कर दिया। गौरतलब है कि जून 1908 में उनकी पुस्तक तैयार हो गयी किंतु मुद्रण की समस्या आ गयी। इसके लिए लंदन से लेकर पेरिस और जर्मनी तक प्रयास किए किंतु सभी प्रयास असफल रहे। बाद में यह पुस्तक किसी प्रकार गुप्त रुप से हालैंड से प्रकाशित हुई और इसकी प्रतियां फ्रांस पहुंचायी गयी। सावरकर पहले स्नातक थे जिनकी स्नातक की उपाधि को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण ब्रिटिश हुकूमत ने वापस ले लिया। वीर सावरकर पहले ऐसे भारतीय विद्यार्थी थे जिन्होंने इंग्लैंड के राजा के प्रति वफादारी की शपथ लेने से मना किया। नतीजा उनके वकालत करने पर रोक लगा दी गयी। वीर सावरकर ने राष्ट्रध्वज तिरंगे के बीच में धर्म चक्र लगाने का सर्वप्रथम सुझाव दिया जिसे डा0 राजेंद्र प्रसाद ने स्वीकार किया। उन्होंने ही सबसे पहले पूर्ण स्वतंत्रता को भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का लक्ष्य घोषित किया। 10 मई, 1907 को उन्होंने इंडिया हाउस लंदन में प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की स्वर्ण जयंती मनाई। इस अवसर पर उन्होंने अपने ओजस्वी भाषण में प्रमाणों सहित 1857 के स्वतंत्रता संग्राम को गदर नहीं, अपितु भारत के स्वातंत्रय का प्रथम संग्राम सिद्ध किया।

वीर सावरकर भारत ही नहीं बल्कि विश्व भर के क्रांतिकारियों में अद्वितीय थे। उनका नाम ही भारतीय क्रांतिकारियों के लिए संदेश था। उनकी पुस्तकें क्रांतिकारियों के लिए गीता समान थी। लंदन में रहते हुए उनकी मुलाकात क्रांतिकारी लाला हरदयाल से हुई जो उन दिनों इंडिया हाउस की देखरेख करते थे। 1 जुलाई, 1909 को मदनलाल ढ़ींगरा द्वारा विलियम हट कर्जन वायली को गोली मार दिए जाने के बाद उन्होंने लंदन टाइम्स में एक लेख भी लिखा जो क्रांतिकारिता से परिपूर्ण था। 13 मई 1910 को पेरिस से लंदन पहुंचने पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया परंतु 8 जुलाई 1910 को एसएस मोरिया नामक जहाज से भारत ले जाते समय सीवर होल के रास्ते निकल लिए। 24 दिसंबर 1910 को उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गयी। इसके बाद 31 जनवरी 1911 को इन्हें दोबारा आजीवन कारावास दिया गया। 1921 में मुक्त होने पर वह स्वदेश लौटे और फिर तीन साल जेल काटी। जेल में ही उन्होंने हिंदुत्व पर शोध ग्रंथ लिखा। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वे 1937 में अखिल भारतीय हिंदू महासभा के कर्णावती में हुए 19 वें सत्र के अध्यक्ष चुने गए।

15 अप्रैल 1938 को उन्हें मराठी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष चुना गया। 22 जून 1941 को उनकी मुलाकात सुभाषचंद्र बोस से हुई। 9 अक्टुबर 1942 को भारत की स्वतंत्रता के निवेदन सहित उन्होंने चर्चिल को तार भेजकर सूचित किया। दुर्भाग्य पूर्ण की आजादी के बाद भी कांग्रेस उनसे नफरत करती रही और नेहरु सरकार ने 5 फरवरी 1948 को उन्हें प्रिवेन्टिव डिटेन्शन एक्ट धारा के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिया। 4 अप्रैल 1950 को पाकिस्तानी प्रधानमंत्री लियाकत अली खान के भारत आगमन की पूर्व संध्या पर भी बेलगाम की जेल में उन्हें रोककर रखा गया। जुझारु तेवर और मातृभूमि के प्रति असीम श्रद्धा के कारण ही उन्हें वीर सावरकर कहा गया। नासिक जिले के कलेक्टर जैकसन की हत्या के लिए नासिक षड़यंत्र कांड के अंतर्गत उन्हें 7 अप्रैल 1911 को काला पानी की सजा पर सेलुलर जेल भेजा गया। उन्हें यहां कोल्हू में बैल की तरह जुत कर सरसों तथा नारियल आदि का तेल निकालना होता था। रुकने पर उनको कड़ी सजा व बेंत व कोड़ों से पिटायी की जाती थी।

इतने पर भी उन्हें भरपेट खाना नहीं दिया जाता था। वे 4 जुलाई 1911 से 21 मई 1921 तक पोर्ट ब्लेयर की जेल में रहे और भारत माता की आजादी का सपना देखते रहे। कुल मिलाकर वीर सावरकर 5585 दिन प्रत्यक्ष कारागार में और 4865 दिन नजरबंदी में रहे। दोनों को जोड़ दें तो वे 10410 दिन यानी 28 वर्ष 200 दिन तक जेल में रहे। वीर सावरकर स्वतंत्रता संग्राम के दौरान खिलाफत आंदोलन का विरोध किया और इसके घातक परिणामों की चेतावनी दी। इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि खिलाफत आंदोलन से ही पाकिस्तान नामक विष वृक्ष की नींव पड़ी।

आइए हम बताते हैं कि कांग्रेस समेत तथाकथित सेक्यूलर वीर सावरकर और उनकी विचारधारा का विरोध क्यों करते हैं। दरअसल सावरकर ने 1946 के अंतरिम चुनावों के दौरान देश के जनमानस को आगाह किया कि वह कांग्रेस को वोट न दे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को वोट देने का अर्थ है भारत विभाजन। सावरकर सच साबित हुए। कांग्रेस का सावरकर से नफरत का एक अन्य कारण यह भी है कि उन्होंने हिंदू राष्ट्र की उस विचारधारा को आगे बढ़ाने का काम किया जो सदियों से वसुधैव कुटुम्बकम की हिमायती है। कांग्रेस को इस बात से भी चिढ़ है कि वीर सावरकर ने हिंदू राष्ट्र के विजय के इतिहास को प्रमाणिक ढंग से लिपिबद्ध क्यों किया? याद होगा तीन वर्ष पूर्व 2019 में जब महाराष्ट्र चुनाव के लिए भाजपा के संकल्प पत्र में स्वतंत्रता सेनानी विनायक दामोदर सावरकर को भारत रत्न देने का वादा किया गय तब कांग्रेसी नेता दिग्विजय सिंह समेत कई लोगों ने सावरकर को महात्मा गांधी की हत्या का साजिशकर्ता करार दिया। गत वर्ष पहले सावरकर के शहीदी दिवस के दिन कांग्रेस पार्टी ने ट्वीट के जरिए जारी एक तस्वीर में स्वंतत्रता सेनानी वीर सावरकर को गद्दार बताकर उनकी राष्ट्रभक्ति का अपमान किया। तब कांग्रेस ने जारी तस्वीर के हवाले उन्हें गद्दार बताते हुए 1913 में अंडमान स्थित सेल्यूलर जेल से उनकी एक तथाकथित चिट्ठी का भी जिक्र किया था जिसमें उन्होंने ब्रिटिश सरकार से रिहाई की मांग की थी। बेहतर होता कि कांग्रेस वीर सावरकर की शहादत को लांक्षित करने के बजाए उनका इतिहासपरक मूल्यांकन करती। कांग्रेस का ऐसा अपमानजनक आचरण तब है जब पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा वीर सावरकर के सम्मान में डाक टिकट जारी किया जा चुका है। उचित होगा कि कांग्रेस वामपंथी इतिहासकारों की सांप्रदायिक लेखनी और जुगाली पर भरोसा के बजाए द इंडियन वॉर आफॅ इंडिपेंडेस-1857 जो कि खुद सावरकर द्वारा लिखित है, से उनके विचारों और खोजपूर्ण इतिहास का अध्ययन करती। कांग्रेस को याद रखना चाहिए कि जिस 1857 की क्रांति को वह सिपाही विद्रोह या अधिकतम भारतीय विद्रोह करार दी और अधिकांश वामपंथी इतिहासकारों ने उसे ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह माना उस क्रांति को वीर सावरकर ने प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम कहा।

दिल्ली सरकार की शक्तियों पर अध्यादेश संघवाद पर हमला

प्रकाश कारात

सर्वोच्च न्यायालय ने लोकतांत्रिक प्रतिनिधि सरकार के सिद्धांत के तहत चुनी हुई सरकार के प्रति प्रशासनिक अधिकारियों की जवाबदेही और संघीय सिद्धांत के पालन को बरकरार रखा। परन्तु मोदी सरकार के वर्तमान अध्यादेश के सत्तावादी कदम से यह सब खारिज हो जाता है। अदालत की जानबूझ कर की गई ऐसी अवज्ञा से मोदी सरकार ने लोकतंत्र और संघवाद के प्रति अपनी अवमानना की घोषणा की है। एक निर्लज्ज अधिनायकवादी चाल के तहत मोदी सरकार ने दिल्ली सरकार के अधिकार क्षेत्र में आने वाले प्रशासनिक अधिकारियों पर दिल्ली सरकार का ही नियंत्रण स्थापित करने वाले सर्वोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक फैसले को प्रभावहीन करने के लिए एक अध्यादेश जारी किया है। यह अध्यादेश अधिकारियों के पदस्थापन और स्थानांतरण पर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के तहत दिल्ली सरकार के नियंत्रण को पुनः दिल्ली के उपराज्यपाल(लेफ्टिनेंट गवर्नर) को वापस देता है और इस प्रकार प्रकारान्तर से दिल्ली की निर्वाचित सरकार के स्थान पर केंद्र सरकार का ही नियंत्रण स्थापित करता है। यह अध्यादेश के तहत एक राष्ट्रीय राजधानी सिविल सेवा प्राधिकरण का गठन करके किया जा रहा है जो दिल्ली में प्रशासनिक अधिकारियों के स्थानांतरण और नियुक्ति की सिफारिश करेगा। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र नागरिक सेवा प्राधिकरण में मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव और प्रमुख सचिव शामिल होंगे। चूंकि फैसले बहुमत से तय किये जाएंगे, इसलिए केंद्र द्वारा नियुक्त दो नौकरशाह निर्वाचित मुख्यमंत्री के निर्णय को बहुमत से पलट सकते हैं। इसके अलावा, उपराज्यपाल और प्राधिकरण के बीच मतभेद के मामले में उपराज्यपाल का निर्णय अंतिम होगा, जैसा कि अध्यादेश में कहा गया है। इस अध्यादेश से केंद्र सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के फैसले की अवहेलना की है और संविधान की व्याख्या करने के अदालत के अधिकार को चुनौती दी है। मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने दिल्ली में एक निर्वाचित सरकार के अधिकारों और शक्तियों पर हाल ही में एक सर्वसम्मत और सुविचारित निर्णय दिया था। निर्णय में स्पष्ट रूप से कहा गया था कि लोकतंत्र और संघवाद के सिद्धांत हमारे संविधान की आवश्यक विशेषताएं हैं और मूल संरचना का एक हिस्सा हैं। इसने यह भी कहा कि, यदि एक लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई सरकार को अपने अधिकार क्षेत्र में तैनात अधिकारियों को नियंत्रित करने की शक्ति प्रदान नहीं की जाती है, तो सामूहिक जिम्मेदारी की ट्रिपल श्रृंखला में अंतर्निहित सिद्धांत बेमानी हो जायेगा। केंद्र के इस तर्क को खारिज करते हुए कि दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी है, प्रशासनिक सेवाओं को उसके अधिकार क्षेत्र में रहना चाहिए, सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय निर्वाचित सरकार को उन सभी क्षेत्रों में अधिकारियों से निपटने की शक्ति देता है, सार्वजनिक लोक व्यवस्था, पुलिस व्यवस्था और भूमि जैसे विभागों को छोड़कर। इन तीनों विभागों को छोड़कर सभी विभाग विधानसभा और दिल्ली सरकार के अंतर्गत आते हैं जैसा कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली अधिनियम के तहत प्रावधान है।

सर्वोच्च न्यायालय ने लोकतांत्रिक प्रतिनिधि सरकार के सिद्धांत के तहत चुनी हुई सरकार के प्रति प्रशासनिक अधिकारियों की जवाबदेही और संघीय सिद्धांत के पालन को बरकरार रखा। परन्तु मोदी सरकार के वर्तमान अध्यादेश के सत्तावादी कदम से यह सब खारिज हो जाता है। अदालत की जानबूझ कर की गई ऐसी अवज्ञा से मोदी सरकार ने लोकतंत्र और संघवाद के प्रति अपनी अवमानना की घोषणा की है। अपने पूरे नौ साल के कार्यकाल के दौरान, मोदी सरकार निर्वाचित गैर-भाजपा राज्य सरकारों के अधिकारों पर हमला करती रही है और संघीय सिद्धांत का उल्लंघन करने के लिए राज्यपाल जैसे संवैधानिक पदों पर आसीन लोगों का गलत इस्तेमाल करती रही है। इसने जम्मू और कश्मीर राज्य को विघटित करके और इसे दो केंद्र शासित प्रदेशों में परिवर्तित करके संवैधानिक ढांचे पर हमले का गंभीर अनुपात ग्रहण किया। यह अध्यादेश एक निर्वाचित सरकार के अशक्तिकरण को वैध बनाकर लोकतांत्रिक संघवाद पर हमले को एक नये स्तर पर ले जाता है। सर्वोच्च न्यायालय को संविधान के संरक्षक के रूप में इस कठोर उपाय को रद्द करने के लिए कदम उठाना होगा। राजनीतिक स्तर पर, समूचे विपक्ष को एकजुट होकर अध्यादेश का विरोध करना चाहिए, जब मोदी सरकार इसे विधेयक के रूप में संसद में पेश कर उसे पारित कराकर कानून बनाने की कोशिश करेगी। इस एकजुट विरोध के संदर्भ में कांग्रेस पार्टी को अपने रुख के बारे में संदेहास्पद स्थिति को दूर करना चाहिए। अरविंद केजरीवाल और आप के प्रति शत्रुता इसकी स्थिति निर्धारित नहीं कर सकती है। यह किसी एक नेता या किसी एक पार्टी के बारे में नहीं है- यह लोकतंत्र और संघवाद पर एक बुनियादी हमला है। अध्यादेश का विरोध करने के लिए विपक्षी पार्टियां कितनी एकजुट होकर आगे बढ़ती हैं, इससे भाजपा के खिलाफ बड़ी लड़ाई के लिए एकता बनाने की एकता पर असर पड़ेगा।

जो गीत दिलों में कत्ल हुए हर गीत का बदला मांगेंगे

वर्षा भम्भाणी मिर्जा

आखिर क्यों ये सरकार देश के भीतर अक्सर देशवासियों से ही उलझती और भिड़ती देखी जाती है। शाहीन बाग, किसान आंदोलन और अब जंतर-मंतर पर एक महीने से न्याय मांग रही इन लड़कियों की शिकायत पर क्यों कोई कार्रवाई नहीं हो रही है? क्या केंद्र यही चाहता है कि ये लड़कियां हताश होकर अपनी अंधेरी और अत्याचार की दुनिया में लौट जाएं और फिर कोई बच्ची पहलवानी का जुनून लेकर अपने गांव से न चले? अच्छा है कि ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज ने हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बॉस कहा और यह भी अच्छा है कि अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने उनसे ऑटोग्राफ लेने की ख्वाहिश की। कोई उनके पैर छूने को ही लालायित है। सच तो यह है कि भारत की जनता भी उनसे कुछ उम्मीद रखती है। उन्हें यही कहना चाहती है या शायद कहती भी रही है लेकिन अक्सर देखा जाता है कि वे सरकार में मिलकर जनता के हित साधने में चूक कर जाते हैं। किसी भी लोकतंत्र में सरकार के मायने क्या होते हैं? यही कि उसके फैसलों से उसके नागरिकों की जिंदगी आसान हो, उनकी तकलीफों की सुनवाई हो, वे सुरक्षित हों लेकिन क्या ऐसा है? तो फिर जंतर-मंतर पर देश के लिए मैडल लाने वाली पहलवानों की तकलीफ पर कोई क्यों कान नहीं धरता? दिल्ली पर जनता के विरुद्ध क्यों अध्यादेश आता है? और मणिपुर में 75 लोगों के प्राण जाने के बाद हिंसा का दोबारा भड़कना क्यों होता है? क्यों ऐसा होता है कि केंद्र की सरकार जिसका बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ में गहरा यकीन है वह महिला पहलवानों की पीड़ा को यूं अनदेखा कर देता है? सबका साथ सबका विकास कहते-कहते मणिपुर में क्यों ऐसा फैसला लिया कि वह हिंसा की आग में जलने लगा? न्यूनतम सरकार और अधिकतम शासन का भी नारा तो दिया लेकिन दिल्ली राज्य पर अपनी सरकार का कब्जा सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बावजूद क्यों नहीं हटाया? विदेशों में बसे भारतीय अपने मेहमान प्रधानमंत्री के लिए पलकें बिछाए हुए रहते हैं। यह स्वाभाविक भी है और फिर भाजपा ने इसे बड़े इवेंट्स में तब्दील करने में कोई कसर भी नहीं छोड़ी है। खूब खर्च किया जाता है और फिर भारतीय मीडिया इसे दिखा-दिखाकर जनता के बीच अच्छी छवि गढ़ने के काम में जुट जाता है। अभी हाल ही में एनडीटीवी की एक पत्रकार पर ऐसा ही दबाव था जिसके चलते उन्हें इस्तीफा देना पड़ा। बेशक, नेता का सम्मान होता है क्योंकि उसका देश उसे यह शक्ति देता है। देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू का भी होता था और डॉक्टर मनमोहन सिंह का भी, जिनके लिए तो अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने यहां तक कहा था कि उनका होना दुनिया के लिए फख्र की बात है। लिहाजा उनका पूरा ध्यान रखा जाए। यह सब अच्छा लगता है, लेकिन बात फिर वहीं लौटती है कि देश की जनता को क्यों भुला दिया जाता है। मुल्क में इन दिनों जो निर्णय लिए गए हैं उन पर भी गौर करने की जरूरत है, विचार की जरूरत है, बहस की जरूरत है। विदेश के लाल और खूबसूरत कालीन के नीचे इन फैसलों के कागजात दब नहीं जाने चाहिए। जंतर-मंतर पर पहलवानों का धरना, मणिपुर का धधकना, दिल्ली का अध्यादेश ऐसे तीन मुद्दे हैं जो देश में इस समय सुलग रहे हैं । सितंबर में एशियाई खेल होने हैं। धरने पर बैठी विनेश फोगाट खुद 2018 में एशियाड में स्वर्ण पदक जीत चुकी हैं। इस बार भी पहलवानों को तैयारी करनी है लेकिन वे आत्मसम्मान और स्वाभिमान की लड़ाई लड़ रही हैं। मैट पर अपने विरोधी खिलाड़ी से दो-दो हाथ करने की बजाय उन्हें सरकार से लड़ना पड़ रहा है। विनेश फोगाट अपने एक लेख में लिखती हैं-सच है कि हमें देश के लिए और मेडल लेने हैं लेकिन ये लड़ाई बड़ी है। उन पदकों का गले में होने का क्या मान जब आप अपने लिए ही न्याय की लड़ाई नहीं लड़ सकते। दिन ढलते ही मच्छरों का हमला होता है और सड़कों पर दौड़ने वाले कुत्ते आसपास आ जाते हैं।

सबसे बड़ी समस्या होती है साफ टॉयलेट्स

केजरीवाल को मिलेगा कांग्रेस का साथ

डॉ. आशीष

जब बात अपनी सरकार पर आ गई तो दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविदं केजरीवाल उन सभी से हाथ मिलाने, गले मिलने और साथ चलने को तैयार हैं, जिन्हें वो किसी समय गर्म पानी पी-पीकर कोसा करते थे। केजरीवाल का यह दोहरा चरित्र देशवासियों के लिए हैरानी की बात भी नहीं है। कई अवसरों पर उनका दोहरा चरित्र और मापदण्ड उजागर हो चुके हैं। ताजा मामला केंद्र और दिल्ली सरकार के मध्य शक्तियों के बंटवारे को लेकर है। इसीलिए केजरीवाल इस समय विभिन्न प्रदेशों का दौरा कर रहे हैं। इसका उद्देश्य अपनी पार्टी का प्रचार करना नहीं अपितु केंद्र सरकार द्वारा जारी उस अध्यादेश के विरुद्ध विपक्षी दलों का समर्थन जुटाना है जिसके द्वारा उसने दिल्ली में अधिकारियों के ट्रांसफर-पोस्टिंग के अधिकार निर्वाचित सरकार से छीनकर फिर से उपराज्यपाल को सौंप दिये हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने दिल्ली सरकार की याचिका पर यह निर्णय दिया था कि नौकरशाहों के तबादले और पदस्थापना का अधिकार चुनी हुई सरकार को ही होना चाहिए, अन्यथा वह सुचारू तरीके से काम नहीं कर सकेगी। उस निर्णय से उत्साहित केजरीवाल सरकार ने विजयी मुद्रा में ताबड़तोड़ स्थानांतरण करने आरंभ कर दिए। लेकिन इसी बीच केंद्र सरकार ने अध्यादेश निकालकर उस निर्णय को उलट दिया। इसी के साथ उसने सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के विरूद्ध अपील भी प्रस्तुत कर दी है। दूसरी तरफ दिल्ली सरकार ने अध्यादेश को सर्वोच्च न्यायालय में याचिका के जरिये चुनौती दे डाली। देश के सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष भी दुविधा की स्थिति है क्योंकि उसके अपने निर्णय के विरुद्ध अपील पेश करने वाली केंद्र सरकार ने अध्यादेश निकालकर उस निर्णय को वर्तमान में तो प्रभावहीन कर ही दिया। संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार छः माह के भीतर अध्यादेश को संसद के दोनों सदनों की स्वकृति मिलनी अनिवार्य है। और इसीलिए केजरीवाल विपक्षी दलों के नेताओं से मेल-मुलाकात करके इस बात का निवेदन कर रह हैं कि जब उक्त अध्यादेश संसद के मानसून सत्र में विधेयक के तौर पर पेश हो तब उच्च सदन अर्थात राज्यसभा में सभी भाजपा विरोधी दल उसका विरोध करें जिससे वह पारित न हो सके।

हाईवे पर सांड से भिडन्त में बाइक सवार दम्पति की मौत, मासूम घायल, परिजनों में मचा हाहाकार

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। झांसी-मिजार्पुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर बाइक सवार अचानक सडक पर आये सांड से टकरा गये। इससे बाइक सवार पति-पत्नी की मृत्यु हो गई, जबकि दो साल का मासूम बालक मामूली रूप से घायल हो गया। पुलिस ने एम्बुलेंस की मदद से बालक को जिला अस्पताल में भर्ती कराया। घटना के दौरान सांड की भी मौत हो गई है।

ये हादसा शिवरामपुर पुलिस चैकी क्षेत्र में शनिवार को हुआ। बताया गया कि सतना मप्र के बरौंधा क्षेत्र का विजय कुमार अपनी पत्नी संगीता व बच्चे गोलू के साथ बाइक से ससुराल भरतकूप आया था। देर रात वह बाइक से पत्नी व बच्चे को लेकर घर जा रहा था। शिवरामपुर चैकी प्रभारी रजोल नागर ने बताया कि हाइवे शिवरामपुर कस्बे के पास पहुंचते ही अचानक सडक किनारे तेज रफ्तार से सांड आ गया। सांड से बाइक की टक्कर में पति-पत्नी छिटककर सडक पर जा गिरे और लहूलुहान हो गए।

बालक छिटककर सडक किनारे मिटटी में गिरा। इससे बालक मामूली रूप से घायल हो गया। टक्कर इतनी जोरदार थी कि सांड की भी मौत हो गई। 108 एम्बुलेंस से तीनों को जिला अस्पताल भेजा गया। डॉक्टरों ने दम्पति को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मृतक के मोबाइल से परिजनों को जानकारी दी। परिजनों में हाहाकार मचा है। घायल बालक की हालत खतरे से बाहर है।

लाडली कन्या का मनाया जन्मोत्सव

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। दो सौ बेड एमसीएच विंग खोह के अस्पताल में लाडली कन्या जन्मोत्सव मनाया गया। नवजात कन्या का जन्मोत्सव धूमधाम से डॉक्टरों ने मनाया।

शनिवार को खोह स्थित अस्पताल में लाडली कन्या जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ ओपी भास्कर, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ एमके जतारिया, वरिष्ठ परामर्शदाता डॉ उषा सिंह, प्रोबेशन अधिकारी रामबाबू विश्वकर्मा, जिला कार्यक्रम प्रबंधक आरके करवरिया, जिला मातृ स्वास्थ्य परामर्शदाता अरुण कुमार व वन स्टॉप से श्रीमती प्रीती व अन्य कर्मी मौजूद रहे।

ज्ञात है कि दो सौ बेड के खोह स्थित अस्पताल में जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द के निर्देश पर प्रसूता महिलाओं के प्रसव होने लगे हैं। उनके निर्देश पर खोह स्थित अस्पताल में स्टाफ की तैनाती कर अस्पताल का संचालन शुरू करा दिया गया है।

उद्यमी लाभ पाने को करायें पंजीयन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। उप आयुक्त उद्योग एसके केशरवानी ने जिले के उद्यमियों/व्यापारियों/हस्तशिल्पियों से कहा है कि उद्योग/उद्यम/व्यापार/हस्तशिल्प से जुड़े कार्य को एक जून से 15 जून तक यूआरसी (उद्यम रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र) पंजीयन अभियान चलाया जा रहा है।

शनिवार को उन्होंने बताया कि पंजीयन अभियान सहज जनसेवा केन्द्र के माध्यम से वेबसाइट पर खुद कर सकते हैं। पंजीयन के समय आधार, पैन, बैंक एकाउण्ट नं, उद्यम की लागत एवं रोजगार की संख्या के साथ आवेदन कर सकते है। उद्यम रजिस्ट्रेशन प्राप्त इकाईयों को फैसिलिटेशन काउसिंल से विवादों के निस्तारण, विभिन्न टेण्डरों में ईएमडी से छूट, बैंकों से विभिन्न योजनाओं में वरीयता आदि की सुविधा मिलेगी। शासन से शीघ्र सूक्ष्म उद्यमियों को दुर्घटना के कारण बीमा की सुविधा दी जायेगी। अधिक जानकारी के लिए किसी भी कार्य दिवस में कार्यालय में सम्पर्क कर सकते है।

एएसपी ने मऊ थाने में फरियादियों की सुनी समस्यायें

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी की अध्यक्षता में थाना मऊ में थाना समाधान दिवस में फरियादियों की शिकायतों को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को निस्तारण के निर्देश दिये।

शनिवार को एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी के समक्ष भूमि विवाद से सम्बन्धित मामला आया। उन्होंने राजस्व व पुलिस विभाग की संयुक्त टीम को मौके पर भेजकर निस्तारण कराने के निर्देश दिये। थाना समाधान दिवस में प्रभारी निरीक्षक थाना मऊ राजीव कुमार सिंह, अपराध निरीक्षक अभयराज प्रताप सिंह एवं अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

बहिलपुरवा पुलिस ने तीन गौ तस्करों को दबोचा, 40 गौवंश बरामद

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अपराधियों के खिलाफ जारी कार्यवाही के क्रम में एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी एवं सीओ सिटी हर्ष पांडेय की देखरेख में प्रभारी निरीक्षक बहिलपुरवा गुलाबचंद सोनकर की टीम ने तीन अंतर प्रान्तीय तस्करों को 40 गौवंशों समेत गिरफ्तार किया है। शनिवार को प्रभारी निरीक्षक बहिलपुरवा की टीम को मुखबिर से सूचना मिली कि ओहन बांध के पास जंगल से सेमरदहा से तीन लोग को गौतस्करी को 40 गौवंशों को ले जा रहे हैं। पुलिस ने तत्काल पहुंचकर तस्करों को गिरफ्तार किया। पूंछताछ में नाम-पता जेशा नायक पुत्र खेमा नायक निवासी पोगरी थाना सुहागपुर जिला शहडोल मप्र, तेजा नायक पुत्र प्रेमा नायक निवासी घाटा जिला अनूपपुर मप्र व राजेश पुत्र दुखवा कोल निवासी पोगरी थाना सुहागपुर जिला शहडोल मप्र बताया। इन्होंने बताया कि वे गौवंशों को वध की गरज से मप्र सीमा तक पैदल जंगल के रास्ते ले जाते हैं। मप्र की सीमा आते ही गौवंशों को ट्रक में लादकर शहडोल ले जाते हैं। पूंछताछ में बताया कि ये कार्य बहुत दिनों से कर रहे हैं। थाना बहिलपुरवा में तीनों के खिलाफ गौवध निवारण अधिनियम एवं पशु क्रूरता अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया।

नगर के विकास को नरेन्द्र, संजीव, अमित व रानी ने लिया संकल्प

चारों निकायों के अध्यक्षों ने ग्रहण की शपथ

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले की चारों निकाय सीटों पर नवनिर्वाचित अध्यक्षों व वार्ड मेम्बरों को जिलाधिकारी से नामित अपर जिलाधिकारी एवं उपजिलाधिकारियों ने पद व गोपनीयता की शपथ ग्रहण कराई।

शनिवार को छिटपुट आसमान में छायी बदली के बीच पुरानी कोतवाली परिसर में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में कर्वी नगर पालिका अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए नरेन्द्र गुप्ता व 25 वार्डों के मेम्बरों को एडीएम कुंवर बहादुर सिंह ने जलशक्ति मंत्री रामकेश निषाद व भाजपा जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे, जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव की मौजूदगी में पद व गोपनीयता की शपथ ग्रहण कराई। शपथ होते ही तालियों की गड़गड़ाहट से समारोह स्थल गूंज उठा। शपथ ग्रहण के बाद अध्यक्ष नरेन्द्र गुप्ता ने कहा कि क्षेत्र को पौराणिक व पर्यटन की दृष्टि से विकसित कराने को केन्द्र व राज्य सरकार से विशेष पहल करायेंगे। नगर की सड़क, सफाई, प्रकाश व्यवस्था परिवर्तन कर दुरुस्त कराई जायेगी। धर्मनगरी में श्रद्धालुओं को आकर्षित करने व पौराणिक स्वरूप बनाये रखने को वार्ड सदस्यों, राजनैतिक दलों व समाजसेवियों से मिलकर कार्य किये जायेंगे। सभी वार्डों की बस्तियों में समानरूप से विकास कराया जायेगा। इस मौके पर पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र समेत तमाम भाजपाई मौजूद रहे।

इसी क्रम में राजापुर नगर पंचायत अध्यक्ष संजीव मिश्र व वार्ड मेम्बरों को एसडीएम प्रमोद कुमार झां ने पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस मौके पर अध्यक्ष संजीव मिश्र ने कहा कि संत तुलसी की जन्म स्थली का चहुंमुखी विकास कराने में कोई कोर कसर नहीं बाकी रखेंगे। इस मौके पर पूर्व विधायक आनन्द शुक्ला, पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र, मेजा विधायक श्रीमती नीलम करवरिया आदि मौजूद रहे।

मानिकपुर नगर पंचायत अध्यक्ष रानी कोल व वार्ड मेम्बरों को एसडीएम प्रमेश कुमार श्रीवास्तव ने पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस मौके पर मानिकपुर विधायक अविनाशचन्द्र द्विवेदी, पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष विनोद द्विवेदी समेत गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

मऊ कस्बे के नवसृजित नगर पंचायत में पुरुषोत्तम इंटर कॉलेज में भाजपा से निर्वाचित अध्यक्ष अमित द्विवेदी एवं सभासदों के शपथ ग्रहण में बतौर मुख्य अतिथि सांसद आरके पटेल व मऊ विधायक अविनाश चंद्र द्विवेदी की मौजदूगी में उपजिलाधिकारी नवदीप शुक्ला ने अध्यक्ष व 14 सभासदों को शपथ दिलाई। विधायक अविनाश चंद्र द्विवेदी ने कहा कि वह मऊ में रहते हैं। नगर पंचायत की जनता ने अमित द्विवेदी को जिताया है। उनकी भी जिम्मेदारी है कि सबको न्याय व योजना का लाभ पारदर्शिता से दिला सकें। शपथ ग्रहण समारोह में भाजपा के पदाधिकारी व कार्यकर्ता शामिल रहे।

साइबर टीम ने चार पीडितों के एक लाख 68 हजार 919 रुपये कराये वापस

एसपी ने की साइबर सेल की सराहना

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। बढ़ते साइबर अपराध रोकने व आमजनता को राहत दिलाने की गरज से जारी अभियान में पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी की देखरेख में साइबर सेल प्रभारी निरीक्षक विजय सिंह की टीम ने साइबर अपराध के चार पीड़ितों के एक लाख 68 हजार 919 रुपए उनके खातों में वापस कराये हैं।

शनिवार को राजापुर थाने के बरद्वारा गांव के सचिन कुमार ने शिकायत की थी कि अज्ञात लोगों ने उनके खाते से धोखाधड़ी कर 59 हजार रुपये निकाल लिये हैं। बरगढ थाने के आलोक कुमार द्विवेदी के भी अज्ञात लोगों ने खाते से धोखाधड़ी कर 46048 रुपये निकाल लिये थे। कोतवाली कर्वी के इटरौर भीखमपुर गांव के शिवमूरत के भी खाते से अज्ञात

लोगों ने धोखाधड़ी कर 48851 रुपये निकाल लिये थे।

इसी तरह कोतवाली कर्वी के बंशगोपाल केशरवानी ने भी शिकायत की थी कि अज्ञात लोगों ने उनके खाते से धोखाधड़ी कर 15 हजार रुपये निकाल लिये थे। साइबर सेल ने प्रयास कर चारों पीडितों को शत-प्रतिशत धनराशि उनके खातों में वापस कराई है।

पुलिस अधीक्षक वृन्दा शुक्ला ने साइबर सेल प्रभारी निरीक्षक विजय सिंह, सिपाही सर्वेश कुमार, सिपाही हरिशचन्द्र, सिपाही प्रशांत कुमार के कार्यों की सराहना की है। साइबर सेल प्रभारी ने जनता से अपील की है कि गूगल पर किसी भी कम्पनी या बैंक का कस्टमर केयर नम्बर ढूंढने में बेहद सावधानी बरते। प्राप्त नम्बरो पर पूरी तरह भरोसा न करें। अपनी व्यक्तिगत व बैंकिग सम्बन्धी जानकारी किसी से भी साझा न करें। एनीडेस्क, टीम व्यूअर आदि रिमोट एक्सेस साफ्टवेयर का प्रयोग बेहद सावधानी से करे। इससे साइबर अपराधियों को आपके खाते तक पहुंचकर आर्थिक रूप से धोखाधड़ी का मौका नहीं मिलेगा। फोन पर कभी भी किसी प्रकार के लुभावने ऑफर प्राप्त करने को कभी किसी को अपने बैंक खाता, एटीएम नम्बर, ओटीपी सम्बन्धी जानकारी न दें। कोई भी अनजान व्यक्ति फोन पर पैसे भेजने की बात कहे तो सोच-समझकर लेन-देन करें। किसी भी अनजान लिंक या वेबसाइट आदि को न खोलें। कोई समस्या होने पर राष्ट्रीय साइबर क्राइम हेल्पलाइन नम्बर 1930 पर तुरंत कॉल करें या साईबर सेल की वेबसाइट पर शिकायत कर सकते हैं। जिले के सभी थानों पर भी साइबर हेल्प डेस्क बनाया गया है। पुलिस कर्मी साइबर फ्रॉड के पीड़ितों की मदद करते हैं।

विपक्षी नेताओं ने गायों की मौत पर उठाये सवाल

सैकडों गायों के मौत के जिम्मेदार ईओ पर कब होगी कार्यवाही

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सैकडों गायों के मौत के जिम्मेदार ईओ नगर पालिका कर्वी पर कार्यवाही को लेकर राजनैतिक दलों के नेताओं ने सवाल उठाये हैं। सपा जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव समेत कांग्रेस, आप व माकपा तथा भाकपा ने कहा है कि सैकडों गायों के मृत शव को नगर पालिका की गाडी से ले जाकर मडैयन रोड में दफना दिया गया है। इस मामले की उच्च स्तरीय जांच होनी चाहिए।

शनिवार को सपा जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव ने कहा कि भाजपा की योगी सरकार में गायों के संरक्षण, संवर्धन का दावा किया जाता है। कहीं भी गायों का संरक्षण सही ढंग से नहीं हो रहा है। उन्होंने कहा कि नगर पालिका की गाडी में गायों के मृत शव को ले जाकर दफना दिया गया। इस मामले में जिला प्रशासन चुप्पी साधे है।

कांग्रेस जिलाध्यक्ष कुशल सिंह पटेल ने कहा कि इस सरकार में अधिकारी-कर्मचारी गायों के नाम पर उदरपूर्ति कर रहे हैं। नगर पालिका की गाडी में गायों के मृत शव ले जाने की जांच को कोई सामने नहीं आ रहा। आरोप लगाया कि ईओ नगर पालिका गायों की मौत के जिम्मेदार हैं। इन पर कडी कार्यवाही होनी चाहिए।

आम आदमी पार्टी जिलाध्यक्ष संतोषीलाल शुक्ला ने कहा कि योगी सरकार में आम आदमी व जानवरों में कोई अन्तर नहीं है। आम आदमी जिस तरह पीसे जा रहे हैं, उसी तरह जानवरों को भी दफनाया जा रहा है। नगर पालिका की गाडी में गायों के मृत शव को बिना पोस्टमार्टम के दफनाने की जांच कर कडी कार्यवाही होनी चाहिए। माकपा जिला सचिव का रुद्र प्रसाद मिश्र एड ने कहा कि योगी सरकार में चुने हुए एक जनप्रतिनिधि ने गायों के मामले को दबाने का काम किया है।

माकपा जिला सचिव का रुद्र प्रसाद मिश्र ने कहा कि योगी सरकार सैकडों गायों के मरने के मामले की जांच क्यों नहीं बैठाती। नगर पालिका की गाडी से गायों के मृत शव को बिना पोस्टमार्टम के दफनाया गया है। देवांगना घाटी के आगे मडैयन रोड में बायें हाथ पांच सौ फुट दूर जेसीबी से गड्ढा खोदकर सैकडों गायों को दफना दिया गया है। इस मामले की जांच हो तो ईओ नगर पालिका समेत जिम्मेदार अधिकारी नपेंगे। उन्होंने मामले की जांचकर कडी कार्यवाही की मांग की है। भाकपा जिला सचिव का अमित यादव ने भी मामले की उच्चाधिकारियों से जांच की मांग की है। उन्होंने कहा कि इस मामले में पत्रकारों को भी ईओ नगर पालिका ने मैनेज किया है।

समारोह स्थल की संयुक्त टीम ने की जांच

कोतवाली व भरतकूप पुलिस ने एक-एक आरोपी दबोचे

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक कोतवाली कर्वी गुलाबचन्द्र त्रिपाठी की अगुवाई में दरोगा मुन्नीलाल की टीम ने नवल किशोर पुत्र शिवराम निवासी कोल गदहिया के कब्जे से 24 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ कोतवाली कर्वी में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में दरोगा मुन्नीलाल, सिपाही गोलू भार्गव व जयनारायण पटैरिया शामिल रहे।

शनिवार को इसी क्रम में भरतकूप थाने के दरोगा यदुवीर सिंह की टीम ने दुष्कर्म के आरोपी राहुल कुशवाहा पुत्र शिवनरेश कुशवाहा निवासी पहरा को

गिरफ्तार किया है। टीम में वरिष्ठ दरोगा यदुवीर सिंह, सिपाही लवलेश यादव, शिवम मिश्रा शामिल रहे। इसी क्रम में डॉग स्क्वायड व एलआईयू की संयुक्त टीम ने नगर निकाय के निर्वाचित प्रतिनिधियों के शपथ ग्रहण समारोह के मद्देनजर परिसर की जांच की। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी व पुलिस उपाधीक्षक एलआईयू अनुज मिश्र की देखरेख में डॉग स्क्वॉयड एवं एलआईयू की संयुक्त टीम ने नगर निकाय के निर्वाचित प्रतिनिधियों के शपथ ग्रहण समारोह के मद्देनजर पुरानी कोतवाली परिसर, पुरुषोत्तम इंटर कॉलेज मऊ, आदर्श इंटर कॉलेज मानिकपुर, तुलसी इंटर कॉलेज राजापुर समारोह स्थल की सघन जांच की।

डीएम-एसपी की संयुक्त अध्यक्षता में जिला उद्योग बंन्धुओं की आयोजित बैठक

उरई(जालौन)।। जिलाधिकारी चाँदनी सिंह व पुलिस अधीक्षक ईरज राजा ने जिला उद्योग बंधु समिति की बैठक विकास भवन के रानी लक्ष्मीबाई सभागार में सम्पन्न हुई। उन्होंने उद्योग उपायुक्त को निर्देशित करते हुए कहा कि उद्योग बंधु की बैठक में उद्योग बंधुओं की शिकायतों को तत्परता पर निस्तारण कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि उद्योग बंधु की शिकायत के निस्तारण में किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए, साथ ही संबंधित अधिकारी आपस में समन्वय स्थापित कर समस्याओं का निस्तारण कराना सुनिश्चित करेंगे।

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना, रोजगार युवा स्वरोजगार योजना, एक जनपद एक उत्पाद में लक्ष्य के सापेक्ष प्राप्त आवेदनों को प्रेषित कर प्रतिशत के आधार पर ऋण दिया जाए ताकि व्यवसाय रोजगार लग सके। उन्होंने कहा कि बैंकों में ऋण आवेदन पत्रों का निस्तारण कर तत्काल कार्यवाही सुनिश्चित करें साथ ही समस्त बैंकों की अलग से बैठक कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि निवेश मित्र पोर्टल पर प्राप्त आवेदनों से संबंधित विभाग अपने-अपने संबंधित प्रकरणों का निस्तारण समय से करें कोई भी आवेदन लंबित न रहे इसका विशेष ध्यान रखा जाए। उद्योग बंधुओं ने बैठक में जिलाधिकारी के समक्ष विद्युत विभाग की शिकायतों को रखा जिस पर जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारी आपस में समन्वय स्थापित कर समस्या का जल्द ही निस्तारण करने के निर्देश दिए।

इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी डॉ अभय कुमार श्रीवास्तव, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट उप जिलाधिकारी उरई अभिषेक कुमार, डीएफओ जयप्रकाश नारायण तिवारी, उद्योग उपायुक्त प्रभात यादव, सहायक उपायुक्त उद्योग योगेश कामेश्वर, उद्योग बंधु से नरेंद्र कुमार तिवारी, कुलदीप शुक्ला, विनीत कुमार गुप्ता, मनीष गुप्ता आदि सहित मौजूद रहे।

फेसबुकिया डॉन के घर से अवैध तमंचा पुलिस ने किया बरामद

बलिया - डॉन बनने का शौक पाले हाथ में तमंचा लेकर सोशल मीडिया पर फोटो शेयर करने वाले युवक को बैरिया पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। वहीं, फेसबुकिया डॉन के घर से अवैध तमंचा भी पुलिस ने बरामद किया है।पुलिस ने आर्म्स एक्ट सहित अन्य धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर आरोपी को चालान न्यायालय कर दिया गया। सोशल मीडिया पर तमंचा के साथ युवक के फोटो के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए एसएचओ धर्मवीर सिंह ने बताया कि विशाल साहू (18) पुत्र सत्यनारायण साहू (निवासी मधुबनी थाना बैरिया) ने विगत दिनों हाथ में तमंचा लेकर सोशल मीडिया पर फोटो शेयर किया था। इसका किसी ने स्क्रीन शॉट लेकर कर हमारे यहां भेजा था। शासन में भी फोटो सहित ट्वीट किया गया था। उसकी जांच और पहचान की गई। युवक की पहचान विशाल साहू पुत्र सत्यनारायण साहू के रूप में हुई। गुरुवार की रात छापेमारी कर विशाल को हिरासत में लिया गया। पूछताछ पर उसने अपने तकिए के नीचे रखे तमंचे को पुलिस को सौंपा। इस गलती के लिए माफी मांगने लगा।

शपथ ग्रहण समारोह आज, मंत्री, सांसद आदि रहेंगे मौजूद

बलियाः नगरपालिका परिषद बलिया के नव निर्वाचित अध्यक्ष संत कुमार गुप्ता मिठाई लाल व सभी सभासदगणों का शपथ ग्रहण समारोह शनिवार को जिला पंचायत कार्यालय परिसर में संपन्न होगा। शपथ ग्रहण के आयोजन की तैयारी पूरी हो चुकी है। आयोजन को भव्य बनाने के लिए नगरपालिका परिषद के अधिशासी अधिकारी सत्य प्रकाश सिंह व अन्य कर्मी पूरे दिन लगे रहे। इस बीच भाजपा के जिला मंत्री अरूण सिंह बंटू ने भी कार्यक्रम स्थल पर जाकर ईओ के साथ तैयारियों का जायजा लिया और आवश्यक सुझाव दिए। शपथ ग्रहण का कार्यक्रम शाम को तीन बजे से होगा जिसमें अध्यक्ष सहित 25 वार्डों के सभासद प्रसाशनिक अधिकारियों की मौजूदगी में शपथ लेंगे। शपथ ग्रहण समारोह में बतौर मुख्य अतिथि प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार व जिले के प्रभारी मंत्री दयाशंकर मिश्र दयालु मौजूद रहेंगे। इसके अलावा विशिष्ट अतिथि के तौर पर नगर विधायक व प्रदेश सरकार के परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह, राज्यमंत्री दानिश आजाद अंसारी, लोकसभा सांसद वीरेंद्र सिंह मस्त, राज्यसभा सांसद नीरज शेखर, एमएलसी रविशंकर सिंह पप्पू, भाजपा जिलाध्यक्ष जयप्रकाश साहू आदि मौजूद रहेंगे। इसके अलावा भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारियों आदि की भी मौजूदगी रहेगी।

नव निर्वाचित चेयरमैन रीतू की चेयरमैनी खतरे में

बलिया।। नगर पंचायत मनियर की नव निर्वाचित चेयरमैन रीतू की चेयरमैनी खतरे में पड़ती दिख रही है। रीतू पत्नी नथुनी प्रसाद पर अध्यक्ष पद के लिये अर्हय आयु न होने पर प्रमाण पत्रों में कूट रचना करके आयु बढ़ा कर चुनाव लड़ने की शिकायत पर जांचोपरान्त आरोप सही पाये जाने पर गंभीर धाराओं में बीएसए मनीराम सिंह के निर्देश पर खंड शिक्षाधिकारी मुख्यालय एके झा द्वारा कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराया गया है। मुकदमा दर्ज होने के बाद हड़कंप मच गया है। बता दे कि शिकायत कर्ता द्वारा रीतू देवी के दो स्थानांतरण प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया है, एक प्रमाण पत्र में रीतू का प्रवेश 2007 में कक्षा 6 में हुआ और कक्षा 7 में अन्यत्र प्रवेश के लिये 2009 में टीसी जारी हुई। वही दूसरे प्रमाण पत्र के अनुसार रीतू ने 2008 में कक्षा 8 उत्तीर्ण की है। अखिलेश झा ने नगर पंचायत मनियर की नवनिर्वाचित अध्यक्ष रितु पत्नी नथुनी प्रसाद के खिलाफ अपराध संख्या 272/2023 धारा 419, 420, 467, 468 व 471 आईपीसी के तहत मुकदमा दर्ज कराया है। आरोप है कि अध्यक्ष पद के लिए निर्धारित आयु से कम आयु होने के बावजूद अभिलेखों में

विदेश संदेश

बंगभूमि में स्वाहा की गूंज, श्री शैल महालक्ष्मी शक्ति पीठ पर शंकराचार्य ने किया यज्ञ

ढाका। गोर्वधन पीठाधीश्वर जगदुरु शंकराचार्य स्वामी श्री अधोक्षजानंद देव तीर्थ जी महाराज ने आज बांग्लादेश स्थित श्री शैल महालक्ष्मी शक्ति पीठ में देवी का दर्शन और पूजन किया। इस दौरान शंकराचार्य ने कहा कि मातृ शक्ति के बगैर भगवान महादेव भी अधूरे हैं। जगदुरु शंकराचार्य ने कहा कि भगवान शिव परम तत्व हैं तो आदि शक्ति के रुप में माता पार्वती ही परम तत्व की परम शक्ति हैं। एक दूसरे के बिना यह सृष्टि न तो जन्म ले सकती है और न ही जीवित रह सकती है। उन्होंने कहा कि भगवान विष्णु ने 24 अवतार लिए हैं, लेकिन उनकी शक्तियों में भी मातृ शक्ति ही निहित हैं। तत्व ज्ञान की चर्चा करते हुए स्वामी देव तीर्थ जी महाराज ने कहा कि मनुष्य का जीवन अन्य जीव जंतुओं से इतर इसलिए है कि वह धर्म का पालन करता है। ''धर्मो रक्षति रक्षितः'' सूत्र वाक्य का विश्लेषण करते हुए जगदुरु शंकराचार्य ने कहा कि मानव यदि अपने धर्म की रक्षा करता है तो समय आने पर धर्म भी उसकी रक्षा करता है। स्वामी अधोक्षजानंद आज जब सिलहट जिले के जैनपुर गांव स्थित श्री शैल महालक्ष्मी शक्ति पीठ पहुंचे तो स्थानीय लोगों ने उनका जोरदार स्वागत किया। मंदिर समिति के अध्यक्ष चंदन दास, बांग्लादेश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पन्नालाल राय, बांग्लादेश की सत्तारुढ़ पार्टी के वरिष्ठ नेता देवांशु दास समेत सैकड़ों युवाओं और महिलाओं ने परंपरागत तरीके से जगदुरु का अभिवादन किया। इस अवसर पर भारत के त्रिपुरा राज्य की विधानसभा के उपाध्यक्ष राम प्रसाद पाल ने जगदुरु शंकराचार्य की धार्मिक यात्रा का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने बताया कि विश्व के कल्याण की कामना से शंकराचार्य स्वामी श्री अधोक्षजानंद देव तीर्थ जी महाराज पिछले कई माह से भारत और पड़ोसी देशों में स्थित 12 ज्योतिर्लिंग और 52 शक्ति पीठों की यात्रा पर हैं।

बांग्लादेश में चल रहा 103 साल पुराना संस्कृत विद्यालय, मुस्लिम छात्र भी करते मंत्रोच्चार

ढाका। बांग्लादेश के सिलहट जिले में करीब 103 साल पुराना संस्कृत का विद्यालय है, जो सनातन धर्मावलम्बियों के लिए आकर्षण का केंद्र है। इस विद्यालय में हिन्दुओं के अलावा मुस्लिम छात्र भी देववाणी का अध्ययन कर वैदिक मंत्रों का उच्चारण करते हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्य डा. दिलीप कुमार दास चौधरी ने हिन्दुस्थान समाचार को बताया कि श्रीहट्ट संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना ब्रिटिश शासन के दौरान तत्कालीन भारत सरकार के असम प्रदेश अन्तर्गत वर्ष 1920 में हुई थी। महाविद्यालय की स्थापना के लिए तत्कालीन जमींदार अजय कृष्ण राय ने 18 बीघे जमीन दान में दी थी। डा. चौधरी ने बताया कि भारत पाकिस्तान बंटवारे से पहले बांग्लादेश का सिलहट जिला असम प्रान्त का हिस्सा था। उन्होंने बताया कि पाकिस्तान बनने के बाद यह विद्यालय बंद हो गया था, लेकिन कुछ समय बाद स्थानीय लोगों के प्रयास से विद्यालय फिर से संचालित होने लगा। प्रधानाचार्य के अनुसार वर्ष 1971 में जब बांग्लादेश एक स्वतंत्र व संप्रभु राष्ट्र बना तो श्रीहट्ट संस्कृत महाविद्यालय को सरकार के शिक्षा विभाग से संबद्धता मिल गई। पूर्व में यह भारत सरकार से मान्यता प्राप्त विद्यालय था। एक सवाल के जवाब में प्रधानाचार्य डा. चौधरी ने बताया कि वर्तमान में श्रीहट्ट संस्कृत महाविद्यालय में 400 हिन्दू और मुस्लिम छात्र पढते हैं। यहां संस्कृत, नव्य व्याकरण, षडदर्शन, आयुर्वेद आदि अनेक विषय पढ़ाये जाते हैं। उन्होंने बताया कि विद्यालय को बांग्लादेश सरकार से मान्यता जरुर मिली है, लेकिन सरकार की तरफ से प्राध्यापकों के वेतन आदि हेतु कोई आर्थिक सहायता नहीं मिलती है। यह पूछने पर कि विद्यालय का खर्च कैसे चलता है, डा. चौधरी ने बताया कि श्रीहट्ट संस्कृत महाविद्यालय के नाम बांग्लादेश की करेंसी में एक करोड़ रुपये की धनराशि काफी समय से बैंक में जमा है।

इमरान खान ने कहा-पाकिस्तान छोड़ने का कोई इरादा नहीं

इस्लामाबाद। मुल्क के पूर्व प्रधानमंत्री और पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान ने साफ किया कि देश छोड़ने का उनका कोई इरादा नहीं है। साथ ही खान ने हुकूमत के नेताओं पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि न तो विदेश में उनकी संपत्ति है और न ही कोई कारोबार है, इसलिए विदेश क्यों जाऊं। खान ने ट्वीट किया है, मैं ईसीएल में अपना नाम डालने के लिए हुकूमत को धन्यवाद देना चाहता हूं। मेरी विदेश यात्रा की कोई योजना नहीं है, क्योंकि न तो विदेश में मेरी कोई संपत्ति या व्यवसाय है और न ही देश के बाहर कोई बैंक खाता है। कभी मुझे छुट्टी पर जाने का अवसर मिला तो मैं दुनिया में अपनी पसंदीदा जगह उत्तरी पहाड़ियों पर जाना चाहूंगा। उल्लेखनीय है कि मुल्क के गृह मंत्रालय के पास निकास नियंत्रण सूची (ईसीएल) होती है। यह सूची उन व्यक्तियों से संबंधित होती है, जिन्हें लंबित अदालती मामलों या अन्य कारणों से देश छोड़ने की अनुमति नहीं होती। संघीय सरकार ने गुरुवार को इमरान खान, उनकी पत्नी बुशरा बीबी समेत 80 लोगों के देश छोड़ने पर रोक लगा दी है।

अराजकता की तरफ बढ़ रहा है पाकिस्तान, गहराती जा रही हैं आशंकाएं

बीजिंग। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने चेतावनी दी है कि 'इस समय जो हो रहा है, वह देश के लिए अच्छा नहीं है।' उनकी पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के नेताओं, कार्यकर्ताओं और समर्थकों के खिलाफ चलाए जा रहे दमन के कारण पार्टी से इस्तीफों का सिलसिला जारी है। इससे दबाव में आए इमरान खान ने शुक्रवार को यू-ट्यूब स्ट्रीमिंग के जरिए देश को संबोधित किया। इसमें उन्होंने चेतावनी दी कि देश अराजकता की तरफ बढ़ रहा है। उन्होंने सरकार को सलाह दी कि वह तुरंत बातचीत शुरू कर मसले का हल निकाले। पाकिस्तान के हालात से वाकिफ विश्लेषकों ने इमरान खान की इस आशंका से सहमति जताई है कि पाकिस्तान के हालात बहुत खराब हैं और ये

रोज बदतर होते जा रहे हैं। उनके मुताबिक जिस समय देश गहरे आर्थिक संकट में है, उस समय राजनीतिक अशांति का दौर शुरू हो जाने से देश के भविष्य को लेकर चिंता बढ़ती जा रही है।

नौ मई के बाद से इमरान खान के हजारों समर्थकों को गिरफ्तार किया जा चुका है। अब इमरान खान और उनकी पत्नी बुशरा बेगम के देश से बाहर जाने पर रोक लगा दी गई है। इस बीच सरकारी दमन से परेशान अनगिनत नेताओं ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। उनमें बड़ी संख्या ऐसी है, जिन्होंने राजनीति से ही संन्यास लेने की घोषणा की है। नौ मई को इमरान खान को गिरफ्तार किया गया था, जिसके बाद देश भर में हुए विरोध प्रदर्शनों के दौरान हिंसा भड़क उठी थी। उस दौरान खासकर सेना के ठिकानों को निशाना बनाया गया था।कई बड़े नेताओं के अलावा मध्य स्तर के दर्जनों नेता भी पीटीआई से अपने को अलग कर चुके हैं। यू-ट्यूब स्ट्रीमिंग में इमरान खान ने आरोप लगाया कि इन लोगों पर पीटीआई छोड़ने का दबाव डाला गया, ताकि पार्टी को खत्म किया जा सके। खान ने सैन्य ठिकानों पर हमले से खुद को अलग करते हुए पूरे घटनाक्रम की निष्पक्ष जांच कराने की मांग की, ताकि यह पता चल सके असल में हमलों में कौन शामिल था। इमरान खान ने आगाह किया है कि पीटीआई अब भी देश में सबसे लोकप्रिय पार्टी है और उसके खिलाफ जारी कार्रवाई के कारण उसकी लोकप्रियता बढ़ती ही जा रही है। उन्होंने दावा किया कि देश में जब कभी चुनाव होंगे, उनकी पार्टी उसमें बड़े बहुमत के साथ जीतेगी।

इस बीच गृह मंत्री राना सनाउल्लाह ने बताया है कि पीटीआई के गिरफ्तार हजारों समर्थकों में से 33 को सेना के हाथों सौंप दिया गया है, जिन पर सैनिक अदालत में आर्मी एक्ट के तहत मुकदमा चलाया जाएगा। उन्होंने कहा कि ये 33 वो लोग हैं, जो नौ मई को 'संवेदनशील रक्षा प्रतिष्ठानों में घुस गए थे।' सनाउल्लाह ने कहा कि उनकी राय में सारे घटनाक्रम के योजनाकार इमरान खान थे, इसलिए वे भी उन लोगों की श्रेणी में आते हैं, जिन पर आर्मी एक्ट के तहत मुकदमा चलाया जाना चाहिए।

पर्यवेक्षकों के मुताबिक सनाउल्लाह के बयान से स्पष्ट हो गया है कि सरकार का इरादा इस घटनाक्रम में सीधे इमरान खान को घेरने का है, ताकि उन्हें देश में राजनीतिक प्रक्रिया से बाहर कर दिया जाए।

मरियम नवाज ने पीटीआई प्रमुख पर साधा निशाना, कहा- क्रिकेटर से नेता बने इमरान खान का खेल खत्म

वाशिंगटन। पाकिस्तान हिंसा के बाद पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) प्रमुख इमरान खान की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रहीं हैं। एक-एक कर उनकी पार्टी के दिग्गज नेता उनसे किनारा कर रहे हैं। इस बीच, पाकिस्तान मुस्लिम लीग नवाज (क्ररू-ह) की वरिष्ठ उपाध्यक्ष मरियम नवाज ने इमरान पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ नेता लगातार पीटीआई से अपना नाता तोड़ रहे हैं। इससे साफ है कि क्रिकेटर से नेता बने इमरान खान का खेल खत्म हो गया है।

पार्टी छोड़ने वालों के सवाल

26 मई को पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में एक युवा सम्मेलन को संबोधित करते हुए नवाज ने इमरान खान पर तीखी टिप्पणियों की बौछार की। उन्होंने इस दौरान 9 मई को हुई घटनाओं के बारे में भी बात की। बता दें, 9 मई के दिन दिन पीटीआई प्रमुख इमरान को गिरफ्तार किया गया था, जिसके कारण देश भर में हिंसक विरोध प्रदर्शन हुए। पीटीआई नेताओं के एक साथ पार्टी छोड़े

जाने पर तंज कसते हुए मरियम ने कहा कि पार्टी छोड़ने वालों के सवाल थे।

70 से अधिक लोगों ने तोड़ा नाता

पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के नेताओं के पार्टी छोड़ने की शुरूआत तब हुई जब सुरक्षा बलों ने रावलपिंडी में जनरल मुख्यालय और लाहौर कॉर्प्स कमांडर हाउस (जिन्ना हाउस) सहित नागरिक और सैन्य संस्थानों पर हमलों के बाद पार्टी के खिलाफ कार्रवाई शुरू की। बता दें, नौ मई की तबाही के बाद पार्टी के 70 से अधिक वकीलों और नेताओं ने पीटीआई से नाता तोड़ लिया है।

नेता ही सियार है....

इमरान खान को पिछले साल अप्रैल में अविश्वास मत के माध्यम से पीएम के पद से हटा दिया गया था। इसको लेकर मरियम नवाज ने पूर्व प्रधानमंत्री इमरान की आलोचना करते हुए कहा कि जब नेता ही सियार है तो लोग कैसे खड़े होंगे?

खान आतंकवाद का मास्टरमाइंड

मरियम नवाज ने कहा कि आपके लोग ही बता रहे हैं कि इमरान खान नौ मई को हुई घटनाओं के मास्टरमाइंड है। पाकिस्तान मुस्लिम लीग नवाज की वरिष्ठ उपाध्यक्ष ने कहा कि खान घटनाओं के बीचे का मास्टरमाइंड था, लेकिन उसके कार्यकर्ता आतंकवाद विरोधी अदालत का सामना कर रहे हैं।

खुद की बीबी को चादरों में ढका

नवाज ने खान की बीबी पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि इमरान खान अपनी पत्नी बुशरा बीबी को चादरों से ढककर कोर्ट में ले गए, लेकिन उन्होंने अन्य महिलाओं को मोहरा के रूप में इस्तेमाल किया। गौरतलब है, अल-कादिर ट्रस्ट मामले में 15 मई को लाहौर हाई कोर्ट में खान और उनकी पत्नी सफेद चादर से ढके हुए पहुंचे थे।

यूक्रेन युद्ध के बीच रूस का बड़ा एलान, फ्लोटिंग न्यूक्लियर पावर प्लांट तकनीक साझा करने को हुआ तैयार

वाशिंगटन। यूक्रेन के साथ जारी युद्ध के बीच रूस ने बड़ा एलान किया है। दरअसल रूसी सरकार के मालिकाना हक वाली ऊर्जा कंपनी रोसाटोम ने कहा है कि वह सहयोगी देशों के साथ अपनी फ्लोटिंग न्यूक्लियर पावर प्लांट (एफएनपीपी) की तकनीक को साझा करने के लिए तैयार है। बता दें कि दूर-दराज के इलाकों में ऊर्जा संकट को दूर करने में इस तकनीक को बेजोड़ बताया जा रहा है।

रिमोट इलाकों में 24 घंटे एनर्जी सप्लाई संभव

रूस ने फ्लोटिंग न्यूक्लियर पावर यूनिट को अपने एक वैज्ञानिक एकाडेमिक लोमोनोसोव नाम दिया है। रोसाटोम कंपनी द्वारा इस तकनीक को विकसित और संचालित किया जाता है। रूस के पेवेक शहर में यह कंपनी मौजूद है। यह इलाका काफी ठंडा माना जाता है और सर्दियों में यहां माइनस 24 डिग्री सेल्सियस तक पारा गिर जाता है। यह इलाका अपने खनिज भंडार के लिए भी जाना जाता है। एफएनपीपी की मदद से ही पेवेक शहर में ऊर्जा की सप्लाई होती है। रूस एफएनपीपी की मदद से ही दुनिया के सबसे ठंडे इलाकों में शामिल साइबेरिया में ऊर्जा की सप्लाई कर रहा है। एफएनपीपी से इन रिमोट इलाकों में 24 घंटे बिजली की सप्लाई संभव हो पा रही है।

सुरक्षा की दृष्टि से भी बेजोड़ एफएनपीपी तकनीक

फ्लोटिंग न्यूक्लियर पावर प्लांट के कार्यकारी निदेशक आंद्रे जास्लावस्की ने बताया कि एफएनपीपी तकनीक पूरी तरह सुरक्षित है इसने लोगों की जिंदगी को बदल दिया है। आंद्रे ने बताया कि एफएनपीपी तकनीक पर्यावरण के लिए भी सुरक्षित है और इसमें न्यूक्लियर वेस्ट के निस्तारण की भी सुरक्षित प्रक्रिया है। साथ ही सूनामी और भूकंप में भी एफएनपीपी की यूनिट को कोई नुकसान नहीं होगा। साल 2020 में रूस ने इस तकनीक की मदद से 127.3 मिलियन किलोवाट बिजली का उत्पादन किया गया और 2022 में यह बढ़कर 194 मिलियन किलोवाट हो गया। रोसाटोम कंपनी ने कहा है कि वह एफएनपीपी तकनीक को अपने सहयोगी देशों के साथ साझा करने के लिए तैयार है, जिससे उनके विकास में मदद मिल सके।

40 मगरमच्छों के बाड़े में गिरा व्यक्ति, मिली दर्दनाक मौत, टुकड़ों में मिला शरीर

वाशिंगटन।कंबोडिया में एक दर्दनाक मामले सामने आया है। दरअसल कंबोडिया में एक व्यक्ति मगरमच्छों के बाड़े में गिर गया, जिसके बाद सारे मगरमच्छ उस पर टूट पड़े और उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। बताया जा रहा है कि व्यक्ति एक लकड़ी के सहारे एक मगरमच्छ को पीछे हटा रहा था लेकिन अचानक से मगरमच्छों के बाड़े में गिर गया, जिसके बाद उसे दर्दनाक मौत मिली।

क्या है मामला

घटना कंबोडिया के सिएम रीप शहर की है। यहां रहने वाले 72 वर्षीय लुआन नाम के व्यक्ति का मगरमच्छों का एक फार्म है, जहां बड़ी संख्या में मगरमच्छ हैं। एक मगरमच्छ ने अंडे दिए थे और लुआन नाम उस मगरमच्छ को एक छड़ी से हटाने का प्रयास कर रहे थे, इसी दौरान मगरमच्छ ने लुआन की छड़ी को मुंह में दबोचकर ऐसा झटका दिया कि लुआन

अनियंत्रित होकर मगरमच्छों के बाड़े में ही गिर गए। बाड़े में 40 मगरमच्छ मौजूद थे और लुआन के गिरते ही सारे मगरमच्छ उन पर टूट पड़े। मगरमच्छों ने लुआन के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

लुआन के शरीर के जो टुकड़े मिले हैं, उन पर मगरमच्छों के दांतों के निशान हैं और शरीर के कुछ टुकड़े मिले भी नहीं हैं। माना जा रहा है कि मगरमच्छ उन्हें खा गए। बता दें कि साल 2019 में भी एक ऐसी ही घटना हुई थी, जब कंबोडिया में दो साल की एक बच्ची मगरमच्छ के बाड़े में गिर गई थी और मगरमच्छ ने उसे अपना शिकार बना लिया था। बता दें कि कंबोडिया में मगरमच्छों के अंडे, स्किन और उनके मांस के लिए मगरमच्छों को पाला जाता है। खासकर सिएम रीप शहर में बड़ी संख्या में मगरमच्छ पालने वाले फार्म मौजूद हैं।

नेपाल के प्रधानमंत्री प्रचंड का भारत दौरा 31 मई से 3 जून तक

काठमांडू। नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल प्रचंड की भारत यात्रा 31 मई से 3 जून तक होगी। नेपाल और भारत के विदेश मंत्रालय ने आज एक प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से दौरे के कार्यक्रम की घोषणा की।

नेपाल के विदेश मंत्रालय के मुताबिक प्रधानमंत्री प्रचंड भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आधिकारिक निमंत्रण पर दौरे पर जा रहे हैं। प्रचंड की बेटी गंगा दाहाल, मंत्री, सचिव और सरकार के उच्च पदस्थ कर्मचारी दौरे के दल में शामिल होंगे। 1 जून को प्रचंड भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से हैदराबाद हाउस में मुलाकात करेंगे। उसके बाद संयुक्त प्रेस कांफ्रेंस होगी। प्रचंड का भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ से भी मिलने का कार्यक्रम है। प्रचंड का उज्जैन और इंदौर जाने का भी कार्यक्रम है। तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के बाद प्रचंड की यह पहली विदेश यात्रा है।

नासा का मंगल पर रहने वाला घर तैयार, इसमें एक साल बिताएगी ये कनाडाई महिला

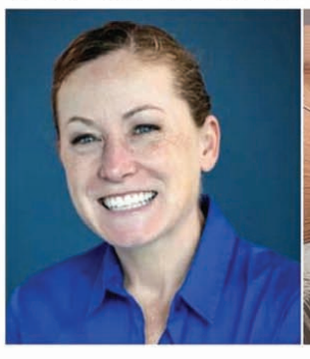

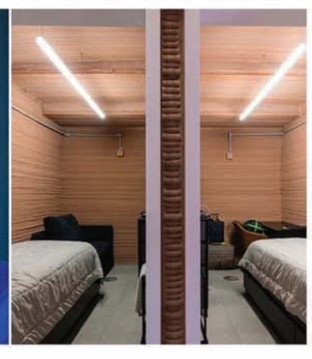

फ्लोरिडा । मंगल ग्रह पर इंसानों को बसाने की योजना पर काम शुरू हो गया है। अगर सब कुछ सही रहा तो अगले सात साल यानी 2030 तक वहां पर इंसानों को भेजा जाएगा। मंगल ग्रह पर इंसान कैसे रह पाएंगे, इसी को लेकर एक ट्रायल शुरू किया जा रहा है। इसके लिए नासा ने चार

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

कि मैंने कभी बचपन से लेकर आजतक मंगल पर जाने का

सपना नहीं देखा था। उन्होंने कहा कि कभी-कभी ये झूठ लगता है, लेकिन जब मैं इसके बारे में सोचती हूं तो मुझे हंसी आती है। उन्होंने आगे कहा कि मैं बहुत उत्साहित हूं और चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार हूं।

सारी सुविधाएं ग्रह की तरह

रिपोर्ट के अनुसार, जून के अंत में चारों शोधकर्ता उसके अंदर जाएंगे और करीब 12 महीने तक वहां रहेंगे। घर के अंदर का माहौल एकदम मंगल की तरह है। वहां पर मिट्टी भी लाल रंग की रखी गई है। इसके अलावा अगर वो कंट्रोल सेंटर से संपर्क करते हैं, तो उनका मैसेज मिलने में 20 मिनट का समय लगेगा। इसके बाद कंट्रोल सेंटर का मैसेज उन तक पहुंचने में 20 मिनट लगेगा। वास्तव में मंगल से सिग्नल भेजने पर भी इतना वक्त लगता है।

मार्स वॉक की भी प्रैक्टिस

ये घर 3डी प्रिंटेड है और 160 वर्ग मीटर में फैला है। इसका नाम मार्स ड्यून अल्फा रखा गया है। वहां पर चार बेडरूम हैं। इसके अलावा जिम, किचन, रिसर्च सेंटर बनाया गया है। इस घर को एयरलॉक द्वारा अलग किया गया। वहां पर चारों मार्स वॉक की भी प्रैक्टिस करेंगे।

मेल की जरिए घर पर बात

इस घर में एक साल तक मंगल पर रहने, खाने, आपात स्थिति से निपटने आदि की प्रैक्टिस की जाएगी। चारों शोधकर्ता परिवार से भी दूर रहेंगे। वो सिर्फ मेल के जरिए बात कर पाएंगे। कभी-कभी वो वीडियो मैसेज भेज सकते हैं, लेकिन उनकी बात लाइव नहीं होगी। उसमें 20 मिनट का अंतर रहेगा। ऐसे में उनको पूरी तरह से महसूस होगा कि वे लोग मंगल ग्रह पर रह रहे हैं।

हेस्टन ने बताया कि घर के अंदर जाते ही बहुत आश्चर्यजनक महसूस होता है। यह बहुत बड़ा है। इसमें एक बाहरी क्षेत्र भी दिया है, जिसमें स्पेसवॉक कर सकते हैं।

अब पूरे अमेरिका में दिवाली पर छुट्टी की तैयारी, संसद में पेश किया गया विधेयक

वाशिंगटन। न्यूयॉर्क विधानसभा में दिवाली पर अवकाश के प्रस्ताव के बाद अब पूरे अमेरिका में दिवाली पर छुट्टी की तैयारी है। दिवाली को पूरे देश में यानी संघीय अवकाश घोषित करने के लिए अमेरिकी संसद में विधेयक पेश किया गया है।

अमेरिका में अभी साल में 11 संघीय अवकाश हैं, यानी साल में 11 दिन पूरे अमेरिका में एक साथ छुट्टी रहती है। अब दिवाली को 12वें संघीय अवकाश के रूप में स्वीकार करने के लिए सांसद ग्रेस मेंग ने अमेरिकी संसद में दिवाली दिवस विधेयक पेश किया है। अगर दिवाली दिवस विधेयक संसद से पारित हो जाता है तो राष्ट्रपति से इसे मंजूरी मिलने के बाद यह कानून बन जाएगा और दिवाली अमेरिका में 12वीं संघीय छुट्टी हो जाएगी।

आखिर प्रियंका चोपड़ा की सच्चाई जानते हुए भी क्यों चुप रहे सब

सांसद ग्रेस मेंग ने कहा कि दिवाली दुनियाभर में अरबों लोगों

के साथ अमेरिका में असंख्य परिवारों और समुदायों के लिए साल के सबसे महत्वपूर्ण दिनों में से एक है। दिवाली पर संघीय अवकाश परिवारों और दोस्तों को एक साथ त्योहार का जश्न मनाने की अनुमति देगा। इस दिन छुट्टी यह साबित करेगी कि सरकार राष्ट्र के विविध सांस्कृतिक अवसरों को महत्व देती है। उन्होंने कहा कि न्यूयॉर्क के क्वींस में हर साल होने वाले दिवाली समारोह अद्भुत होते हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिका की ताकत इस राष्ट्र को बनाने वाले विविध अनुभवों, संस्कृतियों और समुदायों से है।

मेंग ने कहा कि उनके द्वारा पेश किया गया दिवाली डे एक्ट इस दिन के महत्व पर सभी अमेरिकियों को बताने और अमेरिकी विविधता का जश्न मनाने की दिशा में एक कदम है। वह अमेरिकी कांग्रेस के माध्यम से इस विधेयक को पारित करने के लिए उत्सुक है। इस कदम का स्वागत करते हुए न्यूयॉर्क विधानसभा की सदस्य जेनिफर राजकुमार ने कहा कि इस साल हमने देखा कि हमारा पूरा राज्य दिवाली और दक्षिण एशियाई समुदाय को मान्यता देने के समर्थन में एक स्वर से बोल रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार में मेरी सहयोगी मेंग अब दिवाली को संघीय अवकाश घोषित करने के लिए अपने ऐतिहासिक कानून के साथ आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर ले जा रही हैं।

पेट्रोल-डीजल की कीमत स्थिर, कच्चा तेल 77 डॉलर प्रति बैरल के करीब

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में तेजी का रुख है। पिछले 24 घंटे में ब्रेंट क्रूड का भाव बढ़कर 77 डॉलर प्रति बैरल और डब्ल्यूटीआई क्रूड 73 डॉलर प्रति बैरल के करीब पहुंच गया है। हालांकि, सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं

गैस विपणन कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया है।

इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक शनिवार को दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये, डीजल 89.62 रुपये, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये, डीजल 94.27 रुपये, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये, डीजल 92.76 रुपये, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर की दर पर उपलब्ध है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में हफ्ते के अंतिम दिन शुरूआती कारोबार में ब्रेंट क्रूड 0.69 डॉलर यानी 0.90 फीसदी की बढ़त के साथ 76.96 डॉलर प्रति बैरल पर ट्रेंड कर रहा है। वहीं, वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड भी 0.84 डॉलर यानी 1.17 फीसदी उछलकर 72.67 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है।